₹ 10

www.kewalsachtimes.com

फरवरी 2020

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

भारत में एक नहीं कई कश्मीर

RNI NO.-BIHBIL/2011/49252, DAVP NO.-131729, POSTAL REG. NO.:-PT-78

बिहार एवं झारखण्ड की तेज़ी से बढ़ती पत्रिका

"केवल सच"

सबुत के साथ खबर लिखता है
केवल सच मिडिया ग्रुप

भ्रष्टाचार एवं दहशतगर्दी
और
मुखिया से मुख्यमंत्री

थाना प्रभारी से डीजीपी के साक्षात्कर के लिए चर्चित

पत्रिका केवल सच

से आज ही जुड़े।

ब्रजेश मिश्र
संस्थापक सह संपादक

www.kewalsachlive.in
वेब पोर्टल न्यूज
24 घंटे आपके साथ
Mob. 09431073769, 9308727077

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
www.kewalsach.com

Kewal Sach TIMES
A National Magazine
www.kewalsachtimes.com

प्रधान कार्यालय :- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान सं. 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
झारखण्ड कार्यालय :- रिया प्लाजा, तीसरा तल्ला, फ्लैट नं.-303, कोकर चौक, राँची (झारखण्ड)
सम्पर्क संख्या :- 9431073769, 9955077308, 9308727077

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

जैकी श्रॉप
01 फरवरी 1960

मनोज तिवारी
01 फरवरी 1971

ब्रह्मनंदम
01 फरवरी 1956

खुशवंत सिंह
02 फरवरी 1915

शमीता शेट्टी
02 फरवरी 1979

रघुराम राजन
03 फरवरी 1963

उर्मिला मांदोडकर
04 फरवरी 1974

अभिषेक बच्चन
05 फरवरी 1976

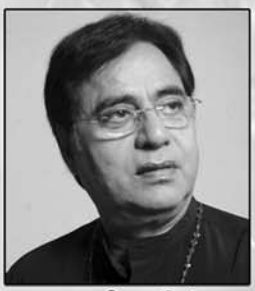

जगजीत सिंह
08 फरवरी 1941

मो० अजहरूद्दीन
08 फरवरी 1963

राहुल रॉय
09 फरवरी 1968

उदिता गोस्वामी
09 फरवरी 1984

कुमार विश्वास
10 फरवरी 1970

चौधरी अजीत सिंह
12 फरवरी 1939

स्व० सुषमा स्वराज
14 फरवरी 1952

टेकलाल महतो
15 फरवरी 1945

रणधीर कपूर
15 फरवरी 1947

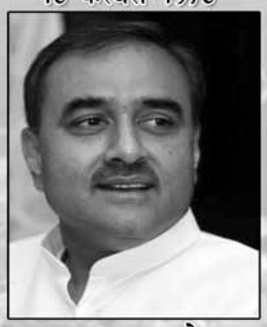

प्रफुल्ल पटेल
17 फरवरी 1957

स्व० जयललिता जयराम
24 फरवरी 1948

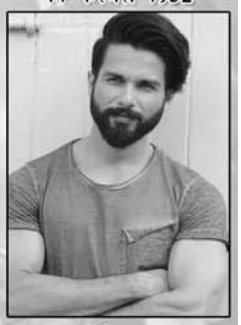

शाहीद कपूर
25 फरवरी 1981

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769,
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Riya Plaza, Flat No.-303, Kokar Chowk, Ranchi-834001 (Jharkhand)
Mob.- 09955077308,
E-mail:-
editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha
A-68, 1st Floor, Nageshwar talla, Shastri Nagar, New Delhi-110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube,
131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880, 09339740757

ADVERTISEMENT RATES PER ISSUE

COLOUR	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
	Cover Page	3,00,000/-	N/A
	Back Page	1,00,000/-	65,000/-
	Back Inside	90,000/-	50,000/-
	Back Inner	80,000/-	50,000/-
	Middle	1,40,000/-	N/A
	Front Inside	90,000/-	50,000/-
	Front Inner	80,000/-	50,000/-

B & W	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
	Inner Page	60,000/-	40,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsachtimes.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

गुलामी की तरफ दस्तक देता शाहिनबाग

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

19 47 के 15 अगस्त को भले ही भारत आजाद हुआ और 26 जनवरी 1950 को गणतंत्र दिवस के रूप में भारत में एक मजबूत संविधान लागू किया गया लेकिन आज देश का विभिन्न राजनीतिक पार्टी एवं कुछेक खास नेता आजाद भारत में भी केन्द्र सरकार से आजादी मांग रहे हैं। भारत का सौन्दर्य वास्तव में धर्मनिरपेक्ष भारत का है पर भारत का सत्ता पक्ष इसको हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहता है तो दूसरी ओर विपक्ष मुस्लिम राष्ट्र के रूप में स्थापित करना चाहता है। शाहिन बाग महीनों से इस आन्दोलन का फंड से लेकर फायरिंग और कई प्रकार की मॉब लिचिंग की बात भी सामने आयी है और यह सब भारत देश के विकास में बाधा डालने वाले देश का दोनों पक्ष जिम्मेवार है और एक 04 बच्चे की मौत को शहादत का नाम देकर भी राजनीति की जा रही है। हिन्दू + मुस्लिम + सिक्ख + इसाई - आपस में हम भाई - भाई, हिन्दुतान की कहावत अब भारत के देशवासियों के लिए भद्दा मजाक से ज्यादा कुछ नहीं है। क्योंकि अब भाई, कसाई की भूमिका में आ चुका है। पहले 04 धर्म और अब तो अन्य कई धर्म का जन्म हो चुका है और राजनीतिक लाभ के लिए **राजनीति धर्म** का भी अवतार हुआ है। सभी को रोटी मिले, सभी हाथ को रोजगार मिले, बीमार का समुचित ईलाज हो, अशिक्षित को उचित एवं समुचित शिक्षा मिले, असुरक्षित को सुरक्षित वातावरण मिले जैसे बुनियादी समस्याओं को सुलझाने के लिए कोई आन्दोलन नहीं करता। अन्ना का आन्दोलन नई जागृति पैदा की परन्तु उसका हश्र राजनीति में तब्दील हो गया तथा वर्ष 2000 के बाद अन्ना का आन्दोलन और अब शाहिन बाग का चेतावनीपूर्ण आन्दोलन सिर्फ राजनीति से प्रेरित है और इसका देश के मजबूत आवश्यकताओं की पूर्ति करता नहीं दिख रहा है। नागरिकता संशोधन कानून यानी CAA का फुल फॉर्म Citizenship Amendment Act है। ये संसद में पास होने से पहले CAB यानी (Citizenship Amendment Bill) था। Difference between CAA and CAB की बात करें तो संसद में पास होने और राष्ट्रपति की मुहर लगने के बाद ये बिल नागरिक संशोधन कानून (CAA) (Citizenship Amendment Act) यानी एक्ट बन गया है। सिटीजनशिप अमेंडमेंट एक्ट की मदद से पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश में धार्मिक उत्पीड़न के कारण वहां से भागकर आए हिंदू, ईसाई, सिख, पारसी, जैन और बौद्ध धर्म के लोगों को भारत की नागरिकता दी जाएगी। सिटीजनशिप अमेंडमेंट एक्ट की मदद से अब पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश के हिंदू, ईसाई, सिख, पारसी, जैन और बौद्ध धर्म के वो लोग जिन्होंने 31 दिसंबर 2014 की निर्णायक तारीख तक भारत में प्रवेश कर लिया था, वे सभी भारत की नागरिकता के पात्र होंगे। आप पार्टी का कार्यकर्त्ता के रूप में पहचान हुआ शाहीन बाग में गोली चलाने के आरोपित कपिल गुर्जर को रविवार को साकेत कोर्ट में पेश किया गया। यहां उसे 2 दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया। जालियाँवाला बाग हत्याकांड भारत के पंजाब प्रान्त के अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर के निकट जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल 1919 (बैसाखी के दिन) हुआ था। रौलेट एक्ट का विरोध करने के लिए एक सभा हो रही थी जिसमें जनरल डायर नामक एक अँग्रेज ऑफिसर ने अकारण उस सभा में उपस्थित भीड़ पर गोलियाँ चलवा दीं जिसमें 400 से अधिक व्यक्ति मरे और 2000 से अधिक व्यक्ति घायल हुए। अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है, जबकि जलियांवाला बाग में कुल 388 शहीदों की सूची है। ब्रिटिश राज के अभिलेख इस घटना में 200 लोगों के घायल होने और 379 लोगों के शहीद होने की बात स्वीकार करते है जिनमें से 337 पुरुष, 41 नाबालिग लड़के और एक 6-सप्ताह का बच्चा था। अनाधिकारिक आँकड़ों के अनुसार 1000 से अधिक लोग मारे गए और 2000 से अधिक घायल हुए। यदि किसी एक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर सबसे अधिक प्रभाव डाला था और यह घटना ही भारत में ब्रिटिश शासन के अंत की शुरुआत बनी। 1997 में महारानी एलिजाबेथ ने इस स्मारक पर मृतकों को श्रद्धांजलि दी थी। 2013 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरॉन भी इस स्मारक पर आए थे। विजिटर्स बुक में उन्होंनें लिखा कि ब्रिटिश इतिहास की यह एक शर्मनाक घटना थी। जलियांवाला बाग में सामूहिक हत्याकांड हो रहा था, उधम सिंह वहीं मौजूद थे और उन्हें भी गोली लगी थी। 13 मार्च 1940 को उन्होंने लंदन के कैक्सटन हॉल में इस घटना के समय ब्रिटिश लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओड्वायर को गोली मार डाला। ऊधम सिंह को 31 जुलाई 1940 को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। गांधी और जवाहरलाल नेहरू ने ऊधम सिंह द्वारा की गई इस हत्या की निंदा की थी। शाहिनबाग पर बुद्धिजीवी वर्ग, देशभक्त पत्रकार, फिल्मी कलाकार, पुरस्कार लौटाने वाला वर्ग और सामाजिक क्रांति के अग्रदूत सब दो महीने से चुपचाप तमाशा देख रहे हैं लेकिन मुंह से देश के भीतर गृहयुद्ध कराने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। क्या शाहिन बाग जलियावाला बाग का स्थान लेगा? देश गुलामी की तरफ दस्तक देता दिख रहा है लेकिन अब चन्द्रशेखर, मंगल पाण्डेय एवं भगत सिंह जैसे शहीद होने वाला कॉम नहीं दिखता। ऐसे में भारत संक्रमण के उस दौर से गुजर रहा है जहां देश की जनता को एक ठोस फैसला लेना होगा की आखिर इस समस्या का समाधान कैसे संभव है। लोकतंत्र में मोदी की सरकार को हटाने का 2024 में अवसर मिलेगा उस वक्त शाहिन बाग के आन्दोलनकारी महत्ती भूमिका निभायेंगे और वोट के दम पर हटायेंगे तो शायद बाबा अम्बेडकर का संविधान का सम्मान होगा अन्यथा बदले का आग से सिर्फ देश जलेगा और कुछ नहीं।

आजाद भारत में देश के राजधानी दिल्ली के शाहिनबाग चुनाव में जीत हासिल करने के लिए राजनीतिक रणभूमि बना दिया गया है। एक - दूसरे के राजनीतिक महत्वकांक्षा में 04 वर्ष का एक बच्चा शहीद हो गया। अब इस बच्चे की शहादत का राजनीतिक लाभ जिसको भी मिले, उस बच्चे के परिवार के जीवन में कोई भरपायी नहीं कर पायेगा। आजाद भारत में गुलाम भारत के वक्त जालंधर में हुए जलियावाला बाग की तरह रणभूमि बना हुआ है परन्तु शाहिन बाग एवं जालियावाला बाग में एक बहुत बड़ा अंतर था की दूसरे देश का दुश्मन से भारत मुकाबला कर रहा था और अपनी शहादत देकर अंग्रेजों को उनकी औकात बतायी थी पर शाहिन बाग में देश के भीतर दो विचार धारा की युद्ध स्थल बन चुका है और सत्ता के अहंकार में गृहयुद्ध वाली स्थिति बन गयी है। दिल्ली का चुनाव समाप्त यह शाहिन बाग का आन्दोलन भी समाप्त परन्तु दो दलों के राजनीतिक पृष्ठभूमि में देश का आर्थिक नुकसान हुआ और देश के बाहर भारत की छवि धूमिल हुई है उसकी भारपायी क्या नरेन्द्र मोदी करेंगे या फिर केजरीवाल? आजाद भारत के 73 साल में सरकार आज भी देश की जनता का वोट लेने के लिए रोटी - कपड़ा - मकान के साथ - साथ बगैर कोई शुल्क की कई सुविधा देने का लालच दिया जा रहा है और हम लालची वोटर व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण स्कूटी और फ्री बिजली-पानी के चक्कर में नेताओं के आगे दुम हिला रहे हैं। भारत की संस्कृति एवं सामाजिक वातावरण को कुर्सी के लिए कभी जालियावाला बाग तो आजाद भारत में शाहिन बाग की घटना देश को गुलाम बनाने के दिशा में तेजी से कदम बढ़ाता दिख रहा है, जिसके जिम्मेवार नेताओं के साथ हम - आप भी है।

KEWAL SACH TIMES
A National Magazine
वर्षः- 09, अंकः- 104 माहः- फरवरी 2020 रू. 10/-

Editor in chief
Brajesh Mishra 09431073769
09955077308
08340360961
editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach@gmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

Chief Editorial Advisor
Deepak Mishra 09334096060

General Manager (H.R)
Triloki Nath Prasad 09308815605,
09122003000

General Manager (Advertisement)
Reeta Singh 09308729879
Poonam Jaiswal 09430000482

Joint Editor/Lay-out Editor
Amit Kumar 9905244479
amit.kewalsach@gmail.com

Legal Editor
Amitabh Ranjan Mishra 08873004350
S. N. Giri 09308454485

Asst. Editor
Rampal Prasad Verma 0 9939086809

Bureau Chief
Sanket kumar Jha 07762089203

Photographer
Mukesh Kumar 0 9304377779

Bureau
Sridhar Pandey 09852168763

प्रदेश प्रभारी

दिल्ली हेड
संजय कुमार सिन्हा 09868700991

झारखण्ड हेड
राजेश मिश्रा 09608645414
08083636668
rajeshmishrarti@gmail.com

पश्चिम बंगाल हेड
अजीत दुबे 09433567880
09339740757

मध्यप्रदेश हेड
अभिषेक पाठक 08109932505,
08269322711

छत्तीसगढ़ हेड
डिगल सिंह 09691153103
08982051378

उत्तर प्रदेश हेड
निर्भय कुमार मिश्रा 09452127278

उत्तराखण्ड हेड
आवश्यकता है

महाराष्ट्र हेड
कमोद कुमार कंचन 07492868363

गुजरात हेड
आवश्यकता है

आंध्र प्रदेश हेड
श्रवण कुमार चंचल 08977442750

राजस्थान हेड
आवश्यकता है

पंजाब हेड
आवश्यकता है

राजस्थान हेड
आवश्यकता है

उड़ीसा हेड
आवश्यकता है

आसाम हेड
आवश्यकता है

दिल्ली कार्यालय
केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
97 ए, डी डी ए फ्लैट
गुलाबी बाग, नई दिल्ली- 110007
मो०- 09868700991, 09431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय
केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०- 09433567880, 09339740757

झारखण्ड कार्यालय
केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
रिया प्लाजा, तीसरा तल्ला, कोकर चौक,
राँची (झारखण्ड)
मो०- 9955077308, 9431073769

महाराष्ट्र कार्यालय
केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- कमोद कुमार कंचन
Swapnapoorti Society,
Phase- 1, Sector - 26,
Nigdi, Pune- 411044
Mob:- 07492868363

छत्तीसगढ़ कार्यालय
केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- नूर आलम
हाउस नं.-74, अटल आवास, बेलभाँटा,
अभनपुर, रायपुर (छत्तीसगढ़)
मो०- 09835845781, 08602674503

आपको केवल सच टाइम्स पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारी सच्चाई है।

हमारा पता है

केवल सच टाइम्स,

द्विभाषीय मासिक पत्रिका

द्वारा:- ब्रजेश मिश्र

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या- 14/28

कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)

फोन:- 9431073769, 9955077308

हमारा ई-मेल

kewalsach@gmail.com,
editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

जनवरी 2019

रघुवर बनाम हेमंत

संपादक महोदय,

जनवरी 2020 अंक में आपका संपादकीय ''रघुवर बनाम हेमंत झारखंड'' में आपने झारखण्ड की राजनीति का सटीक समीक्षा करते हुए रघुवर दास की करतूत को उजागर करने का सार्थक प्रयास है और राजनीति के सभी पहलुओं को भी गंभीरता के साथ पाठकों के समक्ष रखने का साहस को सलाम करता हूं। आपकी पत्रिका केवल सच टाइम्स देश की ज्वलंत समस्याओं को बहुत ही बारीकी के साथ वर्षों से लिखता आया है। झारखण्ड की राजनीति में अहंकार की हार हुई है जैसे मामले को भी प्राथमिकता दिया गया है तथा हर अनछुए पहलुओं को भी क्रमबद्धता के साथ रखने का प्रयास आपकी पत्रिका ही कर सकती है। सटीक आलेख के लिए बधाई।

● **रंजन सिंह सोलंकी, अशोक बिहार, नई दिल्ली**

CAA

ब्रजेश जी,

आपकी पत्रिका केवल सच टाइम्स का मैं स्थायी पाठक हूं और जनवरी 2020 का नागरिकता बिल की खबर से पत्रिका में मेरी आस्था और बढ़ गया है। नागरिकता बिल की समस्या में इतना बेहतरीन खबर मेरी नजरों में न ही किसी अखबार में आया और न ही किसी चैनल ने इतना विस्तार से बताया है। ललन कुमार प्रसाद की यह खबर वास्तव में समाज को आईना दिखाने का काम कर रही है। CAA जैसा गंभीर विषय को सोचे बगैर जिस प्रकार टिप्पणी आता है वह समाज को सबल बनायेगा तथा शांति-व्यवस्था कायम करने में मददगार साबित होगा। इस प्रकार की खबर वास्तव में समाजहित के लिए अतिआवश्यक है।

● **महेन्द्र कौशिक, बुराड़ी गांव, नई दिल्ली**

एटीएम में लूट

ब्रजेश जी,

जनवरी 2020 अंक में ओम प्रकाश की खबर ''एटीएम लूट में करोड़ों का गबन'' में पुलिस-प्रशासन की पोल खोलकर रख दी है। एटीएम से करोड़ों रूपये गायब है और इस खेल में कहीं न कहीं स्थानीय पुलिस-प्रशासन की भूमिका संदिग्ध है तथा एटीएम से लूट का मामला में बैंक की मिलीभगत से ही यह संभव है। सरकारी विभाग में कोई बड़ा मामला हो तो उसमें विभाग के संलिप्तता होता ही है और ऐसे खबर को मजबूती से लिखकर समाज एवं प्रशासन के समक्ष लाना वास्तव में मजबूत एवं सच्ची पत्रकारिता का परिचय देता है। मुझे यह खबर बहुत ही सटीक एवं कारगर लगी। ऐसे खबरों को प्राथमिकता मिलना ही चाहिए।

● **कुंदन पाण्डेय, चंदवा, आरा**

डॉ वशिष्ठ

मिश्रा जी,

गणित विषय के जानकार डॉ० वशिष्ठ नारायण सिंह की जीवन वृत पर इतना मजबूत एवं सटीक खबर मैंने किसी अन्य जगह पर नहीं पढ़ी। ललन कुमार प्रसाद की यह खबर ''आर्यभट्ट के अवतार थे डॉ० वशिष्ठ नारायण सिंह'' के कार्य-पद्धति के साथ श्री सिंह के जीवन एवं गणित के प्रेम को भी पाठकों के समक्ष रखा है। जीवन एवं मौत के बीच जूझ रहे श्री सिंह के साथ हुए राजनीतिक षडयंत्र की भी खबर को प्रमुखता से लिखकर उनको लोगों को चेताने का भी प्रयास किया गया है जिसकी वजह से लोगों को बहुत सारी मजबूत जानकारी एक साथ केवल सच टाइम्स पत्रिका में मिली है। आपकी पत्रिका किसी भी विषय पर बेबाकी के साथ लिखती है।

● **मोहन श्रीवास्तव, टेकारी रोड़, गया**

कानूनी सलाह

ब्रजेश जी,

मैं केवल सच टाइम्स पत्रिका का नियमित पाठक हूं और प्रतिमाह का संपादकीय एवं कानूनी सलाह को अवश्य पढ़ता हूं। छोटी-छोटी जानकारी सहित कानून के दाव-पेंच को बताने का प्रयास करता है जो प्रशंसनीय है। कानूनी सलाह के साथ साथ अगर न्यायालय के किसी विषय पर जजमेंट पर भी आलेख आना चाहिए ताकि किसी फैसले का लाभ एवं नुकसान का महत्व की जानकारी देना सुनिश्चित करें। कानूनी सलाह सही मायने में लोगों को जागरूक करता है तथा ऐसे स्तंभों को कारगर बनाता है। कानूनी सलाह के साथ-साथ चिकित्सा का भी स्थायी स्तंभ आने लगे तो लोग स्वस्थ के साथ-साथ कानूनी रूप से भी जिम्मेवार लोगों को बनाता है। मुझे कानूनी सलाह बेहद पसंद है और अवश्य करके पढ़ता हूं।

● **दिनु चन्द्रवंशी, सेक्टर-4, बोकारो**

नागरिकता बिल

संपादक जी,

मैं केवल सच टाइम्स पत्रिका का नियमित पाठक हूं और सभी अंक को वेवसाइट पर पढ़ता हूं। जनवरी 2020 अंक में पत्रकार ललन कुमार प्रसाद की खबर ''नागरिकता संशोधन बिल, संवैधानिक भूल का सुधार'' पर बहुत बड़ी खबर लिखी है जिसमें इसके सभी बिन्दुओं को सही-सही चित्रण किया है। ऐसे लेखक की लेखनी किसी भी पत्रिका का मूल स्तंभ हो जाता है। संपादकीय और ललन कुमार प्रसाद की खबर को महत्व मिलना हीं चाहिए। नागरिकता संशोधन बिल पर सटीक खबर है और इसके लाभ एवं नुकसान दोनों पहलुओं को रखने का कार्य पत्रिका ने किया है जिससे लोगों में जागरूकता भी आयेगा एवं शांति का वातावरण भी बनेगा। कानून की जानकारी के साथ इसका राजनीतिक वातावरण को भी फोकस किया है।

● **विनय भूषण राय, सदर, हाजीपुर**

अन्दर के पन्नों में

Ramayana Express...21

22

US Navy seizes.....27

31

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक **'केवल सच'** पत्रिका
एवं 'केवल सच टाइम्स' द्विभाषीय मासिक पत्रिका
प्रदेश अध्यक्ष, बिहार राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)
पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
09431016951, 09334110654

मुख्य संरक्षक के लिए आमंत्रण

मुख्य संरक्षक के लिए आमंत्रण

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्याः- 28/14, कंकड़बाग,पटना-800020(बिहार)
  e-mail:- kewalsach@gmail.com,
  editor.kstimes@rediffmail.com
  kewalsach_times@rediffmail.com
- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा जय हिन्द प्रेस कंकड़बाग पटना-800020 से मुद्रित एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। **RNI NO.- BIHBIL/2011/49252**
- पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रकार के वाद - विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।
- आलेख पर किसी को कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।
- किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
- सभी पद अवैतनिक हैं।
- विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।
- फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)
- कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।
- **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**
- भुगतान BRAJESH MISHRA को ही करें। किसी प्रतिनिधि को नगद न दें।
- A/C No. :- 20001817444
  BANK :- State Bank Of India
  IFSC Code :- SBIN0003564
  PAN No. :- AKKPM4905A

एक नजर इधर भी

जमुई के सिकन्दरा के अकोनी गांव में एक गाय ने चार बछड़े का जन्म दिया है। चारो बछड़े स्वस्थ है। इसमें से एक बाछा और 3 बाछी है।

Contributions/Donations are Invited for the Welfare of Elders/Sr. Citizens for the establishment of "APNA GHAR" A home for Sr. Citizens of Bihar & Jharkhand Proposed to be Constructed Under the ageas of " KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN".

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

Registered Under the Indian Society Act 21, 1880

East Ashok Nagar, Road No.-14,
Kankarbagh, Patna - 800020

Contact No. :- 09431073769, 9955077308, 9308727077

E-mail :- kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com

Reg. No. : 1141 (2009-10), Income Tax No. :12AA/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

APNA GHAR

Now in the State of Bihar & Jharkhand

Help the helpless Elders/Sr. Citizen. For which your Contribution and Donation are essential.
Your Coopertation in this direction can make a diffrence in the lives of many Sr. Citizens.

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

A/C No.	-	**0600010202404**
Bank Name	-	**United Bank of India**
IFSC Code	-	**UTBIOKKB463**
Pan No.	-	**AAAAK9339D**

भारत में एक नहीं कई कश्मीर

● **ललन कुमार प्रसाद**

यदि पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान ने धार्मिक अल्पसंख्यकों यानि हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाई के प्रति अपने वायदे निभाये होते तो नागरिकता अधिनियम में संसोधन करने की जरूरत ही नहीं पड़ती। भारत में मुस्लिम समाज के नेताओं और धर्मगुरूओं को यह सच स्वीकार करना चाहिए कि पाकिस्तान और बांग्लादेश में वाकई आजादी के बाद से ही वहां के हिन्दुओं, सिखों और बौद्धों पर लगातार जबरदस्त अमानवीय होता आ रहा है, जो आज भी जारी है। इसका सबसे ज्यादा असर हिन्दू और सिख समुदाय के 11 वर्ष से लेकर 16 वर्ष तक की लड़कियों पर पड़ा है। पाकिस्तान में हिन्दुओं और सिखों की लड़कियों को अगवा करना, जबरन धर्म परिवर्तन कराना और फिर उनसे निकाह कराने का दस्तूर बन गया है। इसलिए भारत के मुसलमानों को नागरिकता संसोधन अधिनियम का स्वागत करना चाहिए, लेकिन भारत के ज्यादातर मुसलमान ठीक उलटा कर रहे हैं। साथ ही भारतीय मुसलमानों को पाकिस्तान और बांग्लादेश को हिदायद देनी चाहिए कि वे अपने यहां अल्पसंख्यकों यानि हिन्दुओं और सिखों के साथ प्यार से पेश आये। लेकिन भारत के मुस्लिम नेता और धर्मगुरू भारत की आजादी के समय से ही इस तथ्य की अनदेखी करते आ रहे हैं और आज भी कर रहे हैं। इस मुद्दे को लेकर भारत के मुसलमान पूरे देश में पाकिस्तान और बांग्लादेश के विरोध में धरना- प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। इतना ही नहीं, जब 19 जनवरी 1990 को रातों-रात 4 लाख कश्मीरी पंडितों को जबरन कश्मीर से खदेड़कर भगा दिया गया। कश्मीर में कश्मीरी पंडितों की लड़कियों और महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया। उनके हजारों घरों को आग लगा दी गई और कश्मीर की सड़कों पर कश्मीरी पंडितों को उनके घर से खींच-खींचकर हत्या कर दी गई। जिससे वहां की सड़के कश्मीरी पंडितों के शवों से पट गयी थी। ऐसे में मुस्लिम नेताओं और धर्मगुरूओं ने क्यों नहीं प्रदर्शन किया। आज भी भारत के मुसलमानों द्वारा देश में लव जेहाद के नाम पर यहां के हिन्दू लड़कियों के साथ उत्पीड़न किया जा रहा है। मसलन, एकदम से ताजा मामला केरल का ही ले लिजिए। वहां के सबसे बड़े चर्च के पादरी केरल सरकार से गुहार लगा रहे हैं कि यहाँ के मुस्लिम ईसाई लड़कियों और महिलाओं का सेक्सुअल एक्सप्लोआयटेशन कर रहे हैं, फिर भी केरल सरकार चुप है। ये सब एकतरफा धर्म निरपेक्षता या इस्लामीकृत धर्म निरपेक्षता नहीं तो और क्या है?

संविधान निश्चित रूप से सभी को अभिव्यक्ति की आजादी देता है, लेकिन समाज में अव्यवस्था और अराजकता फैलाने की किसी भी सूरत में आजादी नहीं देता है। ऐसे में तोड़-फोड़, आगजनी और हिंसा किये जाने का अधिकार दिये जाने का कोई सवाल ही नहीं उठता। दिल्ली के शाहीनबाग में बैठी तमाम मुस्लिम महिलाओं को धरना-प्रदर्शन का अधिकार है, लेकिन नोयडा और दिल्ली को जोड़ने वाली सड़क को पुरी तरह से बंद करके बंधक बनाने का अधिकार हरगिज नहीं है। संविधान सड़कों को बंधक बनाकर पूरी तरह से जाम करके मुद्दे को

सुलझाने का कोई अधिकार नहीं देता, चाहे मुद्दा जायज ही क्यों न हो? लेकिन नागरिकता संसोधन विधेयक का विरोध किया जाना तो सौ फिसदी अवैध है, क्योंकि सीएए संवैधानिक रूप से पूरी तरह वैध है। यह पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में धर्म के आधार पर प्रताड़ित वहां के अल्पसंख्यकों यानि हिन्दुओं, सिखों और बौद्धों को मानवीय आधार पर आश्रय देने वाला कानून है, यह मुस्लिम विरोधी नहीं है। सच तो यह है कि पिछले कुछ अरसे में उपर्युक्त तीनों देशों से आये छः सौ मुसलमानों को भारतीय नागरिकता दी जा चुकी है। यह कानून तनीक भी विभाजनकारी नहीं है। यह सच्चाई है कि नागरिकता संसोधन अधिनियम कानून का एक हिस्सा है, जिसे सभी पार्टियों द्वारा लोकसभा और राज्यसभा में मेराथन बहस के बाद बहुमत से पारित किया गया है। ऐसे में सीएए के विरोध में सड़कों पर प्रदर्शन करना किसी भी तरह से संवैधानिक नहीं है। यह तो संविधान का खुल्लम-खुल्ला उलंघन है। मुस्लिम महिलाओं द्वारा पिछले लगभग पचास दिनों से शाहीनबाग स्थित नोयडा और दिल्ली को जोड़ने वाली सड़क को बंधक बना लिया है। सड़क पर खाना बनाना, सड़क पर ही खाना खाना, सड़क पर तम्बू लगाकर रजाई-कंबल का इस्तेमाल कर आराम फरमाना,

फ्री कश्मीर और जिन्ने वाली आजादी जैसे देश को तोड़ने वाली नारे लगाना। पांच साल, छः साल के छोटे-छोटे बच्चे-बच्चियों द्वारा देश विरोधी नारे लगवाना-'मोदी और शाह हमें मारने वाला है, हम उसे मारेंगे', 'जो हिटलर की चाल चलेगा, वह हिटलर की मौत मरेगा'। प्रदर्शन के नाम पर छोटे-छोटे बच्चों को शामिल किया जाना, छोटे-छोटे बच्चों पर जुर्म नहीं तो और क्या है? प्रदर्शनकारियों को छोटे-छोटे बच्चों पर जुर्म करने का अधिकार किसने दे दिया है? मुस्लिम महिलायें ऐसा क्यों कर रही हैं? याद रहे अम्बेडकर का चित्र लगाने, जन-गण-मन गाने और तिरंगा फहराने से असंवैधानिक कार्य कभी भी संवैधानिक नहीं हो सकता। शाहीनबाग में मुस्लिम महिलाओं के चलते स्थानीय लोगों के अलावा दिल्ली के अन्य मोहल्लों के लाखों लोगों के लिए आवागमन मुश्किल हो गया है। स्थानीय लोगों का व्यापार ठप पड़ गया है। क्योंकि प्रदर्शनकारियों का मतलब सिर्फ धरना-प्रदर्शन करना नहीं है, बल्कि अव्यवस्था और अराजकता फैलाना है। जो सरासर संविधान का उलंघन है। यह संविधान के

मूलभूत कर्तव्यों से जुड़े अनुच्छेद 51-ए का खुल्लम-खुल्ला उलंघन है, क्योंकि प्रदर्शनकारी आम आदमी के लिए जान-बूझकर ढ़ेर सारी परेशानियां खड़ी कर रहे हैं। प्रदर्शनकारियों की दादागिरी संवैधानिक नियम कायदों की धज्जियां उड़ाने वाली है। मोदी सरकार ने मुस्लिम बहु-बेटियों के लिए तीन तलाक हटवाया, जिससे की पुरूषों द्वारा उनका शोषण नहीं किया जा सके, उनकी भलाई के लिए हुनर कार्यक्रम चलाया, मुस्लिम विधवाओं को हजारों करोड़ रूपये की आर्थिक मदद दिलवा रही है, आज वही मुस्लिम महिलाएं सड़क जाम करके दादागिरी दिखा रही है। इससे तो अच्छा था कि तीन तलाक लागू ही रहता। यह मोदी सरकार के प्रति मुस्लिम महिलाओं की बेवफाई नहीं तो और क्या है?

शाहीनबाग में वहां के लोगों द्वारा धरना-प्रदर्शन का कवरेज करके टीवी पर प्रसारित करने के लिए बुलाया गया था, वही पर मौजूद कुछ लोगों ने दीपक चौरसिया, कैमरामैन सहित न्यूज नेशन के पत्रकारों पर हमला कर दिया। उनके कैमरे या तो तोड़ दिये गये या छिन लिए गये। उनकी पिटाई कर दी गई। बामुश्किल वे लोग भागकर वहां से कुछ दूरी पर स्थित पुलिस की गाड़ी में शरण लेकर अपनी जान बचाने में सफल हो गये। वहां मौजूद कुछ मुस्लिम युवकों द्वारा टीवी के पत्रकारों और कैमरामैन पर हमला कर उनकी पिटाई कर देने को गुंडागर्दी नहीं तो और क्या कहेंगे? पूरे देश के मुसलमान और मुस्लिम धर्मगुरूओं ने कसम खा रखा है कि उन्हें सीएए कबूल नहीं है, इसलिए वे पूरे देश में सीएए के विरोध में धरना-प्रदर्शन और मानव श्रृंखला बना रहे हैं, जिन्हे उन राजनीतिक पार्टियों के नेताओं का समर्थन प्राप्त है, जो मुस्लिमों के साथ, मुस्लिमों के विकास और मुस्लिमों के विश्वास के सिद्धांत पर चलते हैं। मोदी सरकार के सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के सिद्धांत को नहीं मान रहे हैं। ऐसे में देश का हिन्दू समाज, मुस्लिम समाज से काफी डर गया है। देश के हिन्दू समाज के मन में पैदा हो गया है कि मुसलमान, पूरे भारत को कश्मीर बना देंगे, हिन्दू

मुक्त बना देंगे। ऐसे में भारत के हिन्दू समाज को भारत को हिन्दू राष्ट्र तुरंत घोषित किये जाने के लिए मोदी सरकार से गुजारीश करनी चाहिए और मोदी सरकार को भी हिन्दुओं के इस मांग को यथाशीघ्र पूरा कर देने का प्रयास करना चाहिए। पूरी दुनियां में 58 मुस्लिम देश है, लेकिन एक भी हिन्दू देश नहीं है। पूरी दुनियां में कम से कम एक तो हिन्दू देश होना ही चाहिए, यह एकदम अनिवार्य है। हिन्दुओं का मूल देश भारत है, इसलिए मोदी सरकार को संसद में बिल लाकर भारत को हिन्दू देश घोषित कर दिये जाने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए हिन्दुओं को सड़क-सड़क, गली-गली ऐसी तख्तियां लगानी चाहिए, जिसपर लिखा हो-'पूरे देश को कश्मीर बनने से बचाने के लिए भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करो', 'पूरी दुनियां में हिन्दुओं का वजूद मिटने से बचाने के लिए जरूरी है भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाना', 'हिन्दुओं का वजूद खतरे में है, इसलिए सभी हिन्दू जात-पात और ऊँच-चीन के भेदभाव को भुलाकर एकजुट हो जाओ, संगठित हो जाओ और सरकार की इस्लामीकृत एकतरफा धर्म निरपेक्षता का जोरदार विरोध करो', इत्यादि। मोदी सरकार से भारत के हिन्दुओं का नम्र निवेदन है कि वे भारत को संवैधानिक रूप से हिन्दू राष्ट्र घोषित करा दे, वरना देश की दूसरी पार्टियों के नेता निश्चित रूप से भारत को हिन्दू मुक्त कश्मीर बना देंगे। इसका प्रमाण है कांग्रेस पार्टी ने 1947 में पाक अधिकृत कश्मीर 'पीओके' बनाया। कश्मीर

में 370 और 35ए लागू किया और कश्मीर से कश्मीरी पंडितों को जबरन खदेड़वा कर भगा दिया। इस मुद्दे पर भाजपा को छोड़कर सभी पार्टियां कांग्रेस का साथ दे रही है। इसलिए देश का समस्त हिन्दू समाज मोदी सरकार से हांथ जोड़कर निवेदन कर रहा है कि भारत को संवैधानिक रूप से हिन्दू राष्ट्र बनाकर हिन्दुओं के मूल देश भारत में हिन्दुओं का खात्मा होने से बचा ले।

आज भारत में एक नहीं कई कश्मीर है, जिसका असली श्रेय भारत की सर्वाधिक पुरानी पार्टी कांग्रेस को जाता है। ऐसा इसलिए कांग्रेस ने भारत को पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान की तरह इस्लामी देश तो नहीं, लेकिन इस्लामीकृत धर्म निरपेक्ष देश अवश्य ही बना दिया है। यदि कांग्रेस पुनः देश की सत्ता में आयेगी तो भारत को भी इस्लामिक देश बनाकर ही दम लेगी, क्योंकि इस घृणित कार्य में भाजपा को छोड़कर सभी पार्टियां कांग्रेस को भरपूर सहयोग दे रही है। इसलिए कांग्रेस पार्टी का मनोबल बहुत बढ़ा हुआ है। अतः इस घृणित कार्य को अंजाम तक पहुंचा देने के लिए कांग्रेस पार्टी बेताब है, इसके ढ़ेर सारे सबूत है। पहला सबूत है 1947 में पाक अधिकृत कश्मीर यानि पीओके का निर्माण, दूसरा सबूत है महाराजा हरी सिंह के द्वारा जम्मू कश्मीर को भारत में विलय किये जाने के बाद बगैर मंत्रीमंडल के सहयोगियों से राय लिये नेहरू जी द्वारा कश्मीर के मामले को लेकर संयुक्त राष्ट्र में ले जाया जाना, तीसरा सबूत है 26 जनवरी को अनुच्छेद 370 को प्रधानमंत्री के पद का दुरूपयोग कर 26 जनवरी को कश्मीर में अस्थायी रूप से लागू किया जाना, चौथा सबूत है देश की जनता को धोखा देकर अस्थायी अनुच्छेद 370 को स्थायी बनाने के लिए जम्मू कश्मीर में चोरी चुपके अनुच्छेद 35ए का लागू किया जाना, पांचवा सबूत है 19 जनवरी 1990 को चार लाख कश्मीरी पंडितों को उन्ही के मूल स्थान कश्मीर से जबरन खदेरवा कर कश्मीर से भगाया जाना, छठा सबूत है राहुल गांधी द्वारा जवाहरलाल नेहरू युनिवर्सिटी में देश के टुकडे-टुकड़े गैंग के साथ खड़े होकर उनकी हौसला अफजाही करना, सातवां सबूत है 2019 के अपने चुनावी घोषणा-पत्र में यह घोषित किया जाना कि अगर कांग्रेस पाटी सत्ता में आयी तो अनुच्छेद 124 ए को खत्म कर देगी, आठवां सबूत है दिल्ली के शाहीनबाग में असंवैधानिक रूप से चलाये जा रहे धरना-प्रदर्शन में कांग्रेस के बड़े नेताओं मणिशंकर अय्यर और शशि थरूर द्वारा सौ फिसदी उनके धरना प्रदर्शन को अंजाम तक पहुंचाने का वादा किया जाना, इत्यादि। शाहीनबाग

के धरना प्रदर्शन का मकसद सिर्फ सीएए के विरोध तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका दायरा अव्यवस्था और अराजकता तक फैला हुआ है। 27 जनवरी 2020 को रात 9 बजे न्यूज नेशन के पत्रकार दीपक चौरसिया और जी न्यूज के पत्रकार सुधीर चौधरी को धरना प्रदर्शन के स्थान तक नहीं जाने दिया जाना। शाहीनबाग में धरना प्रदर्शन के स्थल तक पुलिस को भी जाना एलाउड नहीं है। मुख्यत: मुस्लिम महिलाओं द्वारा किये जा रहे इस धरना प्रदर्शन को केजरीवाल के आप पार्टी का भरपूर समर्थन प्राप्त है, जिसकी घोषणा उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कर रखी है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल की खासियत है कि उन्हे हर वह कार्य पसंद है, जिससे देश को टुकड़े-टुकड़े करने में मदद मिलती है। तभी तो जेएनयू में जाकर वे ना सिर्फ देश के टुकड़े-टुकड़े गैंग का समर्थन करते हैं, बल्कि दिल्ली पुलिस द्वारा कन्हैया कुमार और उमर खारिद के विरूद्ध दिल्ली हाईकोर्ट में दाखिल किये जाने वाली अर्जी को वर्षों से दाबकर बैठे हुए हैं, इजाजत नहीं दे रहे हैं। इतना ही नहीं जब 29 दिसम्बर 2016 को भारतीय सेना ने पाक अधिकृत कश्मीर पर सर्जिकल स्ट्राइक किया था और 26 जनवरी 2019 को भारतीय वायुसेना ने अपने ही देश की आकाशीय सीमा लांघकर पाकिस्तान में घूसकर बालाकोट में एयर स्ट्राइक किया था, तो केजरीवाल ने इन दोनो स्ट्राइक का सबूत मांगा था। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने भी भारतीय सेना और भारतीय वायुसेना की बहादूरी के सबूत मांगे थे। आज शाहीनबाग की स्थिति है कि शाहीनबाग के डेढ़ किलोमीटर के दायरे से होकर गुजरने से हर हिन्दू डरता है। हिन्दू तो हिन्दू पुलिस भी शाहीनबाग के डेढ़ किलोमीटर के दायरे के अंदर जाने से डरती है। क्या शाहीनबाग का इलाका दिल्ली में कश्मीर नहीं

तो और क्या है? आज दिल्ली में ही नहीं देश के कई भागों में छोटे-छोटे ढ़ेर सारे कश्मीर है। ऐसे में भारत में रह रहे यहां के मूल निवासी हिन्दुओं का क्या होगा? क्या वे अपने ही देश में आत्महत्या कर लिए जाने को मजबूर कर दिये जायेंगे? इसलिए अब जरूरी हो गया है कि भारत को संवैधानिक रूप से हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाना। आज वास्तविकता ता यह है कि पूरे देश का हिन्दू समाज, मुसलमानों की दादागिरी से त्रस्त है। पूरे देश में मुसलमानों द्वारा हिन्दू समाज के मुंह पर ताला जड़ दिया है और वोट के खातीर भाजपा को छोड़कर लगभग सभी पार्टियां उनका साथ दे रही है, जिनमें पी. विजयन की कम्युनिष्ट पार्टी, ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस और केजरीवाल की आप पार्टी अग्रणी है। समाजवादी पार्टी के सबसे बड़े नेता अखिलेश यादव ने तो घोषणा कर दी है कि शाहीनबाग में धरना पर बैठी मुस्लिम महिलाओं को पुरस्कार देकर बहादूरी के लिए उन्हे सम्मानित करेंगे। पहले ही बहुत विलंब हो गया है, अब और अधिक विलंब किया जाना हिन्दुओं के लिए आत्मघाती होगा, उनके वजूद को मिटाने वाला होगा।

जेएनयू छात्र संघ के पूर्व नेता खालिद उमर ने घोषणा कर रखी है कि भारत में बहुत ही जल्दी एक लाख शाहीन बाग बना देंगे। ऐसा इसलिए देश के तमाम मुस्लिम भाई हर तरह से उनका साथ दे रहे है, जिससे उनमें काम को अंजाम तक पहुंचाने हेतु काफी ऊर्जा मिल रही है। इससे स्पष्ट है कि भारत के मुसलमान यहां के हिन्दुओं को किस नजर से देखते हैं। बिहार के जहानाबाद के शरजील इमाम, जो फिलहाल जेएनयू के छात्र हैं, ने देश के टुकड़े-टुकड़े करने के साथ ही भारत को इस्लामिक देश बनाने का ब्लू प्रिंट तैयार करके देश के विभिन्न हिस्सों में घूम-घूमकर अंजाम तक पहुंचाने के लिए दिन-रात एक किये हुए हैं। लेकिन संयोग से वे फिलहाल पुलिस की गिरफ्त में है। उनका प्लान है कि इस देश से पहले आसाम को अलग कर देगे और तब भारत सरकार को मजबूर कर देगे कि वह भारत को इस्लामिक राष्ट्र घोषित करे। दिल्ली की शाहीनबाग की तरह देश भर के हजारों अलग-अलग जगहों पर मुस्लिम महिलाओं द्वारा सीएए के विरोध में धरना प्रदर्शन किया जा रहा है, जिसका एक ही उद्देश्य है कि चाहे जैसे भी हो भारत को पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान की तरह इस्लामिक देश बना दिया जाये। मसलन, मुम्बई के नागपारा में धरने पर बैठी मुस्लिम महिलाएं ताली बजा-बजाकर और हांथ उठा-उठाकर नारा लगा रही हैं 'शरजील तेरे सपने को मंजिल तक

पहुंचायेंगे'।

✯ **कश्मीरी पंडित और वहां के मुसलमान :-** वैसे तो आजादी के बाद से ही वहां के मुसलमान पाकिस्तान की सह पर कश्मीरी पंडितों पर अमानवीय जुल्म ठाहते रहे हैं, जिसकी वजह से 19 जनवरी 1990 के कई दशक पहले से ही कश्मीर से कश्मीरी पंडित खदेड़े जाते रहे हैं, लेकिन 19 जनवरी 1990 को वहां के मुसलमानों द्वारा कश्मीरी पंडितों पर अमानवीय जुल्मों का इंतिहास हो गया, जिसके कारण मजबूरन चार लाख से अधिक कश्मीरी पंडितों को अपना घर छोड़ना पड़ा। कश्मीर के मस्जिदों से उस दिन ऐलान किया जा रहा था कि कश्मीरी पंडितों अपनी बहन-बेटियों को छोड़कर कश्मीर से बाहर चले जाओ, वरना तुम सबों की हत्या कर दी जायेगी और वहां के मुसलमानों द्वारा ऐसा किया भी गया। कश्मीर की सड़के, कश्मीरी पंडितों के शव से पट गयी। कितने हजार कश्मीरी पंडितों की हत्या कर दी गयी, इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है। कश्मीर के मुसलमानों द्वारा हजारों कश्मीरी पंडितों के घरों में आग लगा दी गई, उनकी बहु-बेटियों के साथ बलात्कार किया गया, उनकी ढ़ेर सारी मंदिरों को तोड़ दिया गया और उनकी जमीन-जायदाद को बहुत हद तक नुकसान पहुंचाया गया। आश्चर्यजनक है कि मस्जिद जहां खुदा की इबादत की जाती है, वहां से लाउड स्पीकर पर ऐसा फरमान सुनाया जाने लगा। मस्जिद के इमाम ऐसा करने के लिए मुसलमानों को उकसाते रहे। वहां के मस्जिदों के इमाम इस्लाम के नाम पर ऐसा क्यों किया? भारत में मुसलमानों के सबसे बड़े धार्मिक स्थल दारूउलूम से यह फतवा क्यों नहीं जारी किया गया कि कश्मीर के मुसलमान इस्लाम के नाम पर कलंक हैं, इसलिए इनका समाजिक बहिष्कार कर दें। देश में जगह-जगह

मुसलमानों द्वारा धरना प्रदर्शन क्यों नहीं किया गया? जुलूस क्यों नहीं निकाला गया कि कश्मीरी मुसलमान इंसान के रूप में शैतान है। इसलिए इनका समाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिए। इस बात को लेकर देशभर के तथाकथित बुद्धिजीवी जो बात-बात पर पद्मश्री, पद्मभूषण तथा अन्य पुरस्कारों को लौटाते हैं या लौटा देने की धमकी देते हैं तो कश्मीरी पंडितों पर हुए दिल को दहला देने वाली जुल्म को लेकर अपने पुरस्कारों को क्यों नहीं लौटा देते हैं? अभी भी समय है आज ही अपने सभी पुरस्कारों को कश्मीरी पंडितों पर हुए जुल्म को लेकर लौटा दे। ऐसा करने से उन्हें कौन रोक रहा है। लेकिन, वे ऐसा नहीं करेंगे। क्योंकि उन्हें तो मुसलमानों को खुश रखना है। झूठमूठ के अपने आप को बुद्धिजीवी होने का नाटक क्यों कर रह हैं? क्या ऐसे बुद्धिजीवी बेशर्म नहीं तो और क्या हैं? क्या ऐसे बुद्धिजीवियों को चुल्लू भर पानी में डूबकर मर नहीं जाना चाहिए! ऐसे बुद्धिजीवी, बुद्धिजीवियों के नाम पर कलंक नहीं तो और क्या हैं? ऐसे बुद्धिजीवियों का एक ही मकसद है, चाहे जैसे भी हो उन्हें शोहरत और दौलत मिलनी चाहिए। इसके लिए गलत मुद्दे को लेकर मुसलमानों का समर्थन करना पड़े तो करेंगे और सही मुद्दे को लेकर हिन्दुओं का विरोध करना पड़े तो करेंगे। ऐसे लोग मुगल बादशॉह औरंगजेब का गुण गाते नहीं थकते और देशभक्त सावरकर को गाली देते नहीं थकते। धिक्कार है देश के ऐसे तथाकथित बुद्धिजीवियों पर।

✯ **देश के गद्दार हैं सीएए के विरोधी :-** भारत का कोई भी नागरिक या किसी भी पार्टी के नेता जो सीएए का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विरोध कर रहे हैं, वे सभी गद्दार हैं। वे चाहते हैं कि जिस तरह से हिन्दुओं को पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में बेहरहमी से क्रूरतापूर्वक हर तरह की यातनाएं दी जाती है, ठीक वैसे ही हिन्दुओं को भारत में भी यातनाएं दी जाये। वे चाहते हैं कि भारत को इस्लामिक देश बना दिया जाये। वे जाने-अनजाने में चाह रहे हैं कि भारत में हिन्दुओं का नामो-निशां मिटा दिया जाये। अगर वे हिन्दू हैं और मंदिर जाते हैं तो सिर्फ हिन्दुओं

को मूर्ख बनाकर सत्ता पाने के लिए अथवा सत्ता में बने रहने के लिए। अगर वे सिख हैं और गुरूद्वारा जाते हैं तो सिखों की पीठ में छूड़ा घोपने के लिए। राहुल गांधी हो, ममता बनर्जी, अरविन्द केजरीवाल हो या फिर अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव हो या पप्पू यादव, जीतनराम मांझी हो या फिर शरद पवार यह तो बता दें कि जो मुसलमान आज भारत का नागरिक है, कल भारत का नागरिक कैसे नहीं रह पायेगा? क्या ऐसे एक भी शब्द को नागरिकता संसोधन कानून में शामिल किया गया है? क्या ये नेतागण लिखित रूप में दे सकते हैं कि सीएए लागू होने से एक भी भारतीय नागरिक की नागरिकता खत्म हो जायेगी, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या बौद्ध, जैन हो या पारसी या ईसाई? लिखकर नहीं दे सकते हैं, क्योंकि लिखकर दे देने से उन्हें जेल हो जायेगी। तब सीएए का विरोध क्यों कर रहे हैं? इससे स्पष्ट है कि भारत देश का नाम तो रहेगा, लेकिन देश के मूल निवासी हिन्दू भारत से ही नदारद हो जायेंगे। उपर्युक्त सभी नेता चाहे किसी भी धर्म को मानने का दिखावा करते हैं, उन्होंने भीतर ही भीतर इस्लाम कबूल कर लिया है। अर्थात् उन्हें अपने मूल धर्म से नफरत है। पूरे देश के हिन्दुओं को ऐसे गद्दार तथाकथित हिन्दू नेताओं का बहिष्कार कर देना चाहिए। उपर्युक्त नेता समाज में जहां कही भी दिखे, उन्हें देखते ही मुंह फेर लें। ऐसे गद्दार नेता हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों, जैनों, पारसियों और ईसाइयों के लिए आस्तिन के सांप है। ऐसे हिन्दू नेताओं से हिन्दुओं को बातचीत तक नहीं करनी चाहिए। ये सभी नेता हिन्दुओं की पीठ में छूड़ा घोंप रहे हैं।

यहां पर इस बात का उल्लेख करना जरूरी है कि महात्मा गांधी ने 1947 में वचन दिया था कि पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान में रह रहे अल्पसंख्यकों यानि हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों और जैनों को यदि अपने फैसले पर पछतावा है तो भारत के दरवाजे उनके लिए खुल हुए हैं और खुले ही रहेंगे। उन्हें भारत की नागरिकता देना, रोजगार देना और सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार देना भारत सरकार का प्रथम कर्तव्य है। नागरिकता संसोधन बिल महात्मा गांधी के इसी वचन की पूर्ति है। देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने अपने शपथग्रहण के समय कहा था कि पाकिस्तान में धार्मिक उत्पीड़न के चलते जो भी वहां से विस्थापित होने को मजबूर किये जा रहे हैं, वे भारत आ सकते हैं। उनका यहां स्वागत है। इसी वचन को 2003 में राज्यसभा में विपक्ष के नेता डॉ० मनमोहन सिंह ने भी दोहराया था। यह भी ध्यान रखने की बात है कि दिल्ली के गर्वनमेंट हाउस में 08 अप्रैल 1950 को 'नेहरू-लियाकत समझौता' पर दोनो देशों के तत्काल प्रधानमंत्रियों यानि पंडित जवाहरलाल नेहरू और लियाकत अली खान ने दस्तखत किये थे। उस समझौते के तहत दोनो देश अपने-अपने देशों में मजहबी अल्पसंख्यकों के अधिकारों का संरक्षण देने की प्रतिबद्धता जतायी थी, जिसपर भारत में सौ फिसदी अमल किया गया और पाकिस्तान में एक फिसदी भी नहीं।

भारत में जन्में चार धर्म है-हिन्दू, सिख, बौद्ध और जैन। इन धर्मों का प्रचार बगैर किसी हिंसा के शांतिपूर्वक पूरी दुनियां में उनके दर्शन की गुणवत्ता के आधार पर हुआ है। इन चारों धर्मों में हिन्दू धर्म सबसे पुराना है। दुनियांभर में हिन्दू धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है, जो सही मायने में धर्मनिरपेक्ष है। हिन्दू, स्वभाव से ही उदारवादी होते हैं। इसलिए भारत में इतने सारे धर्म जैसे इस्लाम और ईसाई धर्म बगैर किसी रोक-टोक के पनपते चले गये। आज भारत में मुसलमानों को जितनी छूट मिली हुई है, वह पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान जैसे इस्लामिक देशों में भी मुसलमानों को नहीं मिली हुई है। दुनियां में जहां कही भी हिन्दू बसे हैं, उस देश के लिए अपने हैं, अजीज हैं। ऐसा इसलिए कि किसी कारणवश दुनियां के जिस किसी भी देश में हिन्दू बसे हैं, उस देश को ही जी जान से अपना देश मानते हैं। उस देश के विकास में जी जान से जुटे रहते हैं। इसके लिए मन लगाकर कठोर मेहनत करते हैं। इस बात का पूरा ख्याल रखते हैं कि वह देश समृद्ध और खुशहाल बने तथा उस देश का नाम पूरी दुनियां में रौशन हो। इसके लिए हर समय ईमानदारीपूर्वक पूरी निष्ठा के साथ प्रयास करते रहते हैं। इसी हिन्दू धर्म को पाकिस्तान, बांग्लादेश, और अफगानिस्तान ने खात्मे के कगार पर पहुंचा दिया है। आज देश के माहौल से ऐसा प्रतीत होने लगा है कि निकट भविष्य में शीघ्र ही हिन्दुओं के मूल देश भारत से हिन्दू धर्म खत्म हो जायेगा। यदि इसे बचाने का यथाशीघ्र कारगर उपाय नहीं किये गये तो, लेकिन दुख ही नहीं बहुत ही दुख की बात है कि भारत में भी हिन्दू धर्म खात्मे के कगार पर है। मसलन, कश्मीर को ही ले लिजिए। आज से करीब 700 साल पहले कश्मीर में सिर्फ हिन्दू थे, लेकिन अपने उदार स्वभाव के कारण किसी कारणवश बाहर से आये कुछ मुसलमानों को शरण दे दिया, तभी से कश्मीर अशांत रहने लगा और मुसलमानों की बढ़ती आबादी के साथ वहां अशांती फैलने लगी। आज आलम यह है कि पिछले 30 सालों से दर-दर की ठोकरे खाने वाले एक भी कश्मीरी पंडितों के परिवार को वापस वहां नहीं बसाया जा सका। जानते हैं क्यों? ऐसा इसलिए कि ज्यादातर मुसलमान जिस देश में जाते हैं, वहां अपने देश का प्रचार-प्रसार इतनी क्रूरतापूर्वक करते हैं कि समाज में अशांती पैदा हो जाती है। मसलन मुगल शासक औरंगजेब को ही ले लिजिए, जिसने सिखों और सिखों के कुछ धर्मगुरूओं को मौत के घाट उतार दिया। हिन्दुओं के कई गांवों को उत्पीड़ित करके जबरन धर्म परिवर्तन कराकर के हिन्दू से मुसलमान बना दिया। सिखों के दसवें और अंतिम गुरू गुरूगोविन्द

सिंह के दो बेटों को औरंगजेब ने ही जिन्दा दिवार में चुनवा दिया था।

आज पश्चिम बंगाल में हिन्दू विधायक और सांसद तक के जमीन-जायदाद सुरक्षित नहीं है। पश्चिम बंगाल में आये दिन तृणमूल कांग्रेस के समर्थकों द्वारा हिन्दुओं की हत्या किया जाना आम बात होती जा रही है। देश में समाजिक सुधार करने वाले और देश की आजादी के लिए मर मिटने वाले सख्सियतों से भरे रहने वाले पश्चिम बंगाल के मूल निवासियों को देशद्रोहियों द्वारा सताया जाने लगा है। कुल मिलाकर ममता बनर्जी का पश्चिम बंगाल अशांत हो गया है। पश्चिम बंगाल के विकास को लकवा मार गया है। वहां के शिक्षण संस्थानों में पढ़ाई-लिखाई के माहौल में तेजर से गिरावट होती जा रही है। आज देश का अग्रणी राज्य पश्चिम बंगाल बुरी तरह से पिछड़ गया है। शारदा चीटफंड घोटाले के चलते वहां सैकड़ों लोगों को मजबूरन आत्महत्या करनी पड़ी है, हजारों लोग कंगाल हो गये हैं। ऐसे में ममता बनर्जी को पश्चिम बंगाल में और अधिक समय तक शासन करने का मौका दिया जाना उस राज्य के लिए आत्मघाती साबित होगा। ऐसे में यदि पश्चिम बंगाल को रसातल में पहुंचने से बचाना है तो इस बात का पुख्ता इंतजाम करना पड़ेगा कि विधानसभा के आगामी चुनाव में तृणमूल कांग्रेस का एक भी प्रत्याशी जितने ना पाये। वहां के लोगां को इस बात का ध्यान रखना पड़ेगा कि ममता बनर्जी ने कुशल चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर को वहां के विधानसभा के चुनाव की जिम्मेदारी सौंप दी है। प्रशांत किशोर मुस्लिम वोटबैंक को चुनाव में जीत की गारंटी मानते हैं और उसी अनुसार चुनावी रणनीति तैयार करते हैं कि मुस्लिमों के वोटबैंक पर एकाधिकार प्राप्त कर ली जाये। इसके लिए संविधान का माखौल उड़ाना पड़े तो ऐसा करने में वे जरा भी नहीं हिचकिचाते हैं। यही कारण है कि संवैधानिक नागरिकता संसोध न विधेयक का विरोध करने के लिए देश की सभ राजनीतिक पार्टियों को एकजुट करने में जी जान से जुटे हुए हैं।

आज बड़ी तादाद में देशभर में मुसलमान सड़कों पर सिटीजनशिप अमेंडमेंट एक्ट (सीएए) के विरोध में तिरंगा लहरा रहे हैं और जन-गण-मन भी गा रहे हैं। अर्थात् वैध सीएए के विरोध में अवैध धरना-प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्हें इस बात की खुशी है कि बहुत सारे हिन्दू में उनके साथ कंधे से कंधे मिलाकर यह लड़ाई लड़ रहे हैं। लेकिन यह एकजुटता एकतरफा है, क्योंकि इसी साल 26 जनवरी को झारखण्ड के लोहरदगा में जब विश्व हिन्दू परिषद द्वारा सीएए के पक्ष में निकाली गई रैली में मुसलमानों ने जबरदस्त पथराव कर दिया, जिससे रैली में भाग ले रहे ढ़ेर सारे लोग घायल हो गये। जिनमें से कुछ तो गंभीर रूप से घायल हो गये। क्या हो गया हिन्दू-मुस्लिम एकजुटता को? जब आज से 30 साल पहले कश्मीर के मुसलमानों द्वारा वहां के चार लाख कश्मीरी पंडितों को जबरन खदेड़कर भगा दिया गया, तो यह एकजुटता क्यों नहीं दिखी? भारत के मुसलमानों ने रैली निकालकर कश्मीरी मुसलमानों के विरोध में एक बार भी क्यों नहीं प्रदर्शन किया? जिस वक्त श्रीनगर के लालचौक पर वहां के मुसलमानों द्वारा तिरंगे झंडे जला रहे थे, उस वक्त शेष भारत के मुसलमानों ने सड़कों पर उतरकर विरोध क्यों नहीं जताया? समाजिक स्तर पर हिन्दू-मुसलमान में एकजुटता है तो शाहीनबाग की तरह दिल्ली में ही मुस्लिम महिलाएं कश्मीरी पंडितों पर हुए अमानवीय अत्याचार के विरोध में धरना-प्रदर्शन क्यों नहीं करती? भारत में जब हिन्दुओं पर असंवैधानिक रूप से अत्याचार किया जाता है तो यहां के मुसलमान हिन्दुओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हिन्दुओं पर किये जा रहे नाजायज अत्याचार का विरोध क्यों नहीं करते? कारण स्पष्ट है, भारत के मुसलमान अपने आप को इंसान समझते हैं और हिन्दुओं को जानवरों से भी गया-गुजरा समझते हैं। ऐसे में हिन्दू-मुसलमान एक साथ कैसे रह सकते हैं? देश की सरकारें यह सब आजादी के बाद से ही देखती चली आ रही है, इसलिए भारत सरकार का पुणित कर्तव्य है कि संसद में बिल लाकर भारत को संवैधानिक रूप से हिन्दू राष्ट्र घोषित करा दे, जिससे की हिन्दुओं के मूल देश भारत में हिन्दुओं के वजूद को खत्म होने से बचाया जा सके। हिन्दुओं को इसके लिए जोरदार प्रयास करना होगा। याद रहे, बच्चे को कितनी भी भूख लगी रहे माँ दूध तभी पिलाती है जब बच्चा रोता है। इसलिए हिन्दुओं का अपना वजूद बचाना है तो जोरदार लड़ाई लड़ने के लिए अभी से ही एकजुट हो जाये।

✯ **भारत को पाकिस्तान बना देने का फरमान है शाहीनबाग का धरना-प्रदर्शन** :- शाहीनबाग में मुस्लिम महिलाओं और छोटे-छोटे बच्चे-बच्चियों द्वारा किये जा रहे ध रना-प्रदर्शन को मुसलमानों द्वारा देश का सबसे बड़ा आन्दोलन करार दिया जा रहा है, जो की सौ फिसदी झूठ है। मुस्लिम महिलाएं सीएए के विरोध में वहां की सर्वाधिक अहम सड़क को बंद करके पूरी तरह से बंधक बना लिया है। सड़क पर ही खाना बनाना, सड़क पर खाना खाना, सड़क पर आराम फरमाना और सड़क पर मुस्लिम महिलाओं का जोड़-जोड़ से ताली बजाकर फ्री कश्मीर और जिन्ने वाली आजादी के नारे लगाना। इतना ही नहीं पांच से सात साल के बच्चे-बच्चियों के मन में जहर भरकर यह कहलवाना कि मोदी और शाह हमें मारने वाला है, हम उसको मारेंगे तथा जो हिटलर की चाल चलेगा, वह हिटलर की मौत मरेगा। कोई बच्चा बगैर बड़ो के सिखाय ऐसा बोल कैसे बोल सकता है? ये बच्चे कितनी घातक

मानसिकता के साथ बड़े होंगे और कैसे-कैसे दिल को दहला देने वाली जुर्म करेंगे। यह सोचकर ही हिन्दू समाज भयभित हो रहा है। ऐसे में यदि हिन्दू समाज सोचने लगे कि ये बच्चे बड़े होकर कश्मीर की तरह समूचे देश से हिन्दुओं को खदेड़ देने का प्रयास करेंगे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। मुसलमानों के लिए तो दुनियांभर में 58 मुस्लिम देश है, जहां उनको धर्म के आधार पर प्रताड़ित करने का प्रश्न ही नहीं उठता। लेकिन हिन्दुओं के लिए पूरी दुनियां में एक भी हिन्दू देश नहीं है। अगर भारत के मुसलमान, भारत को पाकिस्तान बना देंगे और ऐसा जरूर करेंगे, क्योंकि कश्मीर के मुसलमानों ने कश्मीर को पाकिस्तान बना दिया है तो देश के अन्य हिस्सों के मुसलमान भी भारत में कश्मीर की तरह ढ़ेर सारे पाकिस्तान बना देंगे और देश के कई हिस्सों में इसकी शुरूआत हो गई है। दिल्ली का शाहीनबाग इसका ज्वलंत उदाहरण है। जेएनयू के पूर्व छात्र नेता उमर खालिद ने घोषित कर रखा है कि पूरे देश में एक लाख शाहीनबाग बनाना है, अभी तो थोड़े ही बने हैं। ऐसे में भारत के हिन्दुओं के सामने आत्महत्या करने के सिवाय क्या विकल्प रह जायेगा? इसलिए पूरी दुनियां में कम से कम एक तो हिन्दू राष्ट्र होना ही चाहिए और भारत देश के हिन्दुओं का मूल देश है। इसलिए हर हालत में भारतीय संविधान में सुधार करके जल्द से जल्द भारत को हिन्दू राष्ट्र अवश्य घोषित कर देना चाहिए। जिससे की इस धरती से हिन्दुओं के वजूद को सदा के लिए खत्म होने से बचाया जा सके। आज पूरे देश में मुसलमानों की दादागिरी इतनी बढ़ गई है कि हिन्दुओं को पूरे दुनियां में बचाये रखने के लिए भारत को हर हालत में बगैर किसी विलंब के हिन्दू राष्ट्र बनाना अनिवार्य हो गया है। भारत के हिन्दुओं को एक बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि सूरज भले ही पूरब के बजाय एक दिन पश्चिम में उग जाये लेकिन भारत के मुसलमान कभी भी हिन्दुओं के साथ

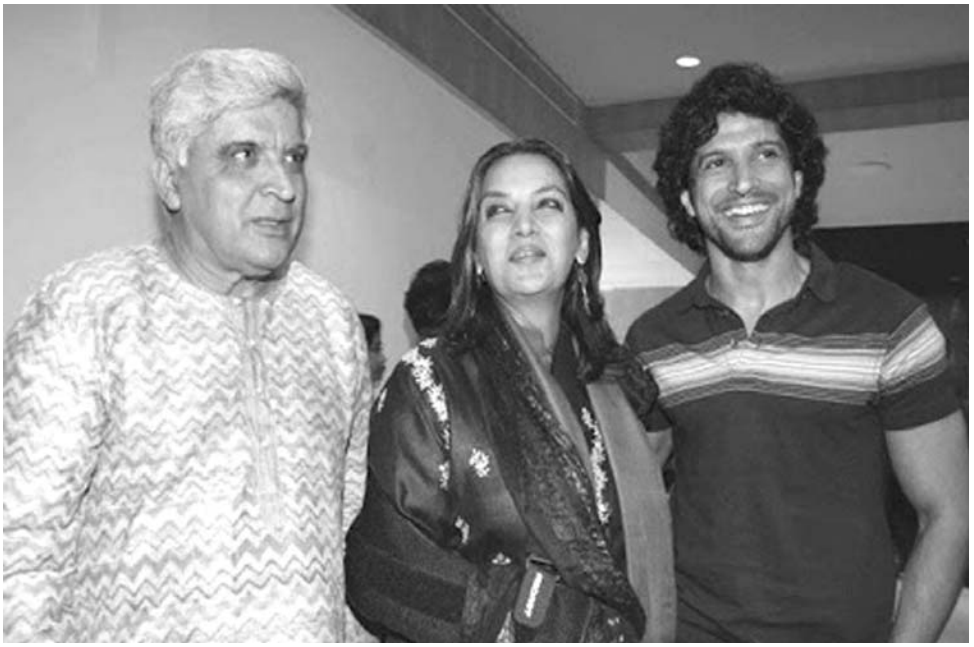

प्रेम-मोहब्बत से नहीं रह सकते हैं। इनमें बड़ों द्वारा उस समय ही बच्चों में हिन्दुओं के प्रति नफरत के बीज बो दिये जाते हैं, जब उनके दूध के दांत भी नहीं टूटे होत हैं। इसका सबूत है पांच-छः साल के बच्चे-बच्चियों द्वारा दिल्ली के शाहीनबाग में लगाये गये नारे। बच्चे तो वही करेंगे जो उनके माँ-बाप सिखायेंगे। इनके धार्मिक स्थल पर धर्मगुरू भी यही सिखाते हैं। जबसे संसद में नागरिकता संसोधन बिल पारित हुआ है, तभी से देश के कोने-कोने में जुम्मे के नवाज के बाद आगजनी, तोड़फोड़ और खून-खराबा की बड़ी घटनायें घटी है। यह सब ऐसे ही नहीं हुआ है। इससे स्पष्ट है कि देश के मस्जिदों में नामाज के दौरान वहां के इमामो के द्वारा नामाजियों को उसकाने के कारण ही हुआ है।

✯ **इन तथाकथित महान हस्तियों को क्या कहा जाना चाहिए? :-** वैसे तो देश में तथाकथित महान हस्तियों की कोई कमी नहीं है, जिन्हें देश के सभी तबकों से भरपूर स्नेह और सम्मान मिला है, जिन्हें देश की जानी-मानी संस्थाओं व संगठनों द्वारा खूब सराहा गया है, खूब सम्मानित किया गया है और जिन्हें देश की केन्द्र तथा राज्य सरकारों ने अलंकृत किया है और अपने सर माथे पर रखा है। मसलन, महान गीतकार, कहानीकार, लेखक और कवी जावेद अख्तर को ही ले लिजिए। इन्हें पद्मश्री, पद्मभूषण, 14 बार फिल्म फेयर अवार्ड, 5 बार बेस्ट लिरिक्स का नेशनल अवार्ड सहित ढ़ेर सारे पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। जावेद साहब को उनकी महान उपलब्धि के लिए बहुत-बहुत बधाई। उनकी शानदार उपलब्धियों के लिए उनको सलाम। लेकिन उन्होंने 2019 के लोकसभा चुनाव में बिहार के बेगूसराय संसदीय क्षेत्र से भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी की टिकट पर लड़ने वाले जेएनयू छात्र संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष तथा देश के टुकड़े-टुकड़े गैंग के सक्रिय सदस्य कन्हैया कुमार के समर्थन में अपनी पत्नी महान अदाकारा शबाना आजमी और कई नामी-गिरामी सिनेमा के कलाकारो के साथ हफ्तों बेगूसराय में सफेद झूठ बोलकर वहां की जनता को गुमराह करते रहे। टेलीविजन पर पूरा देश देखा है कि 13 दिसम्बर 2001 को संसद पर हमले के दोषी अफजल गुरू, जिसे 9 फरवरी 2013 को तिहाड़ जेल में फांसी दे दी गई, उसकी बरसी पर आयोजित समारोह में कन्हैया कुमार और उमर खालिद अपने कुछ साथियों के साथ हांथ उठा-उठाकर किस तरह से नारा लगाया था कि, 'तब तक हम शांत नही बैठेंगे, जब तक कि देश के टुकड़े-टुकड़े नहीं कर देंगे। अफजल गुरू तेरे बलिदान का बदला लेकर रहेंगे'। इस दृश्य को जावेद अख्तर साहब ने भी टीवी पर कई बार देखा है, फिर भी कन्हैया कुमार के पक्ष में झूठा प्रचार कर रहे थे कि वह निर्दोष है। बेगूसराय वालों को नाज है कि कन्हैया कुमार उनका बेटा है। एक नहीं दस जन्म ले लें तो भी जावेद अख्तर साहब सफल नहीं होंगे। बेगूसराय वाले राष्ट्रभक्त, राष्ट्रकवि स्व० रामधारी सिंह दिनकर को ही बेगूसराय का बेटा मानेंगे, देशद्रोही कन्हैया कुमार को तो हरगीज नहीं। बेगूसराय में चुनाव प्रचार के दौरान जावेद अख्तर साहब वहां की जनता को गुमराह करने के मकसद से कहते थे कि मोदी सरकार सिर्फ हिन्दू-मुसलमान और जात-पात के आधार पर देश की जनता को बांटने का काम कर रही है। मोदी सरकार का एक ही मकसद है, देश में सम्प्रदायिक दंगे फैलाना। लेकिन उन्होंने एक भी उदाहरण पेश नहीं किया। वे बेगूसराय की जनता से कहते रहे कि मुझपर विश्वास करे, मैं हरिश्चंद्र हूं। ऐसे मुंह मियां मिठ्ठू से भगवान ही बचाये। ऐसे में जावेद अख्तर साहब को क्या कहेंगे-झूठ के सौदागर या देशद्रोहियों का सरदार? नागरिकता संसोधन बिल के विरोध

में अपनी पत्नी शबाना आजमी और बेटे फरहान अख्तर के साथ आक्रोश में आकर कहने लगे कि अब सिर्फ मुंह से बोलने का समय खत्म हो गया, मैदान में उतरकर और लोगों के साथ मिलकर जुलूस निकालकर प्रदर्शन करना होगा। क्या वे नहीं जानते हैं कि उनकी हरकत भारतीय संविधान के विरूद्ध है। जानते जरूर है, फिर भी भारतीय संविधान का खुल्लम-खुल्ला माखौल उड़ा रहे हैं। जब 19 जनवरी 1990 को कश्मीर में कश्मीरी पंडितों की बहु-बेटियों और पत्नियों के साथ वहां के मुसलमानों ने बलात्कार किया, कश्मीरी पंडितों की हत्या की, उनके घरों में आग लगा दी, उनके मंदिरों को नेस्तानाबूत कर दिया और जमीन-जायदाद को हड़प लिया। कश्मीरी पंडितों पर दिल को दहला देने वाले इस घृणित कृत्य को लेकर वहां जाकर जावेद अख्तर साहब ने धरना क्यों नहीं दिया? अपने पद्मश्री, पद्मभूषण, फिल्मफेयर आदि पुरस्कारों को क्यों नहीं लौटा दिया? ऐसे में जावेद अख्तर साहब को क्या कहेंगे? क्या ये धर्मनिरपेक्ष भारत को मुस्लिम देश बनाने का भरपूर प्रयास नहीं कर रहे हैं? क्या ये गद्दार या देशद्रोही नहीं हैं? क्या यह जिस थाली में खा रहे हैं, उसी में छेद नहीं कर रहे हैं? क्या ये इंसान के रूप में शैतान नहीं हैं? क्या ये भारत के मूल निवासी हिन्दुओं का नामो निशान मिटाने पर तुले हुए नहीं है? जवाब देने की जरूरत नहीं है। देश की जनता इनके घृणित करतूतों को देख रही है। जोड़ों की दर्द की दवा डॉ० ऑर्थो के तेल का प्रचार एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा टीवी और अखबारों में करायी जा रही है, जो देश के टुकड़े-टुकड़े गैंग का प्रबल समर्थक है और जो भारतीय संविधान का खुल्लम-खुल्ला माखौल उड़ा रहा है। हम भारतीयों को इस प्रचार से काफी तकलीफ हो रही है। पता नहीं डॉ० ऑर्थो का तेल कितना लाभकारी है, लेकिन इस दवा के इस्तेमाल को लेकर पूरे देश में इस दवा का बहिष्कार किया जाना नितांत अनिवार्य है।

आज से पांच वर्ष पहले देश के महान कलाकार आमिर खान को भारत में रहने में घुटन महसूस हो रही थी। आमिर खान का इससे बड़ा झूठ और क्या हो सकता है? सच्चाई तो यह है कि भारत की जनता द्वारा उन्हें जितना प्यार और सम्मान मिल रहा है, उतना दुनियां के किसी भी दूसरे देश में नहीं मिलेगा। देश की जनता द्वारा भरपूर प्यार और सम्मान मिलने के बावजूद महान कलाकार सैफ अली खान देश के मौजूदा माहौल से काफी दुखी है। काश! जावेद अख्तर, शबाना आजमी, फरहान अख्तर, आमिर खान और सैफ अली खान पाकिस्तान में होते तो पता चल जाता कि उनके लिए भारत जन्नत है और पाकिस्तान दोजख, जबकि पाकिस्तान मुस्लिम देश है। इसलिए धर्म के आधार पर वहां मुसलमानों को प्रताड़ित करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। क्या ये नामी-गिरामी कलाकार देश के प्रति एहसान फरामोस नहीं तो और क्या हैं? इन्हें इस तरह का बयान देने में क्या जरा भी शर्म नहीं आती। यदि आती ही होती तो ऐसे शर्मनाक बयान देते ही क्यों? अब जरा देश के एक और महान अभिनेता नसरूद्दीन शाह के देशविरोधी शर्मनाक हरकत को भी जान लिजिए। महान अभिनेता अनुपम खेर ने जब अनुच्छेद 370 और 35ए हटाये जाने तथा नागरिकता संसोधन बिल को पारित कराने को लेकर मोदी सरकार की तारीफ की तो नसरूद्दीन शाह तिलमिला गये। उन्होंने अनुपम खेर को यहां तक कह डाला कि खेर के खून में चमचागिरी है और वह एक जोकर की तरह है। उन्होंने देश में देश की सम्प्रदायिकता पर चिंता व्यक्त की। इसके पहले भी वे कई बार ऐसा देशद्रोही वक्तव्य दे चुके हैं। देश ने नसरूद्दीन शाह को नाम, शोहरत और दौलत सबकुछ दिया। उन्होंने अपने धर्म के बाहर शादी की, किसी ने एक शब्द नहीं बोला। उनके भाई सेना में लेफ्टिनेंट जेनरल बने। क्या उनको और उनके परिवार को भरपूर सम्मान नहीं दिया गया है? क्या इस देश के विकास में उनका योगदान हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम से ज्यादा है कि उन्हें भी भारत का राष्ट्रपति बना दिया जाये। देश के विकास में उनका योगदान डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम के मुकाबले जीरो है। फिर भी नसरूद्दीन शाह, मोदी सरकार से नाखूश हैं। कश्मीरी पंडित होने के नाते तो अनुपम खेर ने कश्मीरी मुसलमानों द्वारा उनपर किये गये जुल्मों को झेला है, फिर भी अनुपम खेर ने नसरूद्दीन शाह को कहा कि आप सफल अभिनेता हैं लेकिन कुंठा में जी रहे हैं। इसलिए आप सही और गलत में अंतर नहीं कर पा रहे हैं। मेरे खून में हिन्दुस्तान है। दूसरा प्रमुख उदाहरण देश के सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० इरफान हबीब को ही ले लिजिए। केरल के कन्नूर युनिवर्सिटी में 28 दिसम्बर 2019 को भारतीय इतिहास कांग्रेस के 80वें अधिवेशन को अवसर पर केरल के राज्यपाल आसिफ मोहम्मद खान के पहुंचते ही केरल कांग्रेस स्टूडेंड्स युनियन, युथ कांग्रेस और मुस्लिम स्टूडेड्स फ्रंट के कुछ समर्थकों द्वारा सीएए के विरोध में उन्हें काले झंडे दिखाने लगे। प्रदर्शन करने वाले छात्र के हांथों में सीएए विरोधी तख्तियां लिए हुए थे। ऐसे में राज्यापाल को अपने संबोधन में बोलने पर मजबूर होना पड़ा कि सीएए का विरोध असंवैधानिक है, क्योंकि राज्यपाल की जिम्मेदारी होती है कि वह भारतीय संविधान के हिफाजत में सहयोग दे। और तो और मंच पर उपस्थित सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० इरफान भी गालियां देते हुए राज्यपाल पर आक्रमण करने हेतु उनके बिल्कुल समीप पहुंच गये थे। यदि राज्यपाल के बगल में खड़े उनके सुरक्षाकर्मी ने उन्हें रोक लिया, वरना इरफान हबीब राज्यपाल को कुछ भी कर देते-धक्का देते गिरा देते या थप्पड़ मार देते। ऐसे व्यक्ति को तो तत्काल जेल में डाल दिया जाना चाहिए था। ऐसा इसलिए कि किसी भी व्यक्ति को इंसान पहले होना चाहिए, इतिहासकार बाद में। अपने घृणित हरकत से इरफान हबीब ने देश के समस्त इतिहासकारों को शर्मसार कर दिया। आश्चर्य तो तब और अधिक हुआ, जब इरफान हबीब के समर्थन में कुछ सिरफिरे इतिहासकार 'राज्यपाल शर्म करो' के नारे लगाने लगे। जनता का द्वारा दिये गये टैक्स के पैसे पर अधिवेशन में भाग लेने आये ये कुछ इतिहासकार बहुत देर तक दहशतगर्दी करते रहे। क्या यही दहशतगर्द इतिहासकार छात्रों का करीयर बनायेंगे? भले ही यह दहशतगर्द इतिहासकार छात्रों का करीयर बनाये या नहीं बनाये, लेकिन छात्रों का करीयर बर्बाद जरूर कर देंगे।

देश की सुविख्यात लेखिका और समाजिक कार्यकर्ता अरूंधती राय को ले लिजिए। ये मुस्लिम तुष्टीकरण में विश्वास करती हैं, क्योंकि ऐसा करने से प्रसिद्धी मिलती है। यहां पर इस बात का उल्लेख करना जरूरी है कि राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) के लिए 2010 में डाटा एकत्रित किया

गया था। यह रूटीन कार्य है, जिसके द्वारा प्रत्येक दस साल के अंतराल पर देश की जनसंख्या की गिनती की जाती है। इसकी शुरूआत 2010 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार में की गई थी। नागरिकता कानून 1955 का, 2003 में संसोधित कर एनपीआर के प्रावधान जोड़े गये। इसका मकसद देश के हर व्यक्ति की पहचान से जुड़ी जानकारियों को इकट्ठा करना है, जो दुनियां के हर देश के लिए अनिवार्य है। एनपीआर के तहत देश के हर व्यक्ति का नाम, परिवार के मुखिया से संबंध, माता-पिता का नाम, यदि विवाहित है तो पत्नी या पति का नाम, लिंग, जन्मतिथि, जन्म स्थान, मौजूदा पता, राष्ट्रीयता, मौजूदा पते पर रहने की अवधि, स्थायी आवासीय पता, व्यवसाय और शैक्षिणक योग्यता की जानकारी इकट्ठी की जाती है। ऐसा किया जाना ना सिर्फ संवैधानिक है, बल्कि देशहीत में अनिवार्य है। बावजूद इसके अरूंधती राय ने लोगों से अपील किया कि एनपीआर से जुड़ा कोई सरकारी मुलाजिम आपसे नाम पूछे तो रंगा-बिल्ला बताइएगा और पता की जगह 7 रेसकोर्स लिखवाइयेगा। ये देश की जनता को, देश के संविधान का माखौल उड़ाने के लिए भड़का रही हैं। भारतीय संविधान विरोधी ऐसा व्यक्ति देशद्रोही है, गद्दार है।

ऐसे ही एक व्यक्ति हैं स्वराज इंडिया के अध्यक्ष योगेन्द्र यादव। जो नागरिकता संसोधन बिल के विरोध में देशभर में अफवाह फैलाकर हर तरह से नागरिकता संसोधन बिल का विरोध करने के लिए देश की जनता को भड़का रहे हैं। अगर ये अपने आप को इतना काबिल समझते हैं तो यह साबित करके दिखा दें कि नागरिकता संसोधन बिल असंवैधानिक है, अन्यथा खुद कहे कि मैं जो कर रहा हूं वह असंवैधानिक है।

✯ **मुसलमानों के चमचे हैं भारतीय नेतागण :-** अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुस्लिम समुदाय पर मेहरबान है मोदी सरकार। मोदी सरकार ने पूरे देश में 2 करोड़ गरीब परिवारों को गरीब दिया है, जिसमें 31% मुसलमान है, 8 करोड़ महिलाओं को प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत मुफ्त में गैस कनेक्शन दिया गया है, जिसमें 37% मुसलमान समुदाय के गरीब परिवार है। गैस कनेक्शन में चूल्हा के साथ गैस सिलिण्डर और रेगुलेटर भी मुफ्त दिये गये हैं। 10 करोड़ गरीब परिवारों को शौचालय बनवाने के लिए पैसे दिये गये हैं, जिनमें 34% गरीब मुसलमान परिवार है। 22 करोड़ किसानों को किसान सम्मान निधि के तहत छः हजार रूपये प्रति किसान प्रति वर्ष के हिसाब से तीन किश्तों में दिया जा रहा है, जिसका दो सौ रूपये के पहले किश्त का भुगतान किया जा चुका है। इससे 33% से ज्यादा गरीब अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुसलमान किसानों को फायदा पहुंच रहा है। 21 करोड़ लोगों को मुद्रा योजना के तहत आसान शर्तों पर कर्ज दिये गये हैं। जिससे 36% अल्पसंख्यक विशेषकर मुसलमानों को लाभ पहुंच रहा है। 6 लाख गांवों में बिजली पहुंचायी गयी है, जिसमें 39% से ज्यादा अल्पसंख्यक, विशेषकर मुस्लिम गांव है। 2014 से अभी तक गरीब नवाज रोजगार योजना, नई मंजिल, उस्ताद आदि योजनाओं के तहत अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुस्लिम युवाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर मुहैया कराये गये हैं। इनमें लगभग 50% मुस्लिम लड़कियां शामिल हैं। देश के 1300 प्रखण्डों में युद्धस्तर पर अल्पसंख्यक, विशेषकर मुस्लिम लड़कियों को रोजगार परख विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं। प्रशिक्षण की समाप्ती पर आर्थिक सहायता तथा देश-विदेश में बाजार भी मुहैया कराया गया है। पिछले पांच वर्षों के दौरान 33 डिग्री कॉलेज, 1393 स्कूल भवन, 40201 अतिरिक्त क्लास रूम, 574 हॉस्टल, 81 आईटीआई, 50 पोलटेक्निक, 123 आवासीय स्कूलों का निर्माण अल्पसंख्यक बहुल, विशेषकर मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में कराया गया है। 39586 आंगनबाड़ी केन्द्र, 398 सद्भावना मंडप, 570 मार्केट शेड, 104 कॉमन सर्विस सेंटर आदि सुविधाओं का निर्माण अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्र, विशेषकर मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में कराया गया है। बावजूद इसके मुस्लिम समुदाय को मोदी सरकार से शिकायत है कि मोदी सरकार को उनके लिए जितना काम कराना चाहिए, उसके मुकाबले नहीं के बराबर की है और कर रही है। इतने बड़े पैमाने पर मोदी सरकार हिन्दुओं का हकमारी कर रही है, फिर भी मुस्लिम समुदाय, मोदी सरकार से खफा है। इससे स्पष्ट है कि मोदी सरकार अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुस्लिम समुदाय के लिए कितना भी करेगी, वे मोदी सरकार से नाराज ही रहेंगे। नागरिकता संसोधन कानून से भारतीय मुसलमानों को कुछ लेना-देना नहीं है। अर्थात् वे भारत के नागरिक हैं और भारतीय नागरिक ही बने रहेंगे। इस कानून से सिर्फ पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में बुरी तरह से प्रताड़ित कर वहां से खदेड़कर भगा दिये गये हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाई समुदाय के लोगों को भारत की नागरिकता मिल जायेगी। इसकी घोषणा संसद में गृह मंत्री अमित शाह ने की है और संसद में प्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री बराबर कह रहे हैं, नागरिकता संसोधन बिल ऐसा बिल है। फिर भी मुस्लिम समुदाय पूरे देश में रोड़ा-पत्थर और पेट्रोल बम के साथ आगजनी और तोड़फोड़ को अंजाम दे रहा है, विश्वविद्यालयों तथा अन्य शिक्षण संस्थानों में छात्रों के बीच जाकर वे अफवाह फैलाकर उनको भड़का रहे हैं तथा उनसे भी तोड़फोड़ और आगजनी द्वारा सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के लिए उकसा रहे हैं। इतना ही नहीं उनसे पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे भी लगवा रहे हैं। और तो और 30 वर्ष पहले कश्मीरी पंडितों को धर्म के आधार पर उत्पीड़ित कर खदेड़ दिया गया, जो अपने ही घर से विस्थापित होकर दर-दर की ठोकरे खा रहे हैं। आखिर देश का मुस्लिम समुदाय क्या चाह रहा है? क्या देश में हिन्दुओं का वजूद खत्म कर दिया जाये? क्या हिन्दू समुदाय जानवर से भी बद्तर समुदाय है? इसके लिए मोदी सरकार पर संविधान के विरूद्ध कार्य को अमलीजामा पहनाने के लिए मुस्लिम समुदाय नाजायज

तरीके से दबाब बना रहा है। क्या मुस्लिम समुदाय, हिन्दू-मुस्लिम भाईचारा को समाप्त करके ही दम लेगी? क्या देश में गंगा-यमुनी तहजीब को मिटा देगी? जो भी राजनीतिक पार्टियां, चाहे कांग्रेस, टीएमसी, आप, सपा, बसपा, राजद, सीपीआई, सीपीएम आदि कोई भी हो, अपने नापाक इरादे को अंजाम तक पहुंचाने में सफल नहीं होगी। देश की जनता टीवी पर सब देख रही है और अखबारों में भी पढ़ रही है। इसका अंजाम उपरोक्त सभी पार्टियों को आगामी हर चुनाव में, हर हालत में भुगतना ही पड़ेगा। देशभर में तोड़फोड़ और आगजनी कराने का मजा इन पार्टियों को अच्छी तरह से जनता चखा देगी। हाल ही में अदनान सामी को भारत की नागरिकता मिलने के पहले तक पाकिस्तानी मुसलमान थे, अब भारतीय मुसलमान बन गये हैं। उनके पिता पाकिस्तानी वायुसेना के काबिल अफसर थे। उन्होंने 1965 की लड़ाई में भारतीय सेना को बहुत अधिक नुकसान पहुंचाया था, जिसके लिए पाकिस्तानी सरकार ने उन्हें पुरस्कृत भी किया था। अदनान सामी के परिवार को पाकिस्तानी वायुसेना का बड़ा और काबिल अफसर रहने के कारण उन्हें और उनके परिवार को पाकिस्तान में हर तरह की सुविधाएं प्राप्त है। फिर ऐसे में मोदी सरकार ने अदनान सामी को भारतीय नागरिकता क्यों प्रदान की? यह मोदी सरकार द्वारा मुसलमानों की चमचागिरी नहीं तो और क्या है? इतना ही नहीं, मोदी सरकार ने अदानान सामी को पद्मश्री पुरस्कार से नवाजने की घोषणा कर दी, जबकि अपने देश में एक से बढ़कर एक ऐसे हिन्दू गीतकार, गायक और संगीतकार हैं। जिनके सामने अदनान सामी काफी बौने हैं और जिन्हें पद्म पुरस्कार नहीं मिला हुआ है। मोदी सरकार ने तो मुसलमानों की चमचागिरी की सभी हदे पार कर दी। ऐसा भाजपा में मौजूद रघुवर दास और राजीव प्रताप रूढ़ी जैसे चाटूकार और गैर जिम्मेदार नेताओं की मौजूदगी के चलते हो रहा है। इसलिए पार्टी को बचाने के लिए तथा देशहीत को ध्यान में रखकर मोदी और शाह को ऐसे नेताओं को पार्टी से बाहर का रास्ता अविलंब दिखा देना चाहिए।

हर पार्टी के नेता मुसलमानों की चमचागिरी में लगे हुए हैं और इसे अपना सौभाग्य समझते हैं। कांग्रेस पार्टी, रॉष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, आम आदमी पार्टी, तृणमूल कांग्रेस पार्टी, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, जनकान्ति पार्टी, भीम पार्टी, इत्यादि। सभी पार्टियों के शीर्ष नेता मुसलमानों की जी हुजूरी में कोई कमी नहीं छोड़ रहे हैं, सिर्फ कुछ हद तक भारतीय जनता पार्टी को छोड़कर। मसलन, जब समाजवादी पार्टी के मुस्लिम नेता आजम खॉ का भैंस खो गया था, तो तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव का पूरा का पूरा सरकारी अमला, सिपाही से लेकर डीजीपी तक राज्य के सभी कामकाज को छोड़कर भैंस की खोज में जुट गये थे और चौबिस घंटे के अंदर भैंस को खोज निकाला। मुस्लिम वोट बैंक के खातिर ही तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने हिन्दू प्रदर्शनकारियों को गोलियों से भुनवा दिया था। सिवान के शहाबुद्दीन को चुनाव का पर्चा भरवाने के लिए स्वयं लालू प्रसाद यादव उनकी खातीरदारी में लगे रहते थे। जेल में रहने के कारण शहाबुद्दीन की पत्नी हीना शहाबुद्दीन का पर्चा भरते समय उनके साथ कार्यालय में मौजूद नहीं रहे, लेकिन उस कमी की पूर्ति लालू प्रसाद यादव के सुपुत्र तेजस्वी यादव ने पूरा कर दिया। हिन्दू ब्राह्मण होते हुए भी पश्चिमी बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी हिन्दुओं के महापर्व रक्षाबंधन के अवसर पर कोलकाता के टीपू सुल्तान मस्जिद के इमाम को हर साल राखी बांधती हैं। इस मामले में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी किसी से पीछे नहीं हैं। बिहार में हर साल नीतीश सरकार मुस्लिम विधवा महिलाओं को पांच हजार करोड़ रूपये की आर्थिक मदद देती है तो हिन्दू विधवा महिलाओं को क्यों नहीं देती? क्या विधवा हिन्दू महिलाएं अपने ही मूल देश भारत में हिन्दू होने का सजा भुगत रही हैं। एक तरह से राजनीतिक पार्टियों में मुसलमानों की खिदमतगिरी करने की होड़ मची हुई है। भारतीय मुसलमान और घुसपैठिये मुसलमान निश्चिंत हैं कि वे देश में कुछ भी जायज-नजायज करे, भारतीय राजनीतिक पार्टियों का समर्थन उन्हें मिलना ही मिलना है। यदि भारतीय मुसलमान सुप्रीम कोर्ट के फैसले का विरोध करे या संसद द्वारा पारित कानून का विरोध करे, भारतीय राजनीतिक पार्टियां उनके साथ है। क्योंकि इन नेताओं का एक ही उद्देश्य है कि चाहे जैसे भी हो, उन्हें चुनाव में मुसलमानों का वोट मिलता रहे। यही कारण है कि भारत आज अघोषित मुस्लिम देश बन गया है। भारतीय राजनीतिक पार्टियों और उनके शीर्ष नेताओं का यही हाल रहा तो निकट भविष्य में शीघ्र ही पूरे देश के हिन्दुओं का वही हाल होगा, जो कश्मीर के कश्मीरी पंडितों का हुआ है। पूरे देश में हिन्दुओं पर दिल को दहला देने वाला अमानवीय अत्याचार होने लगेगा, जिसके चलते उन्हें आत्महत्या करने के लिए मजबूर कर दिया जायेगा और भारत देश भी पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान की तरह हिन्दू, सिख, बौद्ध और जैनमुक्त देश बन जायेगा। हिन्दुओं के एकमात्र मूल देश भारत से भी उनका नामोनिशां मिट जायेगा और भारत दुनियां का 59वां मुस्लिम देश बन जायेगा। लेकिन, खाड़ी के मुस्लिम देशों की तरह भारत का विकास नहीं हो पायेगा, क्योंकि खाड़ी के मुस्लिम देशों के मुसलमानों और भारत के मुसलमानों की सोच में आकाश-पाताल का अंतर है। अंततः भारत भी पाकिस्तान की तरह कटोरा लेकर दुनियां में भीक्षाटन करने लगेगा।

✯ **क्यों जरूरी है भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाया जाना? :-** भारत में हिन्दुओं पर हो रहे भारतीय मुसलमानों के द्वारा दिल दहला देने वाले उत्पीड़न से बचाने का सिर्फ और सिर्फ एकमात्र उपाय बचा है, भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाना। देश के हिन्दुओं को सारे आपसी मतभेद भुलाकर एकदम से एकजुट होकर भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए बगैर किसी विलंब के युद्धस्तर पर जुट जाना चाहिए। वरना पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान की तरह भारत को इस्लामिक देश बनाने के मुसलमानों के जी-जान से आजादी के बाद से ही जुटे हुए हैं।

✯ **देश को हिन्दू राष्ट्र बनाने के उपाय :-** हिन्दू राष्ट्र बनाने का प्रस्ताव लेकर देश के प्रत्येक सांसद और राज्यों के प्रत्येक विधायक के पास जाकर उनके हांथों में इस प्रस्ताव को देकर उनका हस्ताक्षरयुक्त प्राप्ति प्राप्त कर ले, जिससे की कल होकर कोई सांसद और विधायक को यह कहने का मौका नहीं मिले कि आपके प्रस्ताव को लेकर उन्हें सूचित नहीं किया गया है। प्रस्ताव के द्वारा उनसे निवेदन करे कि वे लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा और विधान परिषद में भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किये जाने का बिल पास करावें। प्रत्येक सांसद और विधायक को साफ-साफ कह दें कि लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा और विधान परिषद में भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने का न सिर्फ बिल पेश करे बल्कि उसे हर हालत में पारित भी करावें। इसके लिए लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा और विधान परिषद का विशेष सत्र बुलाना पड़े तो सांसद और विधायक बुलावें, वरना भूल जाये कि हिन्दुओं को एक भी वोट उन्हें मिलेगा। ऐसा बगैर किसी तरह की अव्यवस्था फैलाये, शांतिपूर्वक संविधान का पूरा पालन करते हुए किया जाना बिल्कुल संभव है। सिर्फ तख्ती लटका दे, जिसपर लिखा हो कि 'भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करो'। इसके लिए न नारा लगावें, न धरना-प्रदर्शन करे और न कोई रैली निकाले। अर्थात् किसी भी तरह से समाज के किसी भी वर्ग के लिए कोई व्यवधान पैदा न करे। यह सब बिल्कुल शांतिपूर्वक संविधान और इंसानियत को ध्यान में रखकर करे। देश में व्यवधान पैदा न करे, जिससे देश की एक भी जनता को किसी भी तरह के मुश्किल का सामना करना पड़े। ●

Ramayana Express to ply in all new look by March end: Indian Railways

Indian Railway Catering and Tourism Corporation (IRCTC) is set to launch the Ramayana Express, a tourist train which covers four important destinations associated with the life of Lord Ram, in all new look and high-tech facilities by March end this year."The train will be full of modern amenities", Railway Board Chairman Vinod Kumar Yadav said on Saturday. The tourist train, Ramayana Express, was launched in November 2018 giving a major boost to the Indian pilgrim circuit. The train has an overall capacity of 800 passengers and the tickets are priced at Rs 15,120 per person.

"The train with all new rack, will have both air-conditioned and non-air-conditioned coaches so that people of every income group can get an opportunity to travel. Pictures of the stories of Ramayana will be carved out of the rack of this vehicle. The entire atmosphere inside will also be coloured with devotion. The tunes of Bhajan etc. will continue to resonate", the Chairman said. Mr Yadav said that soon the dates and starting locations of the entire year of operation of Ramayana Express will be announced. "This time it will be started from different places of the country so that the people can get the opportunity to travel", he said. Speaking about the package, he said that a final decision has not yet been made about the rent and will be announced soon.

In response to a question, he indicated in future an effort will also be made to connect Ramayana Express to Janakpur in Nepal.Notably the Indian Railways in collaboration with the Government of Nepal has laid a railway line from Jayanagar to Janakpur. It is expected to be inaugurated soon. The train will connect Rameswaram, Nashik, Chitrakoot and Ayodhya.

K'taka man breaks record of Usain bolt's 100 mtr sprint during buffalo racing

In a major surprise Karanataka native Srinivasa Gowda from Mudbidri, Mangaluru ran 142.5 meters in 13.62 seconds at a buffalo race organised in (Kambala) in a paddy field on Feb1 in Kadri. Later he was being compared to the fastest man on earth Usain bolt-on social media as he crossed 100 metres in just 9.55 seconds. It is to be noted that the record of Usain bolt to complete fastest 100-metres sprint is 9.58 seconds. However Srinivasa is quite modest on the comparison with Speedstar Usain Bolt He says, "Netizens may be comparing me with Usain Bolt. But He is a world-class athlete, I am only running in a slushy paddy field". Twitterati also claims if Hyperlocal talents like these are trained India's performance at Olympics and other sports events will be improved drastically.

झारखण्ड मंत्रिमंडल का हुआ विस्तार

मिथिलेश, चम्पई,जोबा, जगरनाथ, बन्ना व बादल ने ईश्वर की तो हाजी हुसैन ने अल्लाह के नाम की ली शपथ

संथाल से चार तो पलामू व दक्षिणी छोटानागपुर से एक एक विधयक को मिली जगह

● अमित कुमार

मैराथन दौड़ के 29 दिन बाद आखिर 28 जनवरी को झारखंड में हेमन्त मंत्रिमंडल का विस्तार करते हुए अपने विरोधियों से यह मौका छीन लिया जो झारखण्ड की भी तुलना महाराष्ट्र से करते हुए मंत्रिमंडल के विस्तार में काँग्रेस का पेंच फंसा होने का दावा करते फिर रहें थे। इस प्रकार से मुख्यमंत्री सहित 12 मंत्रियों वाले झारखण्ड मंत्रिमंडल में कुल 11 सदस्य हो गये।अपने मंत्रिमंडल के विस्तार में मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने झारखण्ड के प्रमंडलों का ठीक उसी तरह ख्याल रखा जिस तरह से सम्पन्न चुनाव में मतदाताओं ने इनका तथा इनके सहयोगी दलों का ख्याल रखा है। 18 में से 13 सीटें झामुमो के झोली में डालने वाले संथाल परगना तथा 14 में से 13 सीटें झामुमो गठबंधन को देने वाले कोल्हान को 3-3 सीटों की हिस्सेदारी मिली है। हालांकि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का भी इसी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के कारण संथाल का प्रतिनिधित्व अधिक माना जा सकता है। 21 में से 9 सीटें देने वाले उत्तरी छोटानागपुर को 2 मंत्री तथा 15 में से 8 तथा 9 में से 4 सीटें झामुमो गठबंधन को देने वाले दक्षिणी छोटानागपुर तथा पलामू प्रमंडल को 1-1 मंत्री की हिस्सेदारी देकर हेमन्त सोरेन ने जनता को जनाधार आधारित राजनीत की राजनीति का संदेश देने का भरपूर प्रयास किया है। हेमन्त सोरेन ने अपने मंत्रिमंडल के विस्तार में जनाधार के साथ-साथ जातीय समीकरण और सहयोगी दलों का भी ख्याल रखा है।इनके मंत्रिमंडल में स्नातक से लेकर दसवीं पास विधायक तक को जगह मिली है वहीं जन-जंगल और जमीन के संघर्ष के बलबूते अपनी पहचान बनाने से लेकर तारा शाहदेव जैसे विवादित घटना क्रम से सम्बन्ध रखने वाले कद्दावर नेताओं को भी इस मंत्रिमंडल में जगह मिली है।

झामुमो के 30 तथा काँग्रेस के 16 विधायकों में से मात्र 12 लोगों का चयन वास्तव में एक कठिन कार्य था। कांग्रेस पार्टी जहाँ अपने भविष्य को साधने के लिये पुराने नये हर एक चेहरों पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रही थी वहीं पुरानी सरकार में बनें पुराने नेताओं के मंत्रित्व

का हुए नफा-नुकशान का भी भरपूर आकंलन कर किया। शायद यही कारण रहा कि कांग्रेस ने इस बार अपने पार्टी के कई पुराने चेहरे को दरकिनार कर नये चेहरों को मौका दिया। काँग्रेस पार्टी के लिए उस समय और निर्णय लेना कठिन साबित हो रहा था। जब काँग्रेस के वरिष्ठ व जेल की सजा काट रहे योगेंद्र प्रसाद की बेटी तेज तर्रार नेत्री अम्बा प्रसाद के योग्यता के कारण इनका नाम मानव संसाधन मंत्री के रूप में सोशल मीडिया पर पुर जोर उछाला जा रहा था। जितनी मुश्किल घड़ी काँग्रेस के लिए थी शायद उतनी मश्किलें झामुमो के लिए नही था। क्योंकि यहाँ उमीदें और ख्वाइशें शिबु सोरेन और हेमन्त सोरेन के दहलीज पर आते-आते ही समाप्त हो जाती है। बावजूद झामुमो ने भी मंत्रियों की चयन में,चेहरों और अनुभवों को प्राथमिकता देते हुए परम्परागत नामों को तबज्जो नही दे नये चेहरों को भी स्थान दिया है।स्टीफन मरांडी, नलिन सोरेन, मथुरा महतो को दरकिनार कर झामुमो ने मिथिलेश ठाकुर और जगरनाथ महतो सरीखे लोगों को जगह दिया।वहीं कांग्रेस ने भी बेरमो के अपने कद्दावर विधायक राजेन्द्र

दसवीं पास जगरनाथ सवारेंगे झारखण्ड की शिक्षा व्यवस्था

रघुवरदास ने अपनी सरकार में झारखंड की शैक्षणिक व्यवस्था को संवारने की जिम्मेवारी वाणिज्य विषय मे मास्टर डिग्री प्राप्त व शिक्षक प्रशिक्षित नीरा यादव के कंधों पर दी थी। जिसका परिणाम झारखंड के शैक्षणिक व्यवस्था में देखने को मिला। सर्वशिक्षा अभियान के कारण कुकुरमुते की तरह गाँव-गाँव मे उग आये संसाधन विहीन विद्यालय गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था को मुँह चिढ़ रहे थे। जिसे समेटते हुए नजदीक के विद्यालयों में विलय कर उन विद्यालयों को संसाधन युक्त बनाने का भरपूर प्रयास किया। यही नही राष्ट्रपति शासन से ही चली आ रही प्राथमिक शिक्षकों की नियुक्ती में बाहरी-भीतरी की पेंच फंसा कर अपने पिछले कार्यकाल में शिक्षकों की नियुक्ति नही कर सकने वाले हेमन्त सरकार की गुथियों को भी सुलझा कर नीरा यादव ने झारखंड के विद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति के अलावे उच्च तथा उच्चतर विद्यालयों में भी शिक्षकों की नियुक्ति, बच्चों को बैठने हेतु बेंच-डेस्क तथा अन्य भौतिक तथा मानव संसाधनों की प्रतिपूर्ति कर यहाँ की शैक्षणिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने का भरपूर प्रयास किया।जिसका प्रतिफल है कि झारखण्ड में आज विद्यालय अब बच्चों से गुलजार मिलते हैं।

वहीं हेमंत सोरेन ने अपनी सरकार में राज्य की शैक्षणिक व्यवस्था को दुरुस्त करने और राज्य की प्रतिभाओं को सँवारने की जिम्मेवारी दसवीं पास जगरनाथ महतो को दी है। नवनियुक्त विधानसभा में इनके तथा इनके सहयोगी दलों के पास एक से बढ़ कर एक योग्य विधायक थे। काँग्रेस की नई सही लेकिन तेज-तर्रार अम्बा प्रसाद इसके उदाहरण हैं। लेकिन ऐसे लोगों को दरकिनार कर दसवीं पास को शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेवारी राज्य के शिक्षाविदों को रास नही आ रही है। हालांकि जगरनाथ महतो को शिक्षा की जिम्मेवारी देने से राज्य के पारा शिक्षक खुश हैं। पारा शिक्षकों का मानना है कि अपने संघर्ष के बूते राजनीति में स्थान बनाने वाले जगरनाथ ही हमारी संघर्षों को समझ सकेंगे। लगातार डुमरी से चार-चार बार विधायक रहे जगरनाथ महतो अपने अनोखे क्रियाकलाप व संघर्ष के लिए जाने जाते हैं।इनकी राजनैतिक लोकप्रयिता को इसी से समझा जा सकता है कि अपने कार्यकर्ताओं के यहाँ श्राद्धकर्म में पूड़ी छानने से लेकर अपने समर्थकों के समर्थन में रेलवे स्टेशनों पर चिनिया बादाम तक बेच कर विरोध दर्ज कराने का तरीका इनके राजनीति की पूँजी है।यही कारण है कि जगरनाथ अपने क्षेत्र में लोकप्रिय हैं। अब देखना यह है कि राज्य के शिक्षा मंत्री के रूप में जगरनाथ झारखण्ड के जनता के दिल मे कितना जगह बना पाते हैं। राज्य के पारा शिक्षकों को सरकारी शिक्षकों की तरह वेतनमान देना, सरकारी शिक्षकों को केंद्रीय विद्यालयों की तरह उत्क्रमित वेतनमान देना, शिक्षकों को पुरानी पेंशन देना, उत्क्रमित मध्य विद्यालयों विषयवार शिक्षकों की नियुक्ति, राज्य के विद्यालयों को चाहरदीवारी उपलब्ध कराना, पुस्तकालयों और प्रयोगशालायों को संसाधन युक्त करना इनके लिए चुनौतीभरा कार्य होगा।

सिंह जैसे नेताओं को दरकिनार कर परम्परागत परम्परा को तोड़ने का प्रयास कर कार्यकर्ताओं को एक अच्छा सन्देश दिया है। बावजूद दोनों दलों ने पूर्व में भी मंत्री रहे जोबा मांझी, चम्पई सोरेन, हाजी हुसैन को मंत्रिमंडल में स्थान दिया है। मंत्रियों के शपथ समारोह में मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के अलावे पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, काँग्रेस के प्रदेश प्रभारी आरपीएन सिंह, मंत्री रामेश्वर उराँव, आलमगीर आलम, सत्यानन्द भोक्ता के अलावा कई विधायक और पदाधिकारी मौजूद थे।राजभवन के खचाखच भरे बिरसा मण्डप में राजपाल द्रौपदी मुर्मू ने मंत्रियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। जहाँ चम्पई सोरेन, जोबा मांझी, जगरनाथ महतो, बन्ना गुप्ता, बादल पत्रलेख और मिथिलेश ठाकुर ने ईश्वर की नाम से पद और गोपनीयता की शपथ ली वहीं हाजी हुसैन अंसारी ने अल्लाह के नाम से पद और गोपनीयता की शपथ लिया। गौरतलब हो कि हेमंत सोरेन के मंत्रिमंडल में सबसे ज्यादा पांच मंत्री झामुमो कोटे से हैं जबकि कांग्रेस से चार और राजद से एक को मंत्री पद मिला है। इस लिहाज से गठबंधन की सरकार का खाका तैयार हुआ कि सभी समीकरण के साथ-साथ दलों ने जनाधार और क्षेत्रीय संतुलन का हिसाब रखा है। हालांकि राजद के पास मात्र एक विधायक होने की वजह से उसे मंत्री पद दिया गया, लेकिन झामुमो के 30 और कांग्रेस के 16 विधायकों में मंत्री के लिए चयन एक कठिन टास्क था। इसके लिए लगातार मशक्कत होती रही। कांग्रेस आलाकमान ने भविष्य की राजनीति को देखते हुए मंत्रियों के नाम तय किए तो झारखंड मुक्ति मोर्चा ने अपेक्षाकृत अनुभवी के साथ-साथ नए चेहरों को मौका दिया। दोनों दलों ने अपने संगठन के आधार वोट का खास ख्याल रखा है। सनद् रहे कि झारखंड मुक्ति मोर्चा ने मंत्रिमंडल के गठन में कुछ परंपरागत नाम को इस दफा दरकिनार किया है। इसकी वजह भी थी। संताल परगना स

ज्यादा झामुमो ने कोल्हान पर फोकस किया। स्टीफन मरांडी, नलिन सोरेन, मथुरा प्रसाद महतो को मंत्रिमंडल में जगह नहीं मिली जबकि चंपई सोरेन स्थान पाने में कामयाब रहे। मथुरा प्रसाद महतो के स्थान पर झामुमो ने जगरनाथ महतो को आजमाया। मिथिलेश ठाकुर को मंत्री पद देकर झामुमो ने संकेत दिया है कि एक दायरे से बाहर संगठन विस्तार को इच्छुक है। हाजी हुसैन अंसारी को मुस्लिम चेहरे के नाम पर मौका मिला। उन्हें किसी प्रकार की चुनौती नहीं थी। वही कांग्रेस कोटे से मंगलवार को दो विधायकों बन्ना गुप्ता और बादल ने मंत्री पद की शपथ ली। इससे वैसे विधायकों को झटका लगा, जो लगातार लाबिंग कर रहे थे। कांग्रेस की ओर से दो मंत्री रामेश्वर उरांव और आलमगीर आलम पहले ही मंत्रिमंडल में शामिल हैं। जनजातीय और अल्पसंख्यक समुदाय के अलावा कांग्रेस ने पिछड़े और सामान्य वर्ग से मंत्री देकर सबको साधने की कोशिश की है। मंत्रिमंडल बंटवारे में सभी प्रमंडलों को प्रतिनिधित्व देने में हेमंत सोरेन सफल रहे हैं। सीएम के साथ-साथ चार मंत्री संथाल परगना क्षेत्र के हो गए हैं तो तीन

रघुवर मंत्रिमंडल में रहे 5 मंत्रियों की सम्पत्ति में हुआ कई गुना वृद्धि

नीलकंठ मुंडा

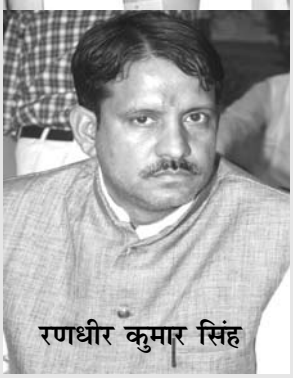
रणधीर कुमार सिंह

लुईस मरांडी

अमर कुमार बाउरी

डॉ० नीरा यादव

अपने हरेक सभाओं में अपनी सरकार की छवि को लेकर दहाड़ मारने वाले रघुवर दास के मंत्रियों की पोल सत्ता जाते ही अब धीरे-धीरे खुलने लगी है। इनके सरकार के पांच मंत्रियों के खिलाफ पंकज यादव नामक युवक के तरफ से, अधिवक्ता राजीव कुमार ने, एक जनहित याचिका दायर कर 5 वर्षो में आय से अधिक सम्पति अर्जित करने का आरोप लगाया है। याचिका कर्ता ने अपने आवेदन में रघुवर सरकार के पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री निलकंठ सिंह मुंडा, पूर्व खेल मंत्री अमर बाउरी, पूर्व कृषि मंत्री रणधीर सिंह, पूर्व शिक्षा मंत्री नीरा यादव तथा पूर्व कल्याण मंत्री लुईस मरांडी द्वारा 2014 और 2019 के विधानसभा चुनावों में नामांकन के वक्त दीये गए शपथ पत्र को आधार बना आरोप लगाया है कि पांच वर्षों के अपने कार्यकाल में इन लोगों ने 200 से 1000 गुना तक सम्पति अर्जित की है। इनके अलावे कृषि सचिव, शिक्षा सचिव, खेल सचिव, कल्याण सचिव पर्यटन सचिव सहित ग्रामीण विकास विभाग के सचिवों सहित कई अन्य को भी प्रतिवादी बनाते हुए इसकी जाँच भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो से कराने की मांग की है। यही नही रघुवर दास भले ही स्थापना दिवस से लेकर अपनी हरेक सभाओं में अपनी सरकार की छवि को लेकर ढिंढोरा पीटते फिरते रहें हो लेकिन अपने सभाओं में यह कभी नही बताया कि इनके मंत्रियों के के सम्पतियों में प्रत्येक वर्ष लगातार इतनी तीव्र गति से वृद्धि कैसे हुई। नामांकन के समय दिये गए शपथ पत्र को ही माने तो जहां 2014 में नीरा यादव के पास 80.65 लाख रुपये की सम्पति थी वह 2019 में बढ़ कर 3.65 करोड़ रुपये हो गई,अमर बाउरी के पास 7.34 लाख रुपये थी जो 5 वर्षो में बढ़ कर 89.49 लाख रुपये हो गई, निलकंठ मुंडा के पास 2014 में 1.46 करोड़ की सम्पति थी जो 5 वर्षो में बढ़ कर 3.65 करोड़ हो गई, रणधीर सिंह की सम्पति 2014 में 78.92 लाख थी जो 5 वर्षो में बढ़ कर 5.06 करोड़ हो गई,लुईस मरांडी की सम्पति 2014 में 2.25 करोड़ थी यह 5 वर्षो में बढ़ कर 9.06 करोड़ हो गई। याचिका कर्ता ने इससे इससे पहले भी मोमेंट ऑफ झारखंड के आयोजनों को लेकर भी रघुवर दास और इनके पदाधिकारियों के खिलाफ एसीबी में आवेदन देकर मुकदमा दर्ज करने का आग्रह किया था।

झारखण्ड के नवनिर्वाचित मंत्रियों के विभाग

रामेश्वर उरांव	– वित्त, वाणिज्यकर, खाद्य आपूर्ति
मिथिलेश ठाकुर	– पेयजल स्वच्छता
जगरनाथ महतो	– शिक्षा, उत्पाद विभाग
जोबा मांझी	– महिला एवं बाल विकास व सामाजिक सुरक्षा विभाग
हाजी हुसैन अंसारी	– अल्पसंख्यक कल्याण, निबंधन विभाग
बादल पत्रलेख	– कृषि एवं पशुपालन व सहकारिता
आलमगीर आलम	– ग्रामीण विकास विभाग, संसदीय कार्यमंत्री
बन्ना गुप्ता	– स्वास्थ्य विभाग, आपदा प्रबंधन विभाग
चंपई सोरेन	– परिवहन विभाग, अनुसूचित जाति-जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग
सत्यानंद भोक्ता	– श्रम विभाग

मंत्री कोल्हान से बनाए गए हैं। उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल से दो को मंत्री बनाया गया है तो दक्षिणी छोटानागपुर से महज एक मंत्री बने हैं। संथाल परगना से ही विधानसभा अध्यक्ष बनाए गए हैं। वही हेमंत कैबिनेट में भले ही पलामू प्रमंडल से एक नाम मिथिलेश ठाकुर का दिख रहा हो, लेकिन वास्तविकता में उनका कर्म क्षेत्र कोल्हान ही है और वे विधानसभा चुनाव में जीत दर्ज करने के पूर्व तक चाईबासा में नगर निकाय के अध्यक्ष थे। विधानसभा में विधायक के तौर पर शपथ लेने के पूर्व उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल से राजद कोटे से मंत्री बने सत्यानंद भोक्ता का नाम है तो झामुमो के जगरनाथ महतो को इस बार मौका मिला है। झारखंड प्रदेश कांग्रेस के दो मंत्री संथाल परगना क्षेत्र से बने हैं। इन दोनों मंत्रियों में आलमगीर आलम पहले ही मंत्री बन चुके थे जबकि बादल पत्रलेख ने शपथ ली। अन्य दो मंत्रियों में एक बन्ना गुप्ता कोल्हान के हैं तो दूसरे रामेश्वर उरांव दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल का प्रतिनिधित्व करते हैं। ●

भारत को कहां ले जा रही है जनता

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

आंकड़ों के मुताबिक भारत की जनता सैकड़ों अपराधियों को चुनकर संसद में भेज चुकी है तथा इन दिनों संसद में अपराधियों की संख्या निरंतर बढ़ती ही जा रही है। दर्जनों सांसद हत्या तथा अपहरण के आरोपी है। एक उदाहरण काफी है कि यदि एक हजार की आबादी वाले गाँवों में सिर्फ 10 अपराधी बगैर हथियार के भी पहुँच जाता है तो समूचे गाँव की जुबान में ताला लग जाता है। संसद में भेजने वाली जनता को स्वयं सोचना चाहिए की अपराधी के सामने क्या स्थिति होगी जब 540 सांसद में संकड़ों अपराधी रहे तो । जनता को सोचना होगा कि संसद देश के भविष्य की निर्माता होती है न कि अपराधीयों का जमावड़ा। जिस स्वाभिमानी पुलिस ने अपराधी को जेलों तक पहुँचाया है वैसे अपराध ी को जनता ने सांसद का ताज पहना दिया। वैसे सांसद को भी ईमानदार पुलिस को सलामी देने के समय क्या स्थिति होती होगी। सांसद एवं विधायक को जीत का माला पहनाने वाली जनता से सवाल किया जाए कि यदि आप के यहाँ चोरी, डकैतकी या महिला से इज्जत लूटने वाले अपराधी को रंगे हाथ पकड़ा जाए तथा मार-पीट एवं घसीटते हुए पुलिस के हवाले कर दे तथा फिर उसी अपराधी को आपको सलामी करने की स्थिति आ जाए तो उस समय आपकी क्या स्थिति हो। जनता क्यों अपराधी एवं भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों से सलामी दिलवाना चाह रही है।

भारत के इतिहास की ताजा और शर्मनाक घटना की याद दिला रहा हूँ कि पंजाब के मुख्यमंत्री बेअंत सिंह का हत्यारा बलवंत सिंह को 31 मार्च 2012 को फांसी का समय निर्धारित था तथा बलवंत सिंह क्षमा याचना भी नहीं माँगा था इसके बावजूद शायद अपराधी के भय से समूचे देश में सांसद और विधायक मन्दिर की मूर्ति की तरह खामोश थे बल्कि पंजाब की अधिकांश जनप्रतिनिधि कानून की धज्जियां उड़ाते हुए फांसी होने से रोक दिया ऐसी स्थिति में देश के स्वाभिमानी लोगों की क्या स्थिति हो रही होगी यह समझ से परे हैं। सांसद और विधायक अपनी मन मर्जी से कानून बनाकर वेतन और सुविधाएँ बढ़ाकर मजा लूट रहे हैं तथा गलत-सलत कानून निर्माण कर जनता में मतभेद पैदा कर रही है जैसे हरिजन एक्ट बनाकर न्यायालय का अधिकार भी छीन लिया गया कि निर्दोष लोगों को भी अग्रिम जमानत नहीं दे सकता है। जनता जिस तरह संसद में अपराधियों की संख्या बढ़ाती जा रही है। यदि अपराधी का बहुमत हो जाए तथा अपने भविष्य के लिए कानून निर्माण कर ले कि सांसद और विधायक के विरूद्ध किसी तरह का मुकदमा नहीं चलेगा तथा सांसद और विधायक की अनुशंसा पर हत्या जैसी मुकदमा समाप्त कर दिया जायेगा एवं प्रत्येक सांसद एवं विधायक को सुन्दर युवती रखने एवं बदलते रहने का अधिकार होगा तथा अपराधी को पत्नी एवं पुत्र-पुत्री को जेल में साथ रहने की छूट तथा दिन में बाहर घूमने की छूट का कानून बना ले तो उस समय देश की स्थिति क्या होगी? यदि इसी तरह भारत की जनता अपराधियों को चुनकर संसद में भेजती रही तो वह दिन दूर नहीं जब ईमानदार लोग वहाँ भी डर के मारे चुपचाप बैठे रहेंगे और ये अपराधी लोकतंत्र की ताबूत में कील ठोकते रहेंगे। सुविधा भोगी अपराधियों को और सांसदों से भारत की जनता को सावधान रहने की जरूरत है। किसी भी स्थिति में अपराधियों से भारत की जनता को सावधान रहने की जरूरत है। किसी भी स्थिति में अपराधियों-भ्रष्टाचारियों को संसद तक पहुँचने से रोकना आवश्यक है। मुंबई के 26/11आतंकवादी हमले के मोस्ट वांटेड और लश्करे तोएबा प्रमुख हाफिस सईद के पकड़वाने वाला को 51 करोड़ ईनाम देने के लिए अमेरिका ने घोषणा की है और भारत के जनता द्वारा भेजे गये सांसद खामोश थे भले ही तत्कालीन विदेश मंत्री ने सिर्फ स्वागत किया है। आज वहीं काँग्रेस का शासन है जिसके बारे में महात्मा गांधी ने 1939 ई0 में मंत्रियों के आचरण से दुखी होकर कहा था कि भ्रष्टाचार से समझौता करने की जगह पूरी कांगेस को दफन करने के लिए मैं किसी भी हद तक जाऊँगा।

हमारे देश में आईपीएस तीन तरह की सोच वाले होते हैं। पहला वैसे लोग होते हैं जिन्हें सोंच रहती कि मुझे अपराध रोकना है कानून के अनुसार छोटे हो या बड़े सभी को कानून की बेड़ियाँ पहनाना है। दूसरा होता है कि नियम और कानून की किताब खोलते हैं तथा खामियाँ निकालकर बड़े अपराधी को कानून से बचा लेने का प्रयास करते हैं तथा वैसे ही लोग मुठभेड़ में मारे जाने के बाद जाबांजी का ताज पहनते हैं। देश में शहीद होने वाले जाबांज की शायद ही उदाहरण मिलेगा कि कानून से खिलवाड़ करने वाला विधायक/सांसद तथा बड़े लोगों को कानून की विदियां पहनाया होगा। जाबांज पुलिस अधिकारी को तो तबादलों का पुरस्कार मिलता रहता है। भारत की पहली महिला आईपीएस किरण बेदी थी तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की बे साईड खड़ी कार को जप्त कर लिया था, आपके सामने पटना का एसपी किशोर कुणाल का हश्र सभी लोग जानते हैं। कुछ ही दिन पहले पटना में शिवदीप लांडे के बारे में सभी लोग जानते हैं कि अपने विवके पर जाबांज बने हुए थे। भले ही बिहार सरकार ने शिवदीप लांडे को स्मगलरों के बीच में झोंक दिया, जैसे प्रह्लाद को हिरण्यकष्यप ने क्या दुर्दशा किया जो सबों को मालूम है। तीसरा होता है जो अनैतिक कार्य कर तथा सता का दुरूप्योग कर अपने सात पूस्तों के लिए धन बटोरने में पीछे नहीं रहते हैं। तीसरे तरह के अधिकारियों की संख्या बढ़ती जा रही है। जिसके कारण आमजनता को न्याय नहीं मिलती है तथा अपराध में बेतहासा बढ़ोतरी होती जा रही है, निर्दोष जेल में रहते हैं तथा अपराधी सीना तान कर मैदान में घूमता रहता है। आज के नेता देश को रसातल में भेजने पर तुले हैं। ऐसी स्थिति में जनता को जागरूक रहकर वैसे लोगों को राजनीति में जाने से रोकना होगा जिनकी छवि समाज में किसी भी तरह से अनुकरणीय नहीं है। ●

Geelani's son denies rumors of death after (Video) of critical health goes viral

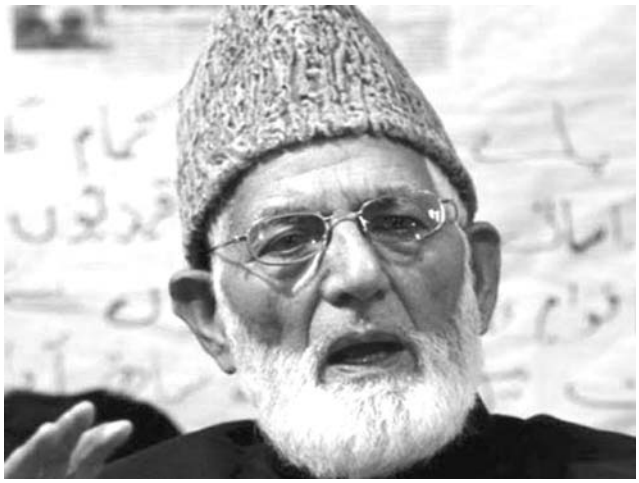

The 2G mobile internet service was suspended on Wednesday evening after rumours spread on social media about the health condition of chairman of hardline Hurriyat Conference (HC) Syed Ali Shah Geelani. The son of Geelani rejected the rumours and said the separatist leader was fine.Police warned that stern action would be taken against those spreading rumours on social media by using VPN illegally. Official sources said that 2G mobile internet service was suspended on Wednesday evening following illegal use of VPN to spread rumours about the health of Geelani.

However, in some areas, mobile internet was restored Thursday afternoon.The sources said a high-level meeting was held to review the situation after rumours. A team of doctors from a hospital also visited the residence of Geelani late last night. A number of social media posts had claimed that the condition of 90-year-old has deteriorated yesterday. Divisional Commissioner, Kashmir, Baseer Ahmed Khan today termed the reports about death of Geelani as baseless. He said a team from SKIMS visited his home for health check up."I personally spoke to his son also. He confirmed Geelani sahib is stable," Khan said. He said that rumours about his death are totally baseless. The Divisional Commissioner has directed officers concerned to verify why rumours about Geelani's death were circulated and who was behind all this.

He was also joined by IGP Kashmir Vijay Kumar and Director SKIMS Dr A G Ahanger at a late night meeting to ascertain the factual position about Geleani's health.Police said legal action will be taken if anyone is found to be spreading rumours. Kindly desist from forwarding rumours and propaganda material on social media platforms. The 2G internet was resumed only on January 25 after remaining suspended for over 170 days since August 5, when the Centre scrapped Article 370 and divided the state into two Union Territories (UT). However, this access was for just 301 "whitelisted" websites. This is the third time in the last five days that mobile internet services have been suspended as a precautionary measure to prevent rumours. On February 11, the services were snapped on account of the death anniversary of JKLF founder Maqbool Bhat On February 9, services were cut off due to a bandh call by separatist groups on the death anniversary of Parliament attack convict Afzal Guru.However, the high speed internet and broadband service remained suspended since August 5.

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

US Navy seizes 'Iranian-manufactured' weapons in Arabian Sea raid

US troops seized a cache of Iranian-made weapons from a boat in the Arabian Sea, US officials said. The shipment, likely headed to Yemen, included anti-tank and anti-aircraft missiles and other "advanced weapons parts." Navy personnel serving on the US cruiser Normandy uncovered a shipment of weapons aboard of a sailboat in the Arabian Sea after boarding the vessel "in accordance with international law," the US Central Command said on Thursday.

The US published a short black and white video which showed a US navy boat approaching the vessel and troops beginning to board without apparent resistance. "The weapons seized include 150 'Dehlavieh' anti-tank guided missiles,"

which are "Iranian-manufactured copies" of similar Russian-made weapons, US officials said. Other weapons allegedly included Iranian-made surface-to-air missiles, thermal imaging scopes, ammunition as well as "Iranian components for unmanned aerial and surface vessels." The US officials did not say where the vessel was headed before the Sunday raid. However, they noted that many of the seized weapons were "identical" to those seized in a raid by a different US warship, the USS Forrest Sherman, in the Arabian Sea in November. "Those weapons were determined to be of Iranian origin and assessed to be destined for the Houthis in Yemen," the US Central Command said. Iran is widely believed to be supporting Shiite Houthi rebels fighting against the Saudi-backed government in Yemen. A UN resolution bans Iran from selling weapons outside the country without previous authorization, and a separate UN document also bans supplying weapons to Houthi leaders.

जेएनयू देश को कब तक गलत दिशा देगी

● **संजय कुमार सिन्हा**

हमारे देश के छोटे-छोटे कसबे शहर के विधार्थी जब जेएनयू का नाम सुनते हैं तो उनके मन में एक समान्य होता है ऐसे विश्वविघालय के लिए। पर ऐसा है नहीं जेएनयू ऐसी विश्व विख्यात संस्था अपनी गरिमा हमेशा से खोती जा रही है, वो भले किसी जमाने में स्व. इन्दिरा गांधी के द्वारा भेजे गये दूत से जेएनयू प्रांगण मे तत्कालीन छात्र संघ नेता सीताराम येचुरी की पिटाई हो या अभिनेत्री दीपिका पादुकोण का जेएनयू प्रकरण में परिसर में उपस्थित होना। इसके बीच कन्हैया, राहुल गांधी, कुछ कशमिरी मुस्लिम छात्र नेता के द्वारा देश के टुकड़े टुकड़े करने की बात करना या समर्थन में खड़ा होना इनकी प्रतिष्ठा और विश्वनियता कम करता है। और ऐसे छात्र जो छोटे कसबे के है उन्हें ये सब समझ नहीं आ पाती या समझते हैं तो वैसे संस्थान से घृणा करते हैं। अगर छोटे शहर के विधार्थी अपने विध ालय, महाविधालय या विश्वविध ालय मे तोड़फोड़ करे तो उनको संस्थान से नाम काट दिये जाते हैं अन्यथा कभी भी उन्हें मागने पर अच्छा चरित्र प्रमाण पत्र नहीं दिये जाते हैं। लेकिन इन सब से अलग दुनिया का अलबेला ऐसे कुछ विश्वविधालयों के जिसमे जेएनयू के अलावे अलीगढ़ मुस्लिम, जामिया मिलिया, यादवपुर जैसे नामचीन विश्वविधालय के। छात्र ऐसे होते हैं कि अपने पसंद के कुलपति तय करते हैं और पसंद नहीं होने पर उनको हटाने पर अडिंग हो जाते हैं वे यही तक नहीं रुकते उनकी हुक्का पानी भी बंद कर देते हैं। जरुरत के हिसाब से उनकी

पिटाई व घसीटाई भी की जाती है। इसके विपरित छोटे शहर के विधार्थी अगर कभी किसी जायज या नजायज मुद्दों पर अपने प्रोफेसर से बकछक या लड़ाई हो जाती है तो वे कुछ दिनों तक उनसे नजर नहीं मिला पाते। लेकिन यहाँ आपको कुछ तिथिवार वाक्या याद दिलाना चाहूगा- 25मार्च, 2019 को छात्रों ने कुलपति के घर में जबरन घुस कर हुड़दंग मचाया जिसे देखकर कुलपति की पत्नी बेहोश हो गई थी।

✯ **कैमरा मीडिया का दोगला चरित्र भी सामने आया :-** जेएनयू में हिंसा के बाद एक ग्रुप फौरन सक्रिय हो गया और झूठी खबरें फैलाने लगा। झूठी कहानी के लिए अग्रनी पोर्टल न्यूजलाउंडी् और एकतरफा गलत रिपोंटिंग के लिए प्रसिद्व पत्रकार बरखा दत्त सबसे आगे रही। ये दोनों ने खबरें चलाई कि अस्पताल में भत्ती एबीवीपी के छात्रों को लगी चोटे बहुत ही मामूली है। लेकिन कुछ ही मिनटों में इसका पोल खुल गई कि जिस कथित डॉक्टर के हवाले से यह खबर फैलाई जा रही थीं उसका ऐम्स से कोई लेना देना ही नहीं था। बल्कि वह काँग्रेस पार्टी का पदाधिकारी था। इन सभी बातों के खुलासा के बाद भी एकतरफा मीडिया झूठी खबरें फैलाती रही। वामपंथी विचारधारा के छात्रों के कारनामों को कैमरे में कैद होने के बाद भी अपने को पीड़ित बताते और दिखाते रहे। विपरित एबीवीपी के छात्रों को विलेन बनाने की कोशीश जारी रही। जबकि वामपंथी छात्र अध्यक्षा आईशी घोष नकाबपोश के साथ दिखने के बाद भी उसे काँतिकारी दिखाने के प्रयास जारी रहा इन सभी की जिम्मेवारी विवादित पत्रकार बरखा दत्त का सोशल मीडिया के माध्यम से जारी रहा। उन्होंने जाली स्क्रिन शाँट जारी किया जो कि बाद में उसका भी पर्दाफास हो गये ये सभी नंबर भी काँग्रेस के ही थे। एक सुनियोजित तरीके से अंतरास्ट्रीय मीडिया में भारत की छवि खराब करने की कवायद चल रही थी। भारत के जाने माने पत्रकार विदेशों में लेख के द्वारा भारत की छवि खराब करने की योजना में लगे हुए रहे। न्यूयाँक टाईम्स ने छापा कि जेएनयू में हिंसा के दौरान जयश्रीराम के नारे लगे। समय आ गया है कि

–: घटनाक्रम :–

☞ 28अक्टूबर 2019 को डीन ऑफ स्टुडेन्ट्स अशोक कदम को कन्वेंशन सेन्टर मे घेरा और उनकी तबियत बिगड़ने पर उन्हें एम्बलेंस से ले जाने नहीं दिया गया।

☞ 8 नवंबर 2019 एडीशनल डीन ऑफ स्टूडेंट्स वंदना मिश्रा को कक्षा में 26 घंटे से अधिक समय तक बंदी बनाकर रखा। उनके साथ गाली–गलौज व हाथा पाई की गई और सबसे बड़ी शर्म की बात की उस कमरे में कोई भी शौचालय वाथरुम तक नहीं थे। आप सोच सकते हैं कि एक महिला कैसे 26 घंटे बिताया होगा।

☞ 22 नवंबर, 2019 प्रोफेसर आनंद रंगनाथन को स्कूल ऑफ मॉलीक्यूलर मेडिसिन की लैब में घुसने नहीं दिया उसके तीन सप्ताह बाद उन्हें अपने विभाग से जाने से रोका गया।

☞ 3 जनवरी, 2020 पूर्व छात्र संघ अध्यक्षा गीता कुमारी के नेतृत्व में वाई–फाई तंत्र और रजिस्ट्रेशन के सर्वर को बंद किया और क्षतिग्रस्त करके बंद कर दिया और वही पर धरने पर बैठ गई।

☞ 4 जनवरी, 2020 सुबह जब विश्विधालय के सुरक्षाकर्मी ने सर्वर क्षेत्र खुलवाने की कोशिश की तो उनके साथ मारपीट की गई और अंजाम भुगतने की धमकी दी गई। दुबारा कमरा खोलने के लिए सुरक्षाकर्मी ने प्रयास किया तो छात्र संघ अध्यक्षा आईशी घोष के नेतृत्व मे मारपीट किया गया।

☞ 5 जनवरी, 2020 को जेएनयू छात्रसंघ अध्यक्षा के नेतृत्व में 300से अधिक दिल्ली और देश के बाहर के गुडों को बुला कर लाठी डंडे रड से छात्रों को मार कर कईयो घायल कर दिया गया। ये जितने भी वाक्या हुआ ये सभी नक्सल या वामपंथी छात्र संघ परिवार रहा। उसके उपरांत अखिल भारतीय विधार्थी संघ के छात्रों ने भी 5 जनवरी के देर शाम वामपंथी विचारधारा को पिटने मे पीछे नहीं रहे।

ऐसे नामचीन पत्रकारों के पोल खोलने की जिससे भारत की छवि खराब करने की साजिस का पर्दाफास हो और ऐसे पत्रकार प्रताड़ित हो उन्हें समान नहीं मिलनी चाहिए। कुछ दिन पहले आईआईटी कानपुर छात्रों और प्राध्यापकों के द्वारा अवैध रूप से बिना अनुमति के आईआईटी प्रांगण में किया गया और विवादित पाकिस्तानी शायर फैज अहमद फैज के विवादित नज्म गाई गई जिसका एक दूसरे प्रोफेसर ने आईआईटी प्रशासन से शिकायत की तो झूठी मीडिया ने भ्रम फैलाने लगा कि आईआईटी प्रशासन जाँच करेगी कि फैज की नज्म कही हिन्दू विरोधी तो नहीं। एक बेबसाइट ने फेक न्यूज पोस्ट कर दी कि शिकायत करने वाले प्रोफेसर वासी शर्मा दलित विरोधी हैं, दलित के सुधार प्रयास का विरोध करते हैं। ऐसे सारी खबरें 'दी प्रिंट' मीडिया ने फैलाई जिसके संपादक शेखर गुप्ता है जो झूठी खबर फैलाने के माहिर हैं, जो कि एडिटर्स गिल्ट के अध्यक्ष है। जिसका काम है कि पत्रकारिता के स्तर को बनाये रखना।

✯ **जेएनयू पर अभी तक लिपा पोती** :– 5 जनवरी, 2020 को जेएनयू में हुई हिंसा में अभी तक लिपा पोती ही हुई है कारवाई नहीं। कहने को तो एसआईटी 29 लोगों से पूछताछ और 77 लोगों के बयान दर्ज कर चूकी है, लेकिन एसआईटी के मुताबिक अभी तक पुख्ता सबूत न मिलने के कारण किसी की गिरफ्तारी नहीं हो पाई है। इस मामले में एसआईटी फॉरेंसिक जाँच रिर्पोट के इन्तजार मे है। जबकि कई मामले में पुख्ता सबूत का इन्तजार है। अभी तक एस आईटी लोगों को नोटिस जारी कर रही है। क्राईम ब्राँच के हिसाब से जाँच के मामले में आये हुये व्यक्ति के ग्यारह मोबाईल अभी भी जब्त कर रखा गया है। अभी भी कई तरीके से जाँच किया जा रहा है। जिसमे एफएसएल की टीम भी जाँच कर रही है। ●

Japan in no mood to cancel or postpone Summer Olympics over new coronavirus

Japan is not considering cancellation or postponement of the 2020 Summer Olympic Games over the outbreak of a new coronavirus, Tokyo Olympic and Paralympic organizing committee chief Yoshiro Mori said on Thursday. The 2020 Summer Olympics will be held in Tokyo from July 24 to August 9."I want to again state clearly that cancellation or postponement of the Tokyo Games has not been considered," Mori said at a meeting with the International Olympic Committee, as quoted by the Kyodo news agency. According to the official, the organizers will "work with the government and respond calmly" to any problems, related to the epidemic. The new strain of coronavirus was first detected in the Chinese city of Wuhan in late December and has since spread to more than 25 other countries. The epidemic has already left more than 1,300 people dead in China. Japan has registered more than 200 confirmed cases of the new coronavirus, including 218 people on board of the Diamond Princess cruise ship quarantined in Yokohama. In late January, the World Health Organization declared a global health emergency in light of the epidemic.

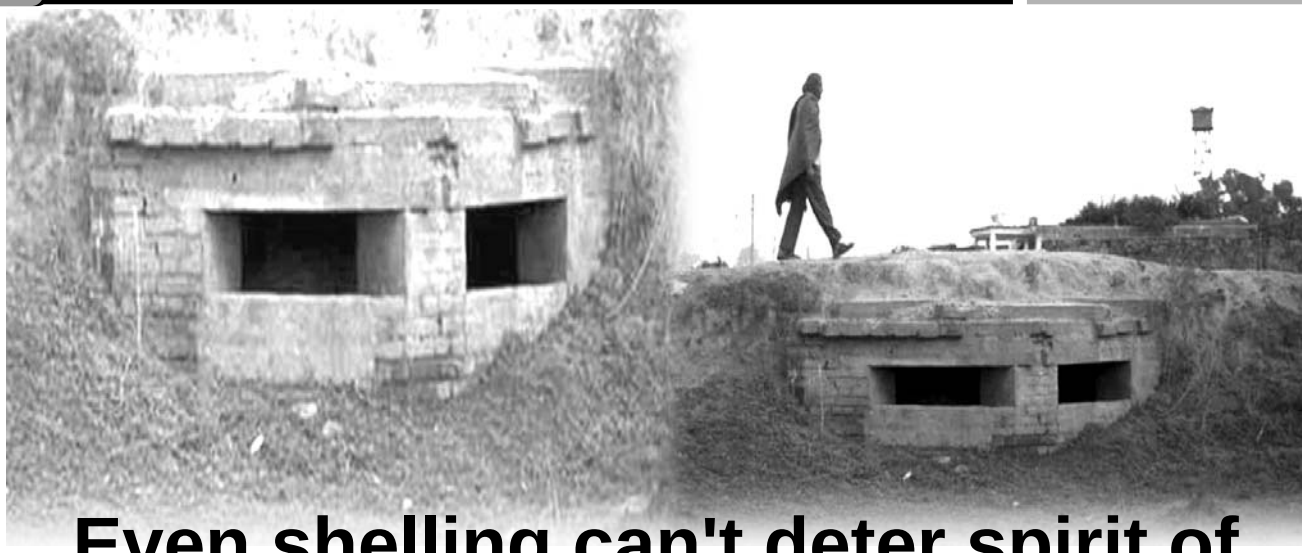

Even shelling can't deter spirit of Students in Poonch

Where there is will, there is a way.In what can be seen as the urge to study and secure future, courageous students in shelling-hit Poonch are going for studies to bunkers converted to makeshift classrooms. "We are trained by the Army and the staff of the school on how to leave the classrooms during shelling and run towards bunkers for shelter and continue routine class-work so that our studies don't get affected," Shaista, a student from Poonch told UNI. Annoyed by frequent shelling, Shaista said that she want a bright future and worrying about the firing will not let her achieve the goal of her life.

Normal life in border district Pooch of Jammu is crippled frequently due to ceasefire violation from Pakistan and heavy shelling across the border. To ensure safety of residents during shelling, the district administration has dug bunkers in border villages. The concrete bunkers, which are solid enough to defeat even 120 mm mortar, have been converted to makeshift classrooms so that the students continue their studies especially when examinations are round the corner. Though Pakistan fires unprovoked by shelling heavily with mortars in forward villages along the LoC but the courageous students of Pinewood School of Army's Good and many others, despite all odds are continuing pursuing studies to secure their future in bunkers when they are unable to study in classrooms. Another student Sameena said, "I want to appeal to Pakistani Prime Minister Imran Khan to stop shelling and targeting border villages on this side and let us chase our dreams." Seventeen-year-old Mohammad Imran, who lost his left foot after a mortar fired from across the border exploded close to him, appealed to Prime Minister Narendra Modi for financial assistance to him and to his family.

"I was the lone bread earner in the family and after getting my leg amputated, I am unable to work like I used to earlier," he added. Deputy Commissioner Poonch Rahul Yadav here told UNI, "there are total 1,388 bunkers allocated for community and individual, out of which 550 to 600 ready." "We have asked for more allocation as Poonch has larger area with high density of population across the border," said the DC. A total of 5,538 bunkers have been completed in the Jammu division including 5.035 individual bunkers and 503 community bunkers. Also, 1,234 bunkers, including community and individual bunkers, have been completed in district Samba, 918 in Jammu, 1,193 in Kathua, 1,744 in Rajouri, over 500 in Poonch have been completed. However, former MLC Shahnaz Ganai expressed apprehensions on numbers of bunkers stated by the administration. "Poonch district has maximum population living close to the border but the bunkers allocation is not up to the mark as only 1,500 were built, which are not sufficient," she said. "Several bunkers are still under construction. People living close to borders are the worst-affected by shelling and bunkers are utmost requirement at the moment, Ms Ganai said.

● **ललन कुमार प्रसाद**

दुनियांभर के लोगों में कोरोना वायरस ने दहशत पैदा कर दिया है। चीन के हुवेई प्रांत के वुहान शहर से शुरू हुई कोरोना वायरस का कहर अब दुनियांभर के 24 देशों में फैल गया है। ये देश है-चीन, इटली, दक्षिण कोरिया, अमेरिका फ्रांस, जर्मनी, भारत, श्रीलंका, नेपाल, यूएई, मलेशिया, जापान, रूस, ऑस्ट्रेलिया, ताइवान, वियतनाम, कंबोडिया, सिंगापुर, ब्रिटेन, थाईलैंड, फिनलैंड, फिलीपींस और बोत्सवाना। इसलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे वैश्विक आपदा घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस के गिरफ्त में पूरा चीन यानि चीन के 34 प्रांत है। चीन सरकार से मिली जानकारी के अनुसार 3 फरवरी तक कोरोना वायरस के संक्रमण से मरने वालों का आंकड़ा 425 तक पहुंच गया है। 20 हजार 428 लोगों में इस वायरस से संक्रमित होने की पुष्टि हो चुकी है, जिनमें से 1900 मरिजों की स्थिति नाजुक है।

✯ **वायरस क्या है? :-** 'वायरस' एक लैटिन शब्द है, जिसका मतलब है 'विष'। इसलिए हिन्दी में वायरस को विषाणु कहते हैं। ये वनस्पति वर्ग के सर्वाधिक सूक्ष्म

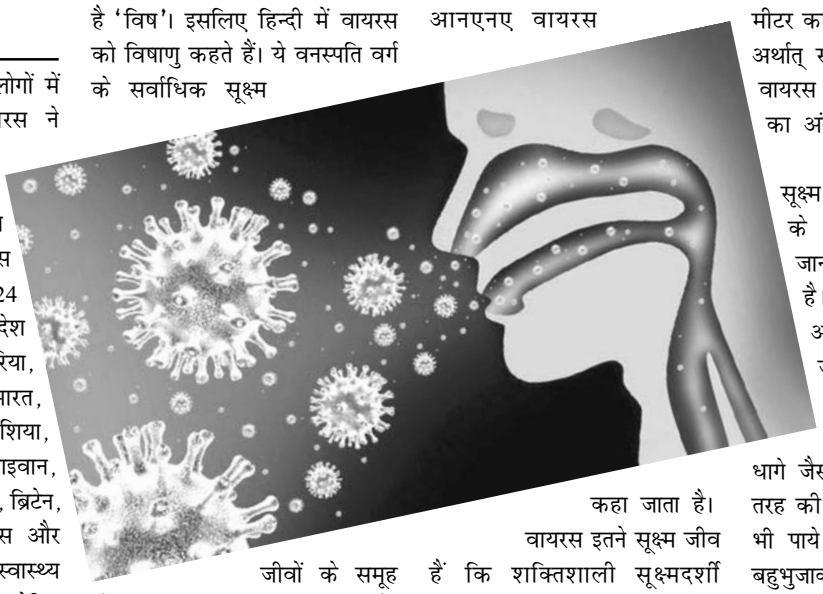

जीवों के समूह है, जो पूर्णत: परिजीवी होते हैं। अर्थात् वायरस अपना भोजन अन्य जीवों से प्राप्त करते हैं। इन्हें पनपने के लिए जीवित कोशिकाओं (लिविंग सेल्स) की जरूरत पड़ती है। जीवित कोशिकाओं में आरएनए (राइबोन्यूक्लिक एसिड) और डीएनए (डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड) दोनो पाये जाते हैं, जबकि वायरसों में इनमें से सिर्फ एक ही पाया जाता है। वायरस में मौजूद न्यूक्लिक एसिड के प्रकार के अनुसार इन्हे डीएनए वायरस और आनएनए वायरस कहा जाता है।

वायरस इतने सूक्ष्म जीव हैं कि शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शी (पावरफुल माइक्रोस्कोप) से भी नहीं देखा जा सकता है। ये एक छोटे से पिन के एक सिरे के लगभग 16 हजारवें भाग के बराबर होते हैं। इन्हें केवल इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप से ही देखा जा सकता है। इसलिए वायरस, बैक्टीरिया (जीवाणु) को छानने के लिए सार्वधिक महीन बैक्टीरिया फिल्टर से निकल जाता है। अत: बैक्टीरिया से इनका बिलगाव संभव नहीं है। इनकी लम्बाई 10 माइक्रोन से लेकर 20 माइक्रोन तक होती है। एक माइक्रोन एक मीटर का दस लाखवां भाग होता है। अर्थात् सबसे छोटे और सबसे बड़े वायरस के शरीर में बीस गुणा तक का अंतर होता है।

वास्तव में वायरस इतने सूक्ष्म होते हैं कि इनकी आकृति के बारे में अब तक सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है। ये कई आकार और आकृतियों में पाये जाते हैं। जैसे-बेलनाकार, बहुभुजाकार, कटे हुए गोले की आकृति जैसी संरचना, धागे जैसी संरचना और मेढ़क की तरह की आकृति वाले। ऐसे वायरस भी पाये जाते हैं, जिनका सिर तो बहुभुजाकार होता है, मगर उसमें बेलनाकार पूंछ होती है।

वायरस में कोशकीय संरचना (सेलूलर स्ट्रक्चर) नहीं होती है। अर्थात् ये अकोशीय होते हैं वास्तव में वायरस एक न्यूक्लियो प्रोटीन है, जो दो पदार्थों के मिलने से

बनते हैं। ये पदार्थ हैं-न्यूक्लिक एसिड और प्रोटीन। वायरस का मुख्य भाग न्यूक्लिक एसिड होता है। वायरस के मध्य में न्यूक्लिक एसिड वलय (रिंग) के रूप में रहता है, जो प्रोटीन की बनी दोहरी सतह वाली सुरक्षा खोल यानि आवरण से ठका रहता है। प्रोटीन के इसी बाहरी खोल को कैप्टिस कहते हैं।

✯ **संक्रमण के बाद वायरस कैसे फैलते हैं :-** संक्रमण के बाद वायरस इंसान, पशु-पक्षी और वनस्पतियों की जीवित कोशिकाओं के अंदर पाये जाते हैं तथा विभाजित होते रहते हैं। अर्थात् ये केवल जीवित कोशिका में प्रजनन कर सकते हैं। ये एक कोशिका से दूसरी कोशिका में छिद्र करके चले जाते हैं और नई कोशिका में प्रवेश करते ही विभाजन शुरू कर देते हैं। इस तरह इनकी संख्या में अचानक वृद्धि हो जाती है। साथ ही इन्हें अकार्बनिक पदार्थ की तरह रवाकृत (क्रीस्टाइज्ड) किया जा सकता है। जो जीवित कोशिका के सम्पर्क में आते ही जीवित हो उठते हैं और प्रजनन-गुणन (ब्रीडिंग मल्टीप्लीकेशन) करने लगते हैं।

जीवित कोशिका के बाहर से देखने पर वायरस कुछ भी नहीं है, किन्तु ये अक्रिय रसायन है जो एक बार शरीर में प्रविष्ट होते ही जीवान्त हो जाते हैं और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जीव-रसायनीय (बायो केमिकल) मशीनरी पर अधिकार जमा लेते हैं। दूसरे शब्दों में वायरस बीमारी फैलाते हैं, इसलिए इन्हें मृत नहीं माना जा सकता। फिर वायरस भोजन के लिए परपोषी पर पूरी तरह आश्रित रहते है। इसलिए जीवितों में इनकी गिनती नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि वैज्ञानिक आज भी वायरस को आधा जीवित और आधा मरा हुआ मानते हैं। इस प्रकार वायरस में सजीव और निर्जीव दोनो ही प्रकार के गुण पाये जाते हैं। इसलिए ये सजीव और निर्जीव दोनो ही के बीच की कड़ी हैं।

अलग-अलग किस्म के वायरस शरीर के अलग-अलग हिस्सों पर हमला कर अलग-अलग तरह की बीमारियां फैलाते हैं। मसलन बड़ी और छोटी चेचक, खसरा, बुखार, आदि चमड़े पर वायरस के हमले से फैलती है। कुछ वायरस स्नायुओ और नसों पर हमला कर बीमारियां फैलाते हैं। इनसे रैबीज, मस्तिष्क ज्वर और लकवा जैसी बीमारियों होती है। कुछ वायरस शरीर के भीतर घूस जाते हैं और वहां से बीमारियों को जन्म देते हैं। इन बीमारियों में इन्फ्लुएन्जा, सर्दी-जुकाम और जिगर (लिवर) का सूज जाना शामिल है।

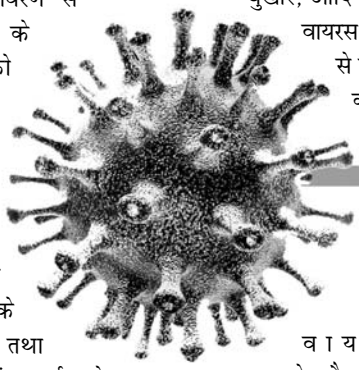

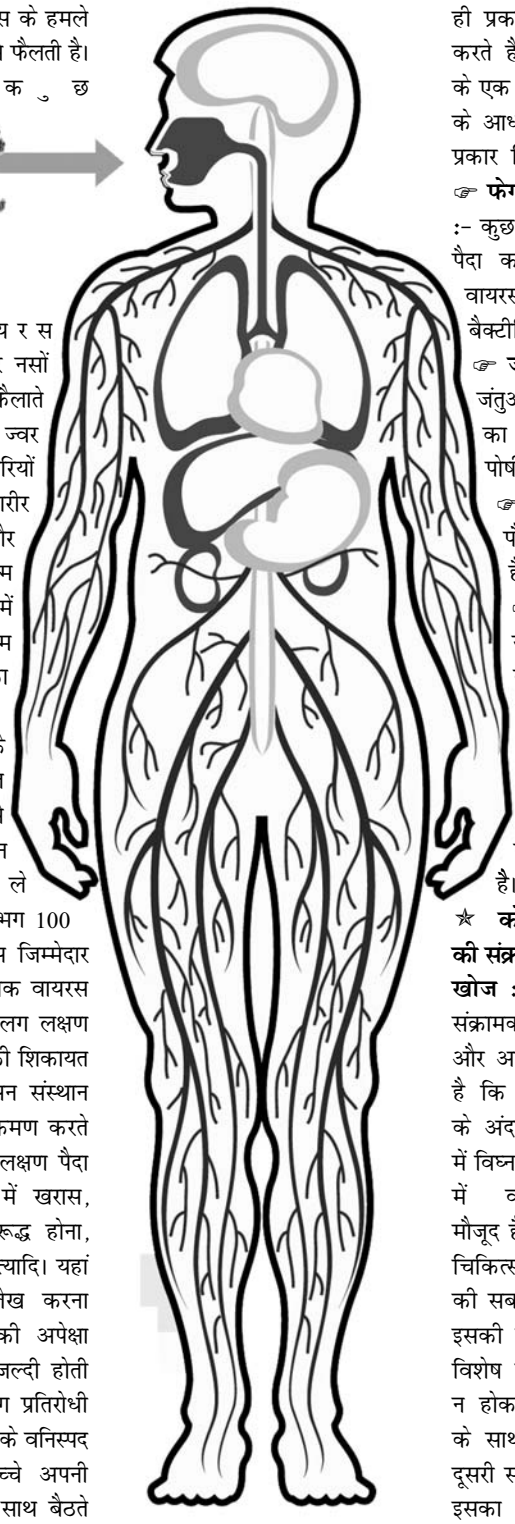

वायरल रोगों के बारे में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि यह छूत से लगने वाले होते हैं। मसलन शर्दी-जुकाम को ही ले लीजिए। इसके लिए लगभग 100 प्रकार के विभिन्न वायरस जिम्मेदार होते हैं और इनमें से प्रत्येक वायरस के चलते थोड़े अलग-अलग लक्षण पैदा होते हैं। जब जुकाम की शिकायत होती है तो वायरस श्वसन संस्थान के अवयवों के उपर आक्रमण करते हैं, जिससे जाने-पहचाने लक्षण पैदा हो जाते हैं। जैसे-गले में खरास, सूखापन, नाक का अवरूद्ध होना, नाक का बहना, छिके, इत्यादि। यहां पर इस बात का उल्लेख करना जरूरी है कि व्यस्कों की अपेक्षा बच्चों को शर्दी-जुकाम जल्दी होती है, क्योंकि बच्चों की रोग प्रतिरोधी क्षमता युवाओं और व्यस्कों के वनिस्पद कम होती है। फिर बच्चे अपनी कक्षा में दूसरे बच्चों के साथ बैठते हैं तो उनमें से एक-दूसरे में संक्रमण फैल जाता है, क्योंकि बच्चे छिकते समय मुंह में रूमाल नहीं रखते हैं। दरअसल जब बच्चा छिकता है तो उसके मुंह से तेजी से अधिक मात्रा में निकली हुई नम हवा के साथ वायरस अगल-बगल के वातावरण में फैल जाता है, जिससे एक बच्चा, दूसरे बच्चे से संक्रमित हो जाता है।

✯ **वायरस का वर्गीकरण :-** यह सच है कि वायरस के संक्रामक गुण जंतुओं और पेड़-पौधों में तरह-तरह की बीमारियां फैलाते हैं, लेकिन एक प्रकार के वायरस एक ही प्रकार के परपोषी पर आक्रमण करते हैं। प्रत्येक प्रकार के वायरस के एक निश्चित परपोषी के आक्रमण के आधार पर इनका वर्गीकरण इस प्रकार किया जाता है :-

☞ **फेग या बैक्टीरियोफेग वायरस :-** कुछ वायरस बैक्टीरिया में संक्रमण पैदा करते हैं, इन्हें बैक्टीरियोफेग वायरस कहा जाता है। अर्थात् यह बैक्टीरिया का भक्षण करते हैं।

☞ **जूफेग वायरस :-** ये वायरस जंतुओं की जीवित कोशिकाओं का भक्षण करता है यानि अपना पोषी मानते हैं।

☞ **फाइटोफेग वायरस :-** ये पौधों को अपना पोषी मानते हैं।

☞ **माइकोफेग वायरस :-** ये कवकों (फंगस) की कोशिकाओं को अपना पोषी मानते हैं।

वायरस के अनोखे संसार पर वैज्ञानिकों के अनुसंधान जारी है और नित्य नये वायरस की खोज होते रहती है।

✯ **कोशिकाओं के अंदर वायरस की संक्रमण सक्रियतारोधी नवीनत्तम खोज :-** जापान में टोकियो स्थित संक्रामक रोग विशेषज्ञ वाई. कोजिमा और आर.वाई नागानोने ने पुष्टि की है कि इण्डेरफेरॉन से कोशिकाओं के अंदर वायरस संक्रमण क्रियाओं में विघ्न पड़ती है। अर्थात् इण्डेरफेरॉन में वायरसरोधी सक्रियता का गुण मौजूद है। इन संक्रामण रोग विशेषज्ञ चिकित्सकों के मतानुसार इण्डेरफेरान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसकी वायरसरोधी सक्रियता किसी विशेष प्रकार की वायरसों के प्रति न होकर प्राय: अधिकांश वायरसों के साथ होती है। इण्डेरफेरान की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता ये है कि इसका प्रभाव काफी व्यापक होता

है, क्योंकि यह कोशिकाओं को वायरस संक्रमण के समय वायरसरोध ी बनाने के साथ-साथ उनके विभाजन को भी रोकता है। इण्डेरफेरान की तीसरी सबसे बड़ी विशेषता है कि यह हमारी रोग प्रतिरक्षा प्रणाली की प्राकृतिक किलर कोशिकाओं को उत्तेजित करता है, जिससे रोग प्रतिरोध क क्षमता बढ़ जाती है। इण्डेरफेरान मनुष्य को बड़ी व छोटी चेचक, सर्दी-जुकाम, आंखों पर असर डालने वाली अरपीस आदि वायरसों के आक्रमण से सुरक्षित रखता है। इन रोगों से बचाने के लिए इण्डेरफेरान की अत्यंत सूक्ष्म मात्रा की जरूरत पड़ती है।

✯ **जलवायु परिवर्तन के चलते वायरसों के आक्रमण का खतरा** :- वैसे ही चीन के कोरोना वायरस के चलते पूरी दुनियां दहशत में है, लेकिन वैज्ञानिकों का नया शोध भविष्य में वायरसों के और बड़े संभावित खतरे की ओर इशारा कर रहा है। बात यह है कि वैज्ञानिकों ने तिब्बत में 15 हजार साल पुराने वायरसों के एक खतरनाक समूह का पता लगाया है। 33 वायरसों का यह समूह 520 से 15 हजार साल पुराने हैं, जिन्होंने तिब्बत के उत्तरी-पश्चिमी बर्फीली पठारों में अपना घर बना लिया है। यह बहुत ही अधिक चिंता की बात है कि इन 33 वायरसों में से महज पांच के ही बारे में आधुनिक विज्ञान को जानकारी है, जबकि 28 ऐसे वायरस हैं, जो विज्ञान के लिए नये हैं। शोधकर्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि बर्फ में दबे होने के कारण ये वायरस अलग-अलग जलवायु (क्लाइमेट) में अपने-आपको जिंदा रखे हुए हैं। चूकि इन वायरसों की मौजूदगी का इलाका तिब्बत का बर्फीला पठार है जो चीन के 38 प्रांतों में से एक प्रांत तिब्बत में पड़ता है। इसलिए भविष्य में वायरसो के इस समूह से संक्रमित होने का खतरा बहुत अधिक बढ़ गया है। ऐसा इसलिए कि चीन, दुनिया का एक ऐसा देश है जहां पालतू तथा जंगली हर तरह के जानवरों का सेवन बहुत बड़े पैमाने पर किया जाता है। इसलिए चीन हर तरह के वायरसों के लिए जन्नत बन गया है।

अमेरिका से तिब्बत पहुंची वैज्ञानिकों की एक टीम ने 1992 और 2015 के ग्लेशियरों के नमूने लिये थे।

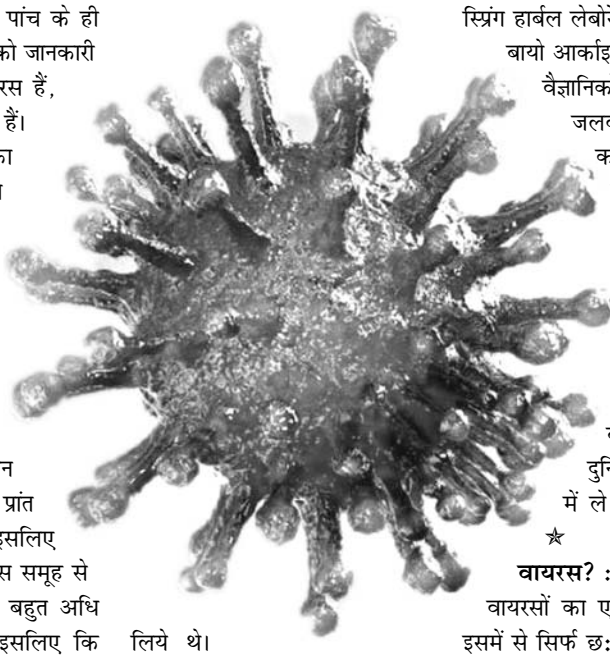

ग्लेशियर यानि बर्फ की नदी। लिए गये ग्लेशियरों के नमूनों के टुकड़ों को ठंढ़े कमरे में रखा गया था, जहां कुछ को इथेनाल (इथाइल अल्कोहल) से साफ किया गया और कुछ को पानी से धोया गया, तो पाया गया कि ग्लेशियर की बाहरी परत हटते ही 15 हजार साल पुराने वायरस सामने आ गये। कोल्ड स्प्रिंग हार्बल लेबोरेटरी द्वारा संचालित बायो आर्काइव डाटाबेस से जुड़े वैज्ञानिकों का कहना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियर की बर्फ पिघल रही है, जिसके चलते बर्फ में दबे ये वायरस बाहर आ सकते हैं। इससे आशंका व्यक्त की जा रही है कि वर्षों पुरानी बीमारियों फिर से दुनियां को अपने चपेट में ले सकती है।

✯ **क्या है कोरोना वायरस?** :- कोरोना वायरस, वायरसों का एक बड़ा समूह है। इसमें से सिर्फ छः वायरस ही इंसानों को संक्रमित करते हैं, लेकिन चीन के हुवेई प्रांत के वुहान शहर में दिसम्बर के प्रारंभ में पहली बार सामने आया यह वायरस कोरोना परिवार का सातावां नया वायरस है। इसलिए इसे 'नॉवेल कोरोना वायरस' (एन कोरोना वायरस या एनसीओवी) के नाम से जाना जाता है। चूकि यह वायरस चीन के वुहान शहर में पहली बार सामने आया है, इसलिए इसे वुहान कोरोना वायरस के नाम से भी जाना जाता है। वैसे कोरोना परिवार के इस नये वायरस का कुछ तो नाम होना चाहिए, लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अभी तक इस नये वायरस का नामकरण नहीं किया है। यह वायरस कांटों की तरह दिखता है। कांटो (क्राउन) जैसा दिखने के कारण इस वायरस का नाम कोरोना पड़ा। कोरोना वायरस की सबसे बड़ी खराबी है कि यह बेहत तेजी से फैलता है।

अनुमान है कि यह वायरस सार्स (सिवियर एक्यूट रेसपिरेटरी सिंड्रोम) और मर्स (मिडल इस्ट रेसपिरेटरी सिंड्रोम) की तरह जानवरों से आया है। कोरोना वायरस की एक प्रजाति से दूसरे प्रजाति में ट्रांसमिट

वायरसों के उद्गम स्त्रोत

साल	वायरस	जानवर	स्त्रोत देश
1919	स्वाइन फ्लू	सुअर	अज्ञात
1976	इबोला	चिम्पैंजी	अफ्रीका
1977	बर्ड फ्लू	वाटर फाउल	हांगकांग
2002	सार्स	सीवेट कैट	चीन
2012	मर्स	ऊँट	सउदी अरब
2013	एच/एन 9 एवियन इनफ्लूएंजा	–	चीन
2018	एच 7 एन 4	–	चीन
2019	एच 5 एन 6 बर्ड फ्लू	–	चीन
2020	कोरोना	चमगादड़	चीन

यानि जाते हैं और फिर इंसानों को संक्रमित कर देते हैं। इस दौरान इनका बिल्कुल पता नहीं चल पाता है। इस वायरस से बचाव के लिए अभी तक कोई वैक्सिन (टीका) तैयार नहीं की जा सकी है। इसलिए इससे बचाव ही इसका इलाज है। अतः कोरोना वायरस से संक्रमित मरीज से दूर रहने को कहा गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के क्षेत्रीय निदेशक डॉ० पूनम के अनुसार जानवरों की मांस से फैले वायरस की वजह से दुनियांभर में हर साल करोड़ों लोग बीमार पड़ रहे हैं। इसकी वजह से हर साल लाखों लोगों की मृत्यु हो रही है। हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने उन बीमारियों की पहचान की है, जिनमें सार्वजनिक स्वास्थ्य, आपातकाल पैदा करने की क्षमता है। लेकिन, उनके प्रभावी इलाज और टिकों की कमी है। इस सूचि में इबोला, जीका, निपाह, सार्स, मर्स, स्वाइन फ्लू और बर्ड फ्लू शामिल है, जो किसी अज्ञात महामारी के लिए तैयार रहने को आगाह करते हैं। ऐसा इसलिए कि ऐसी बीमारियां भविष्य में किसी गंभीर महामारी का कारण बन सकती है।

✯ **कोरोना वायरस के लक्षण :-** कोरोना वायरस इंसान के फेफड़ों में घातक संक्रमण करता है, जिससे संक्रमित व्यक्ति के शरीर का तापमान सबसे पहले बढ़ता है। इससे सूखी खासी होती है और एक सप्ताह बाद संक्रमित व्यक्ति को सांस लेने में दिक्कत होने लगती है। यही कारण है कि कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति को सबसे पहले सांस लेने में दिक्कत, गले में दर्द, मांसपेशियों में दर्द, थकान, खांसी, जुकाम और बुखार होता है। एडवांस्ड स्टेज में यह लोगों में निमोनिया जैसी परेशानियां पैदा करता है, जिससे लोगों को अस्पताल में भर्ती होना पड़ सकता है। निमोनिया और किडनी से जुड़ी कई दिक्कतें बढ़ सकती है। कोरोना वायरस के मरीज ज्यादातर उम्रदराज लोग हैं। खासकर वे लोग पहले से ही पार्किसन, डायबिटीज और सांस की बीमारियों से जुझ रहे होते हैं।

✯ **चीन की कारिस्तानी से चुनौती बना कोरोना :-** चीन में कोरोना वायरस का खुलासा इस साल 20 जनवरी को हुआ, लेकिन पहले इस खबर को करीब डेढ़ महीने तक दबाये रखा गया। यदि पहले ही विश्व स्वास्थ्य संगठन को इसकी जानकारी दे दी गई होती तो हालात इतने वेकाबू नहीं होते। दुनियांभर में एकदम से भय और तबाही मचाने को नॉवेल कोरोना वायरस इतना पैर नहीं पसार पाता, क्योंकि चीन सहित दुनियां के सभी देश सर्तक हो जाते। समय पर आपातकालीन कदम उठा लिए होते। पिछले कई मौकों की तरह इस बार भी चीन से निकला यह नया वायरस दुनियांभर में आतंक का पर्याय बन गया है। दरअसल, चीन के वुहान शहर में इस वायरस का आक्रमण 2019 के आरंभ में ही हो गया था, लेकिन चीन में इस तथ्य को न सिर्फ छिपाया गया, बल्कि साधारण बीमारी बताकर गुमराह किया गया। किन्तु झूठ की इंतिहा तो तब हो गई जब कहा गया कि इससे किसी की मौत नहीं हुई है। लेकिन जर्मनी की लैब जर्मन

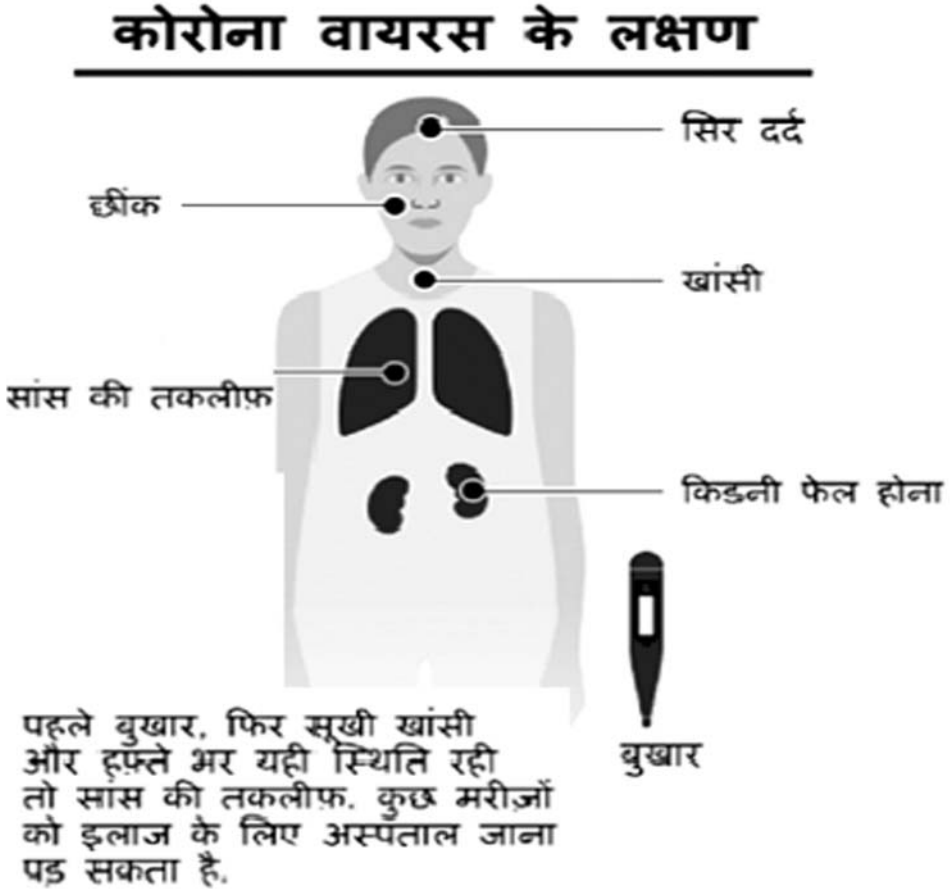

सेंटर फॉर इंफेक्शन रिसर्च ने इस बारे में जांच-पड़ताल शुरू किया तो पाया कि नॉवेल कोरोना वायरस पहली बार चीन के हुवेई प्रांत के वुहान शहर में ही उभरा है, जिससे गंभीर निमोनिया होता है। तब इस वायरस की भयवहता का दुनियां को पता चला, लेकिन, तब तक काफी देर हो चुकी थी। चीन की यह हरकत मानवता को शर्मसार करने जैसी है। इतनी बड़ी घटना को पचाने की कोशिश से चीन की नियत पर पूरी दुनियां को शक होने लगा है। एक महाशक्ति की ऐसी हरकत क्षमायोग्य नहीं है। पूरी दुनियां सुपर पावर चीन के सच छिपाने की चोर मानसिकता से हैरान है।

✯ आखिर चीन से ही क्यों फैलती है तरह-तरह की महामारियां? :- दुनियांभर में तबाही फैलाने वाली ज्यादातर बीमारियां चीन से ही शुरू क्यों होती है? क्या है कि वहां से पहला वायरस निकलकर दुनियांभर में फैल जाता है? दरअसल, चीन में लोमड़ी, मगरमच्छ, भेड़िया, सांप, छिपकली, गिलहरी, चूहे, कुत्ता, बिल्ली, सुअर, मोर, साही, ऊँट, तेलचट्टा, चमगादड़ सहित 112 किस्म के कच्चे, पके व अधपके तथा जिंदा जानवरों के मांस खाये जाते हैं। चीन के मीट मार्केट में कई तरह के जानवरों के मांस मिलते हैं। इसलिए वहां नये-नये वायरस तेजी से फैल रहे हैं। खासकर हाइजीन में थोड़ी भी चूक वायरस के फैलने में मददगार होती है। बात यह है कि वहां के फूड मार्केट में सुरक्षित तरीके से जानवरों के मांस का रख-रखाव नहीं होता है। ऐसे में जहां भी जानवरों का करीबी और अनियंत्रित मेल-जोल होता है, वहां बीमारियों को फैलने का खतरा सबसे ज्यादा होता है। इसके चलते जानवरों में पाया जाने वाला वायरस इंसानों में पहुंचने लगते हैं। इसलिए चीन के फूड मार्केट से नये-नये वायरस तेजी से फैलते हैं और संक्रामक होने की वजह से पूरी दुनियां में फैल जाते हैं। दरअसल चीन के मांस बाजार में जानवरों के मांस और खून का इंसानों के शरीर से सम्पर्क करीबी और अनियंत्रित होता रहता है, जो वायरसों के फैलने की सबसे बड़ी वजह है। तमाम प्रयोगों, परिक्षणों और रिसर्चों से साबित हो गया है कि कई तरह के खतरनाक वायरस जानवरों के मांस से इंसानों में आये हैं और फिर इनका संक्रमण तेजी से पूरी दुनियां में फैला है। वास्तविकता तो यह है कि विगत तीस वर्षों में तीस नयी एवं खतरनाक संक्रामक बीमारियों के बारे में पता चला है कि 60% वायरस जानवरों से फैले हैं और इनमें से 75% वायरस जानवरों से इंसान में आये हैं। वर्ष 2002 में चीन के मांस बाजार में मिलने वाली कस्तूरी विलाव में पहला सार्स वायरस मिला था। वैज्ञानिक मानते हैं कि चमगादड़ों ने बिल्ली जैसे जीवों को इससे संक्रमित किया और फिर इंसानों द्वारा बिल्लियों को खाने से यह उनमें फैला।

यह स्थिति सिर्फ चीन की ही नहीं है। दुनियांभर में जहां भी जानवरों और इंसानों के बीच करीबी और अनियंत्रित मेल-जोल होता है, वहां वायरस से संक्रमित होने के मामले ज्यादा पाये जाते हैं। मसलन, अफ्रीका में इबोला के मामले में यही देखा गया। अफ्रीका के चिम्पैंजियों में सबसे पहले इबोला वायरस पाया गया था। वहां इंसानों के द्वारा चिम्पैंजियों को मारकर खाने के बाद ही इबोला वायरस जानवरों से इंसानों में ट्रांसमिट हुआ। मांस बाजार में वायरस के फैलने से पैथोजंस रोगाणु (जर्मस) का ट्रांसमिशन आसान हो जाता है।

✯ चीन के लोग अछूत बनते जा रहे हैं :- चीन से दुनियांभर में फैले कोरोना वायरस की वजह से चीनी लोग दुनियांभर में हीन भावना के शिकार हो रहे हैं, अछूत बनते जा रहे हैं। सिंगापुर ने चीनी यात्रियों को वीजा देना बंद कर दिया है। वियतनाम, रूस, फिलीपींस, बांग्लादेश, श्रीलंका और मलेशिया ने चीनी यात्रियों के वीजा पर प्रतिबंध लगा दिया है। ब्रिटिश एयरवेज ने चीन से आने और जाने वाले सभी उड़ाने निलंबित कर दी है। छोटा सा देश पापुआ न्यू गिनी ने किसी भी एशियाई नागरिक के देश में प्रवेश पर रोक लगा दिया है। दक्षिण कोरिया, जापान,

हांगकांग और वियतनाम के रेस्तरां ने चीनी ग्राहकों पर वैन लगा दिया है। इंडोनेशिया में लोगों ने एक होटल के बाहर प्रदर्शन कर वहां मौजूद चीनी पर्यटकों को चले जाने को कहा। साउथ कोरियाई वेबसाइटों पर ऐसी अनेक टिप्पणियां आ रही है कि जिन पर चीन के लोगों को देश से बाहर निकलने तथा उनपर प्रतिबंध लगाने की मांग हो रही है। अभी तक सम्राज्यवादी रवैये के चलते दुनियां के देशों में चीन विरोध ी भावनाएं देखने को मिलती थी, किन्तु दुनियांभर में चीन से फैलते जानलेवा कोरोना वायरस के चलते अब कई देश उसके खिलाफ एकजुट दिखाई दे रहे हैं।

✯ **ग्लोबल अर्थव्यवस्था को जबरदस्त झटका लगा है :-** चीनी शहरों में सिनेमा, होटल-रेस्तरां बंद होने और शहरों के बीच आवागमन बंद होने से वहां पर्यटकों की संख्या में 79.6% कमी आयी है। ज्यादातर घरेलू पर्यटकों ने बुकिंग रद्द कर दी है। चीन के 11 हजार सिनेमाघर बंद हैं। कॉफी चेन स्टार ने अपने 2 हजार से अधिक स्टोर बंद कर दिये हैं। वुहान शहर ऑटो कंपनियों का मैनुफैक्चरिंग केन्द्र है। वहां निसान, होंडा, जनरल मोटर्स, आदि ऑटो कंपनियों के प्लांट हैं, जो बंद कर दिये गये हैं। सभी तरह की दवाइयों के 80% कच्चे माल दुनियांभर में चीन से निर्यात किये जाते हैं। चीन से दवाइयों के कच्चे माल के निर्यात में आयी भारी कमी के चलते कई देशों के दवा बनाने वाली कंपनियां कच्चे माल के आभाव में बंद होने के कगार पर पहुंच गयी है। दुनियांभर में प्लास्टिक के फूलों की 90% सप्लाई चीन से की जाती है, जिसका निर्यात फिलहाल बंद है। भारतीय कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोबाइल जैसी कंपनियां जो चीनी आयात पर निर्भर है, उनमें से कई कंपनियों के पास महज दो हफ्ते का ही माल बचा है, इसलिए भारतीय कंपनियों पर शटडाउन का खतरा मंडरा रहा है। जापान की कार निर्माता कंपनी टोयोटा ने चीन में अपना प्लांट फिलहाल बंद कर दिया है। इससे स्पष्ट है कि ग्लोबल अर्थव्यवस्था को भारी झटका लगा है। अर्थव्यवस्था का नकारात्मक असर दूर करने के लिए चीन के केन्द्रीय बैंक ने 12369 करोड़ से अधिक की राशि बाजार में झोकने की योजना बनायी है। पिपुल्स बैंक ऑफ चाइना, 2 फरवरी 2020 को एक बयान में कहा है कि कोरोना महामारी से जुझने, मुद्रा बाजार को स्थिर बनाये रखने और बैंकिंग प्रणाली में पर्याप्त तरलता बनाये रखने के लिए उचित कीमत पर बिक्री के अनुबंध के तहत बॉन्ड खरीदकर बाजार में धन का प्रवाह बढ़ायेगी।

✯ **कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति का इलाज :-** कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति को इससे निदान पाने के लिए फिलहाल कोई इलाज नहीं है। डॉक्टर संक्रमित मरीजों का इलाज उनके लक्षण के आधार पर ही कर रहे हैं। डॉक्टर द्वारा इलाज हेतु समान्यतया एंटीवायरल का इस्तेमाल किया जा रहा है। ऐसे में सावधानी बरतना और वायरस से रोकथाम के उपायों पर अमल किया जाना ही इसका इलाज है। कोरोना वायरस के संक्रमण का सबसे अच्छा उपाय घर और घर की साफ-सफाई है।

हांथ धोने के लिए साबुन या सेनेटाइजर का उपयुक्त इस्तेमाल। वायरस से संक्रमित व्यक्ति से करीब दो मीटर की दूरी बनाये रखना। जो व्यक्ति संक्रमित नहीं भी है, उनसे ना हांथ मिलाये और ना गले मिले। बस दूर से ही हांथ जोड़े। एन 95 मास्क पहनकर ही घर से बाहर निकले। यदि एन 95 मास्क उपलब्ध नहीं हो तो दूसरे किस्म का भी मास्क पहन सकते हैं। एक ही मास्क का बार-बार उपयोग न करे। कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति पानी खूब पिये। इस मामले में डाभ या कच्चे नारीयल का पानी खूब पीना चाहिए। मौसमी और अनार के रस का सेवन भी इस मामले में बहुत लाभकारी है। आम तौरपर शरीर के अंदर एंटी बॉडिज बनाने में और उसको ड्रेन करने के लिए शरीर में पर्याप्त पानी का होना जरूरी है। पिया गया पानी, पसीना और पेशाब के रूप में शरीर के अंदर की गंदगी और जहरीले पदार्थों को अनवरत बाहर निकालते रहता है। सांस लेने म तकलीफ होने पर संक्रमित व्यक्ति को गर्म पानी की भाप लेनी चाहिए अथवा ह्यूमिडिफायर का इस्तेमाल करना चाहिए। वैज्ञानिकों के अनुसार चीन के घातक कोरोना वायरस का प्रकोप छः महीने तक चलेगा।

✯ **कोरोना वायरस का टीका :-** ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में पीटर होहटी इंस्टीच्यूट ऑफ इंफेक्शन एण्ड इम्युनिटी के जुलियन ड्रूस ने कहा है कि चीनी अधिकारियों ने नॉवेल कोरोना वायरस के जिन का समूह जारी किया है, जो इस रोग की पहचान में मददगार है। ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों ने कोरोना वायरस का

स्ट्रेन लैब में विकसित कर लिया है, जिससे जल्द ही कोरोना वायरस का टीका बनाया जा सकेगा। चीन और रूस के वैज्ञानिक भी कोरोना वायरस का टीका विकसित करने के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। चीन की ओर से दावा किया जा रहा है कि एक महीने के अंदर कोरोना वायरस का टीका विकसित कर लिया जायेगा। लेकिन, फिलहाल चीन के दावे को विश्वासीय अथवा प्रमाणित नहीं माना जा रहा है। इस बीच दावा किया जा रहा है कि हांगकांग का एक फर्म कोरोना वायरस से लड़ने की दवा विकसित कर ली है। लेकिन, फिलहाल इसका इस्तेमाल इंसानों पर नहीं किया जा सकता है। ऐसा इसलिए कि इस दवा का क्लीनिकल टेस्ट जानवरों पर चल रहा है। अभी इस दवा को इंसानों के लिए इस्तेमाल हेतु बनाने में एक साल का भी समय लग सकता है, लेकिन खुशी की बात है कि 28 जनवरी 2020 को कोरोना के इलाज के लिए टीका की खोज में लगे अनेक वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि कोरोना के टीका को आठ सप्ताह के अंदर पूरी तरह से विकसित कर लिया जायेगा।

✯ **अद्भुत है कोरोना वायरस से मुकाबले की चीन की तैयारी :-** महज दस दिनों में सौ वेड वाला होशेंसन हॉस्पीटल बनाकर तैयार कर लिया गया। 2500 वर्ग मीटर (269000 वर्ग फीट) में बने इस हॉस्पीटल का निर्माण 23 जनवरी 2020 को शुरू किया गया और 3 फरवरी 2020 को बनकर तैयार हो गया। 3 फरवरी से इस हॉस्पीटल में इलाज शुरू कर दिया गया। इस हॉस्पीटल में कुल मिलाकर 1400 स्टॉफ हैं। इस हॉस्पीटल से 25 मील की दूरी पर 1600 वेड वाला दूसरा हॉस्पीटल निर्माणाधीन है, जो जल्द ही बनकर तैयार हो जायेगा।

चीन ने जानलेवा कोरोना वायरस को नियंत्रित करने के लिए 8310 सदस्यों की कुल 68 चिकित्सा टीमों को हुवेई प्रांत में लगा रखा है। चिकित्सा टीमों में श्वसन, संक्रमण और मेडिसिन विशेषज्ञ डॉक्टर तथा नर्सें शामिल हैं। 68 चिकित्सा टीमों में से 57 चिकित्सा टिमें वुहान शहर के 27 हॉस्पीटलों में लगाये गये हैं, जो कोरोना बीमारी का केन्द्र है। चिकित्सा पर लगाये गये कुल 8310 सदस्यों में से 6775 सदस्य सिर्फ वुहान शहर में लगाये गये हैं। 3 फरवरी 2020 तक वुहान शहर में 350 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है और 11 हजार 177 कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की पुष्टि हुई है। जिनमें से 1701 लोगों की हालत नाजूक बतायी जा रही है। चीन के वुहान शहर के मीट मार्केट को बंद करा दिया गया है। चीन ने कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने संबंधी प्रयासों को तेज करने के लिए 280 हजार करोड़ रूपये की राशि आवंटित की है। वही चीन के उद्योगपति जैक मा व बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन भी मदद के लिए आगे आये हैं। कोरोना

✯ **वायरस के आक्रमण से सुरक्षा के उपाय :-**

☞ विश्व स्वास्थ्य संगठन को ऐसे साक्ष्य मिले हैं, जिनमे करीब-करीब लोगों के संक्रमित होने के मामले की पुष्टि हुई है। यही कारण है कि परिवार के एक व्यक्ति के संक्रमित होने की सूरत में उसकी देखभाल करने वाले व्यक्ति भी संक्रमण का शिकार हो सकता है। इसलिए वायरस से संक्रमित मरीज से पर्याप्त दूरी बनाये रखनी चाहिए। कोरोना वायरस से संक्रमित मरीज को छिक आने की सूरत में सामने खड़े लोगों को बचने का प्रयास करना चाहिए।

☞ सांसों के किसी भी तकलीफ से संक्रमित बीमार के पास जाने से यथासंभव बचना चाहिए।

☞ किसी भी संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आने के बाद हांथ, मुंह आदि को साफ पानी से धो लेना चाहिए।

☞ बच्चों को खेलकर आने के बाद हांथ को साबुन या सेनेटाइजर से धोने के बाद मुंह को साफ पानी से अच्छी तरह धो लेना चाहिए।

☞ तौलिया तथा अंदर पहने जाने वाले वस्त्र जैसे-गंजी, कछिया, मोजा, इत्यादि अपने-अपने प्रयोग में लाना चाहिए।

☞ टूथ ब्रश, कंघी, इत्यादि भी अपना-अपना प्रयोग में लाना चाहिए।

☞ छिक आने पर या खांसी होने पर नाक और मुंह के आगे रूमाल या टिसू पेपर अवश्य रखना चाहिए। बच्चों को भी यही सिख दे।

☞ नाक बहने पर नाक से बहने वाले पानी, बलगम और थूक को जगह-जगह न फैलाये।

☞ वाश बेसिन में नाक और गला साफ करने के बाद तुरंत पानी गिराकर साफ कर दे।

☞ घर में पालतू जानवर हो तो उससे दूर रहे। जब भी पालतू जानवर, जैसे कुत्ता किसी व्यक्ति के शरीर के किसी अंग पर अपनी जीफ फेरे या लार लगाये तो शरीर के उस अंग को साबुन से अवश्य धोएं। बच्चों को भी यही सिख दें।

☞ मरीज के देखभाल की सभी वस्तुएं, जैसे-तौलिया, चादर, तकिया का खोल, रूमाल, गंजी, कछिया, मोजा, इत्यादि को दूसरे के कपड़ों से अलग रखना चाहिए, ताकि स्वस्थ व्यक्ति वायरस से संक्रमित न होने पाये। मरीज तथा स्वस्थ व्यक्ति के कपड़े झाड़ने वाला ब्रश भी अलग होना चाहिए।

☞ परिवार के किसी व्यक्ति को कच्चा या पका मांस नहीं खाना चाहिए। वैसे ताजा मांस, मछली, चिकेन और अंडे का सेवन भी परिवार के लोगों को बंद कर देना चाहिए। यदि आदत के गुलाम हैं तो ताजा मांस, मछली और चिकेन ले सकते हैं, लेकिन कमी अवश्य कर दे। मटन और चिकन खाने के बाद इसके बहुत ही छोटे-छोटे टुकड़े प्राय: दांतों के बीच फंस जाते हैं। इसलिए खाने के बाद मांस के फंसे टुकड़ों को टूथपिक (दांतखोदनी) से निकालकर ब्रश से मुंह को साफ कर लेना चाहिए।

☞ पहले माना जा रहा था कि कोरोना वायरस जानवरो से इंसान में फैलता है, लेकिन अब यह इंसानों से इंसान में भी फैल रहा है। इसलिए सभी के लिए उपयुक्त मॉस्क लगाना जरूरी है। कोरोना वायरस से प्रभावित इलाके में छोटे-बड़े सभी व्यक्ति को उपयुक्त किस्म के मॉस्क पहनकर ही घर से बाहर किसी काम के लिए निकलना चाहिए और कार्यस्थल पर मॉस्क पहनकर ही काम करना चाहिए। लेकिन सार्वजनिक जगहों, जैसे-रेलवे स्टेशन, बस अड्डा, हवाईअड्डा, मॉल, आदि जगहों पर तो उपयुक्त मॉस्क लगाकर ही जाना चाहिए। एक ही मॉस्क का उपयोग बार-बार नहीं करना चाहिए।

✯ **वायरस से संक्रमित होने पर निम्नलिखित बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए :-**

☞ वायरस से संक्रमित होने पर मरीज को स्वस्थ होने में वायरस अपना नियत समय अवश्य लेते हैं, फिर भी चिकित्सक द्वारा दिया गया उपचार लोगों की भीषमता को कुछ हद तक कम कर राहत दिलाता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान का सबसे बड़ा हथियार एंटीबॉयोटिक वायरस पर काम नहीं करता है। इसलिए वायरल इंफेक्शन के मरीजों को उल्टी-सिधी दवा नहीं देनी चाहिए।

☞ मरीज को पूर्ण आराम करना चाहिए।

☞ मरीज को हल्का मगर सुपाच्य, पौष्टिक तथा ताजा भोजन करना चाहिए।

☞ रोगी को खाने के पहले और खाने के बाद हांथ को साबुन से अच्छी तरह धोना चाहिए। शौच के बाद भी मरीज को साबुन से हांथों को अच्छी तरह धोना चाहिए।

☞ किसी भी वायरस के संक्रमण से बचने का सबसे अच्छा उपाय है साफ-सफाई। विशेषकर अस्पतालों में साफ-सफाई रखनी ही चाहिए। लेकिन हमारे देश में खासकर बिहार राज्य में सरकारी अस्पतालों की हालत ऐसी है कि यहां स्वस्थ आदमी भी बीमार पड़ सकता है। लेकिन क्या अस्पताल परिस, घर, सब्जी और फल बाजार तथा मांस-मछली बाजार और रेलवे स्टेशन, बस अड्डा तथा किसी संस्थान को साफ-सुथरा रखने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की ही नहीं है। एक जिम्मेदार नागरिक की नजर से देखे तो यह जिम्मेदारी हमारी भी बनती है। इसलिए हम सभी को यह जिम्मेदारी सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर निभानी चाहिए।

☞ वायरल बीमारियों को फैलने से बचाता है नीम। इसलिए मरीज के बिस्तर के चारों कोनों पर तथा सिरहाने नीम की ताजी पत्तियों को रखना चाहिए। मरीज के कमरे के दरवाजे पर भी नीम के पत्तियों को टहनी सहित लटकानी चाहिए। खासकर गांवों और कस्बों में चेचक और खसरा होने पर ऐसा अवश्य किया जाता है, जिससे परिवार के अन्य सदस्य वायरस से संक्रमित होने से बच जाते हैं। नतीजा ये बीमारियां फैलती नहीं है।

वायरस को रोकने के लिए चीनी सरकार ने पूरे देश में सर्विलांस नेटवर्क बना रखा है। हर जगह नागरिकों की निगरानी की जा रही है। इसका मकसद है कि 1 करोड़ 10 लाख की आबादी वाले वुहान शहर के लोग नये साल पर शहर छोड़कर देश के अन्य हिस्सों में जहां कही भी गये हैं, उन्हें तलाश करके पकड़ा जा सके। चीनी कारखाने में प्रतिदिन दो करोड़ मॉस्क तैयार किये जा रहे हैं। चीन ने कोरोना वायरस से सबसे ज्यादा प्रभावित वुहान समेत 21 शहरों में मांसाहार पर प्रतिबंध लगा दिया है। चीन की सरकार ने लोगों से अपील की है कि वे मांस का सेवन बंद कर दे, सब्जियां खायें। मांसाहार पर पाबंदी से वहां पर खाने-पीने का संकट बढ़ गया है। इसलिए चीन सरकार ने किसानों से कहा है कि वे अधिक से अधिक सब्जियां उगाये ताकि देश में सब्जियों की किल्लत न हो। चीन के कृषि मंत्रालय ने सभी एजेंसियों को खादान्न उत्पादन में जुट जाने को कहा है, ताकि खाने का संकट ना हो। चीन सरकार ने पड़ोसी देशों से फल-सब्जी और अन्य खाद्य पदार्थों का आयात भी बढ़ाने की तैयारी शुरू कर दी है।

चीनी सरका ने कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप के मद्देनजर वहां के कुछ शहरों में आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया है। इनमें हांगझाऊ, ताइझू और निम्बो शामिल है। वुहान शहर में पहले ही लोगों का आवाजाही प्रतिबंधित है। हांगझाऊ, ताइझू और निम्बो शहर के कुछ इलाकों में हर घर से केवल एक ही व्यक्ति दो दिन में एक बार जरूरी समान खरीदने के लिए घर से बाहर जा सकता है। इन शहरों में 95 ट्रेन सेवाएं निलंबित कर दी गई है।

✯ **भारत सरकार द्वारा कोरोना वायरस से निपटने के लिए किये जा रहे प्रयास :-** भारत सरकार का स्वास्थ्य मंत्रालय इस मामले में पूरी तरह सचेत है। सबसे अहम बात है

कि देश के 20 बड़े हवाईअड्डों पर करोना से संदिग्ध मरीजों की पहचान के लिए थर्मल सेंसर मशीन की व्यवस्था कर दी गई है। इसके लिए सौ नये थर्मल स्कैनर खरीदे गये हैं। पहले महज 28 थर्मल स्कैनर थे, अब इसकी संख्या बढ़कर 128 हो गई है। इस मशीन से बहुत ही सहज तरीके से मरीज को चिन्हित किया जा सकता है। अभी तक चीन से 656 भारतीय नागरिकों को एयर इंडिया ने दो बार में भारत लाया है। इसमें ज्यादातर चीन के हुवेई प्रांत की राजधानी वुहान में पढ़ रहे युवा हैं। विमान में क्रू मेम्बरों और छः सदस्यीय डॉक्टरों की मेडिकल टीम के अलावा सुरक्षा टीम भी तैयार कर ली गई थी, जिससे की भारतीयों को सकुशल भारत लाया जा सके। आईटीबीपी ने वापस आये भारतीयों को चौबिस दिनों तक रखने के लिए सभी तरह की मेडिकल सुविधाओं से सुसज्जित दो शानदार कैम्प बनाये हैं, जिनकी क्षमता 900 वेडों की है। एक हरियाणा के मानेसर में और दूसरा दक्षिणी-पश्चिमी दिल्ली में आईटीबीपी के छावला कैम्प में। छावला कैम्प दिल्ली कैम्प स्थित अस्पताल में बनाया गया है। देश के सभी राज्यों के कम से कम एक सबसे बड़े सरकारी अस्पताल में कोरोना वायरस से संक्रमित संदिग्धों को रखने तथा इलाज की विशेष व्यवस्था की गई है।

भारत सरकार ने पत्र लिखकर सभी एयरलायंस से कहा है कि वे चीन से चीनी तथा विदेशी नागरिकों को भारत के किसी भी स्थान के लिए न बिठाएं, भले ही यात्रियों के पास वैध वीजा क्यों न हो। पत्र में कहा गया है कि ये आदेश तत्काल प्रभाव से अगले आदेश तक लागू रहेगा। चीन स्थित भारतीय दूतावास ने अभी तक जारी सभी नियमित तथा ई-वीजा को रद्द कर दिया है। अगले आदेश तक नये ई-वीजा देने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। लोगों को नये सिरे से नियमित वीजा के लिए आवेदन करना होगा। भारत ने चीन से कागज के आयात पर रोक लगा दिया है। कोरोना वायरस को लेकर प्रधानमंत्री कार्यालय नजदिकी से नजर बनाये हुए है।

✯ **अस्पताल में फैली गंदगी का नतीजा था चिमकी बुखार :-** पिछले साल गर्मियों में बिहार, उत्तर प्रदेश और पड़ोसी देश नेपाल में 'एक्यूट इसेफ्ललाइटिस सिंड्रोम' (एईएस) नामक बीमारी से ग्रसित होने के कारण भारी संख्या में बच्चों की मौत हो गई थी। इस बीमारी का स्थानीय लोगों ने चिमकी बुखार की संज्ञा दी थी। इस बीमारी का मुख्य कारण 'स्क्रब टाइफस' नामक वैक्टेरिया से होने वाला संक्रमण है, जो घरों में चूहा तथा अन्य छोटे जानवरों से फैलता है। यह तथ्य इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंटेपरेरी पीर्डियाटिक्स में प्रकाशित रिपोर्ट से सामने आया है। ऐसा इंडियन मेडिकल काउंसिल रिसर्च (आईसीएमआर) के प्रोजेक्ट के तहत पटना मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पीटल के डॉक्टरों की एक टीम ने 500 मरीजों पर किये गये रिसर्च में पाया है। इस तथ्य से यह प्रमाणित हो जाता है कि लिची खाने से उपयुक्त बीमारी का कुछ लेना-देना नहीं था। इस बीमारी का लेना-देना हॉस्पीटल की गंदगी से था, मुजफ्फरपुर स्थित डॉ. श्रीकृष्ण सिंह मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पीटल के परिसर में चारों तरफ फैली गंदगी से था, जगह-जगह गंदा पानी जमने से था। हॉस्पीटल और हॉस्पीटल परिसर में जगह-जगह गंदगी का सम्राज्य था, जिसके चलते हॉस्पीटल के पूरे परिसर में चारो ओर मक्खियां भिन-भिना रही थी तथा मच्छरों का कोहराम मचा था। पूरे परिसर में आवारा कुत्ते और बिल्ली इधर-उधर घूमते रहते थे। हॉस्पीटल के अंदर चूहे अक्सर इधर-उधर दौड़ते तथा कुछ खाते दिख जाते थे। कुल मिलाकर हॉस्पीटल बहुत गंदा था, जबकि हॉस्पीटल बहुत अधिक साफ और स्वच्छ रहना चाहिए। इसलिए यदि हॉस्पीटल और उसके परिसर को अच्छी तरह साफ-सुथरा रखा जाये तो आगामी गर्मी में एक भी बच्चा चिमकी बुखार से ग्रसित नहीं होगा और अगर साफ-सुथरा नहीं रखा गया तो आगामी गर्मी के मौसम में चिमकी बुखार का पुनः लौटना तय है। चिमकी बुखार के कहर से नहीं बचा जा सकेगा। ●

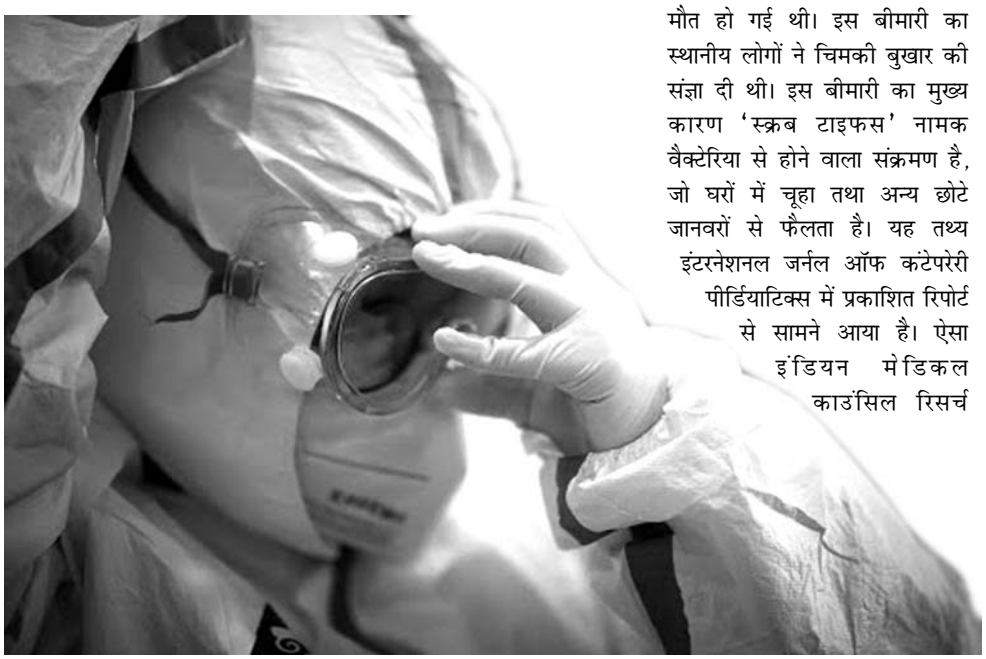

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट www.psfsm.in

✯ दण्ड प्रक्रिया संहिता के कुछ महत्वपूर्ण प्रबन्धों के बारे में जानकारी देने की कृपा करें।

व्यक्तियों की गिरफ्तारी (Arrest of Persons) :-

☞ धारा 44 के अनतर्गत मजिस्ट्रेट द्वारा गिरफ्तारी के सम्बन्ध में उपबन्ध किया गया है।

☞ धारा 45 के अन्तर्गत सशस्त्र बलों के सदस्यों को गिरफ्तारी से संरक्षण प्राप्त है। उन्हें केन्द्रीय सरकार की अनुमति से ही गिरफ्तार किया जा सकता है।

☞ गिरफ्तारी करने में अपराधी की मृत्यु कारित की जा सकती है। जब गिरफ्तार किये जाने वाले व्यक्ति पर उस अपराध को करने का आरोप है, जिसे मृत्यु या आजीवन कारावास का दण्ड दिया जा सकता है। (धारा 46 (3))

☞ असाधारण परिस्थितियों के सिवाय कोई स्त्री सूर्यास्त के पश्चात और सूर्योदय से पहले गिरफ्तार नहीं की जायेगी और जहाँ ऐसी असाधारण परिस्थितियाँ विद्यमान है, वहाँ स्त्री पुलिस अधिकारी, लिखित में रिपोर्ट करके, ऐसे प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट की पूर्व अनुज्ञा अभिप्राप्त करेगी, जिसकी स्थानीय अधिकारिता के भीतर अपराध किया गया है।

☞ धारा 57 के अन्तर्गत गिरफ्तार किये गये व्यक्ति की 24 घण्टे से अधिक विरूद्ध न किये जाने के सम्बन्ध में प्रावधान है।

☞ धारा 53 में पुलिस अधिकारी की प्रार्थना पर चिकित्सा व्यवसायी द्वारा अभियुक्त की परीक्षा के सम्बन्ध में प्रावधान है।

☞ धारा 53 (क) के अनुसार जब किसी व्यक्ति को बलात्संग या बलात्संग का प्रयत्न करने के अपराध के आरोप में गिरफ्तार किया जाता है और यह विश्वास करने के उचित आधार हैं कि इस व्यक्ति की परीक्षा या ऐसा अपराध करने के बारे में साक्ष्य प्राप्त होगा तो ऐसे गिरफ्तार व्यक्ति की परीक्षा करायेगा और उस प्रयोजन के लिए युक्तियुक्त बल का प्रयोग किया जा सकता है।

☞ धारा 54 गिरफ्तार व्यक्ति की प्रार्थना पर गिरफ्तार व्यक्ति की चिकित्सा व्यवसायी द्वारा परीक्षा का प्रावधान करती है।

हाजिर होने के लिए विवश करने के लिए आदेशिकाएँ (Process of Compel Appearance)

☞ समन एक ऐसी आदेशिका होती है, जिसके माध्यम से अभियुक्त को इस बात के लिए निर्देशित किया जाता है कि वह निर्धारित स्थान, तिथि तथा समय पर न्यायालय में उपस्थित हो।

☞ समन की तामील व्यक्तिगत रूप से की जाती है, यदि समन किये गये व्यक्ति न मिल सके तो वहाँ समन की तामील दो प्रतियों में से एक को उसके कुटुम्ब के उसके साथ रहने वाले किसी व्यस्क पुरूष सदस्य के पास छोड़कर की जा सकती है और यदि तामील करने वाले अधिकारी द्वारा अपेक्षा की जाती है तो, जिस व्यक्ति के पास समन ऐसे छोड़ा जाता है वह दूसरी प्रति के पृष्ठ भाग पर उसके लिए रसीद हस्ताक्षरित करेगा। (धारा 64)

☞ समन की आवश्यक अपेक्षाएँ निम्न है-

(1) समन लिखित होना चाहिए।

(2) समन दो प्रतियों में होना चाहिए।

(3) समन न्यायाधीश द्वारा हस्ताक्षरित होना चाहिए एवं न्यायालय की मुद्रा लगी होनी चाहिए।

☞ समन को लेने से इन्कार करना दण्डनीय अपराध नहीं है।

☞ समन की तामील समन किये गये व्यक्ति के नौकर से नहीं की जा सकती है।

गिरफ्तारी (Warrant of Arrest)

कानूनी सलाह
शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

☞ धारा 70 में गिरफ्तारी के वारण्ट का प्रारूप तथा उसकी अवधि के बारे में उपबन्ध है।

☞ धारा 70 की उपधारणा के अनुसार किसी व्यक्ति की गिरफ्तारी के लिए जारी किया गया प्रत्येक वारण्ट लिखित रूप में होगा साथ ही उस न्यायालय के पीठासीन अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित एवं मुद्रांकित होगा।

☞ धारा 70 की उपधारा (2) में वारण्ट की अवधि के बारे में उल्लेख है। इसके अनुसार प्रत्येक वारण्ट तब तक प्रवर्तन में रहेगा जब तक कि उसे जारी करने वाले न्यायालय द्वारा रद्द नहीं कर दिया जाता है या जब तक उसे निष्पादित नहीं करा दिया जाता है।

उद्घोषणा और कुर्की (Proclamation and attachment)

☞ फरार व्यक्ति के लिए उद्घोषणा (Proclamation) का प्रावधान धारा 82 में है।

☞ उद्घोषणा अवैध होने पर कुर्की भी अवैध हो जाती है।

☞ उद्घोषणा में 30 दिन के पश्चात् हाजिर होने का निर्देश होता है।

☞ निर्धारित अवधि 30 दिन से कम हो तो पश्चात्वर्ती समस्त कार्यवाहियाँ अवैधानिक होगी।

☞ धारा 83 में फरार व्यक्ति की सम्पति की कुर्की के सम्बन्ध में प्रावधान है।

☞ उद्घोषणा जारी होने के पश्चात् जंगम या स्थावर सम्पत्ति की कुर्की का आदेश दिया जा सकता है।

☞ वह व्यक्ति जिसके सम्बन्ध में उद्घोषणा निकाली जानी है, अपनी समस्त सम्पति या उसके किसी भाग का व्ययन करने वाला है अथवा अपनी समस्त सम्पत्ति या उसके किसी भाग को उस न्यायालय की स्थानीय अधिकारिता से हटाने वाला है तो वह उद्घोषणा जारी करने के साथ ही साथ कुर्की का आदेश दे सकता है।

☞ धारा 84 के अन्तर्गत कुर्की के बारे में दावे एवं आपत्तियों से सम्बन्धित प्रावधान है।

☞ कुर्क सम्पत्ति में हित रखने वाला व्यक्ति कुर्क किये जाने की तिथि से 6 माह के भीतर दावा एवं आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है।

☞ कुर्की के बारे में आपत्ति धारा 84 के अन्तर्गत उस दिन से 6 माह के भीतर जिस दिन सम्पत्ति कुर्क की गयी थी, की जा सकती है।

☞ कुर्की की हुई सम्पत्ति की नियुक्ति तभी होती है जब उद्घोषित व्यक्ति उद्घोषणा में विनिर्दिष्ट समय के अन्दर हाजिर हो जाये।

☞ यदि उद्घोषित व्यक्ति विनिर्दिष्ट समय के भीतर हाजिर नहीं होता है तो कुर्क सम्पत्ति राज्य सरकार में व्ययनाधीन हो जाती है और राज्य सरकार ऐसी सम्पत्ति का विक्रय (1) कुर्की की तारीख से 6 माह का अवसान हो जाने पर (2) धारा 84 के अधीन किये गये दावे या आपत्ति का निपटारा हो जाने पर कर सकती है।

It's Sachin vs Lara in Unacademy Road Safety World Series opener

In a much-anticipated clash of the titans, Sachin Tendulkar's India Legends take on Brian Lara's West Indies Legends in the opening match of the Unacademy Road Safety World Series at the historic Wankhede Stadium on March 7.The final will be played at the Brabourne Stadium in Cricket Club of India (CCI) ground on March 22. Of the total 11 matches, two will be played at the Wankhede Stadium, four at the MCA Stadium in Pune, four matches at DY Patil Stadium at Nerul in Navi Mumbai and the final at the picturesque Brabourne Stadium in Cricket Club of India ground.

Pune will have the rare distinction of hosting two India matches (against South Africa Legends on March 14 and Australia Legends on March 20) while Wankhede and DY Patil will host one match each featuring the host team. The Unacademy Road Safety World Series, is a five-nation T20 cricket tournament which will showcase some of the biggest names in cricket from India, Australia, Sri Lanka, West 'Indies and South Africa. Some notable players who will feature in this Series includes Bharat Ratna Sachin Tendulkar, Virender Sehwag, Yuvraj Singh, Zaheer Khan, Brian Lara, Shivnarine Chanderpaul, Brett Lee, Brad Hodge, Jonty Rhodes, Muttiah Muralitharan, Tillakaratne Dilshan, Ajantha Mendis and many more. Former India captain, Padma Bhushan and theliving legend Sunil Gavaskar is the Commissioner of the Series.Every year, more than 1.5-2 lakh people die on Indian roads due to vehicular accidents; one person dies every 4 minutes and 1,214 road accidents occur every day in the country. In the last five years, more than 65 lakh people were disabled completely. As cricket is the most followed sport in the country and cricketers are looked up to as idols, the Series aims to create awareness about road safety and change people's mind-set towards their behaviour on the roads.

Ravi Gaikwad, RTO Chief of Thane (Konkan Range), who is also a senior member of the Road Safety Cell of Maharashtra and Chairman of the Trust, Shant Bharat Surakshit Bharat, said, "There has been a lot of excitement towards this tournament and people were eagerly waiting for the schedule and the tickets. I am extremely glad for the fans and I am sure they will come in large numbers to cheer for the legends and also support this important cause of creating awareness towards road safety in the country. Road safety is a serious concern, one person dies every 4 minutes in India and we all should join hands to make our roads safe and save precious human lives."Karan Shroff, Vice President-Marketing, Unacademy, said, "The Road Safety World Series binds together a cause that we feel

deeply for, and a sport that is most loved by our TG and their parents, on and off the platform. This partnership will help us permeate the message that we want to convey as a brand. It is indeed exciting to see all the buzz around the tournament, and Unacademy is truly elated to be at the heart of it." Albert Almeida, COO ? Live Entertainment, BookMyShow: "We, at BookMyShow, believe that live entertainment is an extremely effective medium to help create awareness on civic and social issues. We are glad to have associated with Road Safety World Series to address road safety concerns in the country. It will be exciting to see cricket legends pitted against each other with fans supporting their favourite players and teams in huge numbers. We are committed to giving cricket fans an unparalleled experience that starts with booking their tickets and ends with a seamless match experience at the venue. Wishing all the teams good luck!"

Nina Elavia Jaipuria, Head, Hindi Mass Entertainment and Kids TV Network, Viacom18,said, "Cricket as a sport binds people of our nation together and we are proud to bring Road Safety World Series 'live' for the audience on COLORS Cineplex, COLORS Kannada Cinema, VOOT, and Jio. The league brings back the cricketing legends onto the field and as we inch a step closer to the series-opening, we are excited to give the viewers an unparalleled experience across their preferred screens." Melroy D'Souza, Chief Operations Officer, Professional Management Group, said, "We at PMG are excited to see the legends of cricket take the field during the Unacademy RoadSafety World Series from 7th-22nd March. We are confident that fans will flock to the stadiums in large numbers and relive the nostalgia that the heroes of cricket will provide." Tickets to the matches will go live exclusively on BookMyShow from February 14 6:00 p.m. onwards.

Hamida Begum, 1st Bangladeshi prostitute to receive a proper Islamic funeral

Sex workers in Bangladesh often do not get a proper burial due to social stigma. This week's burial has been met with praise by human rights activists. Hamida Begum, who died earlier this week, may be the first sex worker to receive a proper Islamic funeral. The 67-year-old was given a Janaza (funeral prayer) by an imam after local police intervened to ensure a proper burial.

Bangladesh is one of the very few Islamic nations to legalize prostitution. But bodies of sex workers are often buried in unnamed graves, or their bodies are dumped. Due to the social stigma, religious heads such as imams usually shy away from performing funeral rites for sex workers. The latest burial was hailed by many activists as a landmark. Around 400 people reportedly showed up to pay their respects to Hamida Begum in post-funeral prayers. She leaves behind her son Mukul Sheikh, and daughter Laxmi, who is also in the same profession. "I never dreamed that she would get such an honorable farewell. My mother was treated like a human being," Laxmi told The Dhaka Tribune.

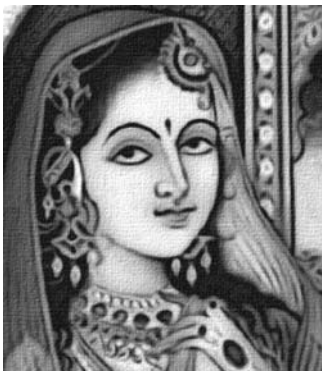

Hamida Begum worked at Daulatdia in Rajbari district, one of the world's biggest brothels. Established during British colonial rule, it is now one of the 12 major legal brothels in Bangladesh. The imam was initially reluctant to lead the prayers, but later agreed after a coalition of sex workers, backed by local police, urged him to do so. Jhumur Begum, the leader of the coalition of sex workers was at the forefront of the campaign to get Hamida Begum this farewell. "If we wanted to bury our dead in the morning, villagers would chase us with sticks. We have finally received our rights as humans, citizens of this country, and parts of this society," she told the AFP news agency. Despite this instance of a respectable funeral, living conditions for sex workers in the South Asian nation are far from optimal. Many minor girls are sold into prostitution by poor families. Hamida Begum herself was only 12 years old when she started working at the Daulatdia brothel. Women and girls working as prostitutes often have to face harsh work conditions, and are at high risk for HIV and other sexually transmitted diseases.

सामाजिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में रोजगार का सुनहरा अवसर

केवल सच सामाजिक संस्थान और श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट अपने भविष्य के आगामी योजनाओं में सामाजिक एवं बौद्धिक सुधार के क्षेत्र में पुर्नजागरण के शंखनाद हेतु बिहार और झारखण्ड राज्य के मेधावी/सक्षम/योग्य/दक्ष एवं कर्मठ नवयुवकों को अपने टीम में वैतनिक/अवैतनिक रूप से जुड़ने के लिए अवसर प्रदान करना चाहती है। उक्त स्वयंसेवी संस्थान मुख्य रूप से 'अपना घर' (वृद्धाश्रम आवास योजना), परिवार परामर्श केन्द्र, शिक्षा का संक्षिप्त पाठ्यक्रम (मूल रूप से निर्धन/बेसहारा लड़कियों हेतु) और विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता कार्यक्रम पर ध्यान केन्द्रीत करना चाहती है। इन कार्यक्रमों से जुड़कर नवयुवक सामाजिक क्षेत्र में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित कर सकते हैं। उक्त संगठन इसके लिए टीम वर्क के तहत कार्य करना चाहती है, जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय समन्वयक के अधीन वार्ड/ पंचायत/ प्रखण्ड/ अनुमण्डल/जिला समन्वयकों की नियुक्ति भी करना चाहती है। इस संस्थान से जुड़कर इच्छुक नवयुवक उक्त पदों पर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं।

संस्थान

श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट

भारतीय ट्रस्ट अधिनियम 1882 के तहत संचालित

निबंधन संख्या : 22333/2008, आयकर निबंधित : 12 ए ए/2012-13/2549-52 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1073

केवल सच सामाजिक संस्थान

भारतीय सोसायटी एक्ट 21, 1860 के तहत निबंधित

निबंधन संख्या : 1141 (2009-10), आयकर निबंधित : 12 ए ए/2012-13/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

www.shruticommunicationtrust.org

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

www.ks3.org.in

Regd. Office:- East Ashok Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar)
Jharkhand State Office:- **Riya Plaza, Flat No.-303, Kokar Chowk, Ranchi**
Mob.- 9431073769

चलें गाँधी मैदान!

पायें प्रतिष्ठा और सम्मान!!

12 अप्रैल 2020

ब्राहम्ण परिवार मिलन महाकुम्भ

भविष्य की रक्षा करनें पहुचे

समय 11 बजे AM

1001 ब्राह्मणों के द्वारा सुन्दर कांड का पाठ

पारिवारिक प्रीतिभोज

परिवार के साथ पहुचें गाँधी मैदान, पटना

आयोजक

चाणक्य विकास मोर्चा

पता - पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान सं. 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)

Mob. 9431073769, 9955077308